



अहिंसक-भौतिक चेतना का अख्यत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 22 ■ 16-30 सितंबर, 2011

संपादक : महेन्द्र जैन

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

□ सदस्यता शुल्क :

- ◆ एक प्रति : बारह रु.
- ◆ वार्षिक : 300 रु.
- ◆ त्रैवार्षिक : 700 रु.
- ◆ दस वर्षीय : 2000 रु.

□ विज्ञापन सहयोग :

- ◆ द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

□ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली-110002

दूरभाष : (011) 23233345

फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

Website : anuvratinfo.org



◆ चेतना का रूपांतरण	आचार्य महाप्रज्ञ	3
◆ बोलना भी एक कला है	आचार्य महाश्रमण	5
◆ हिन्दी-दिवस की सार्थकता ?	प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा	8
◆ उनकी मेहमान-नवाजी	जसविंदर शर्मा	10
◆ बड़ों का बडप्पन	डॉ. रामसिंह यादव	11
◆ भ्रष्टाचार-मुक्त लोकतंत्र	डॉ. हीरालाल छाजेड़	12
◆ भ्रष्टाचार बन गया शिष्टाचार	अशोक सहजानन्द	13
◆ शिक्षा ऐसी ना हो !	प्रो. प्रेम मोहन लखोटिया	16
◆ अपराध नियंत्रण व पुलिस प्रशासन	सत्यनारायण सिंह	18
◆ मुस्कान	डॉ. निजामउद्दीन	21
◆ मन को शांत बनाएं	डॉ. विनोद गुप्ता	22
◆ प्रदूषित होती नदियां	नरेन्द्र देवांगन	23
◆ सच्ची हमदर्दी	पूनम कुमारी	24
◆ नशा है नाश का द्वार	साध्वी कनकरेखा	26
◆ निम्न रक्तचाप और प्रेक्षा चिकित्सा	मुनि किशनलाल	28
■ स्तंभ		
◆ संपादकीय		2
◆ राष्ट्र चिंतन		7
◆ झांकी है हिन्दुस्तान की		19
◆ अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह कार्यक्रम		20
◆ अणुव्रत आंदोलन		31-39
◆ अध्यक्ष की कलम से		40

अणुव्रत ही एक रास्ता



बात उस समय की है जब देश आजाद हुआ था। पर, आजादी के तुरन्त बाद हिंसा, अनैतिकता और भ्रष्टाचार का जो ताण्डव मचा तो देश की जनता त्राहि-त्राहि कर उठी। स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय देशप्रेम की जो लहर उठी थी वह मानो लुप्त-सी हो गयी। तब देश के सामने अध्यात्मबल और चरित्रबल को पुष्ट करने वाला कोई कार्यक्रम नहीं था। न केवल जनता बल्कि हमारे राष्ट्रीय नेता भी विवश हो राष्ट्र के चरित्र का चीरहरण होता देख रहे थे। रिश्वत, मिलावट, शोषण, भेदभाव, अशांति और साम्प्रदायिक हिंसा अपने चरम पर थे।

देश की दशा देखकर उन दिनों एक पैंतीस वर्षीय युवा सन्त का मानस आन्दोलित हुआ। वे थे आचार्य तुलसी, जो एक धर्मसंघ के आचार्य थे। उन्होंने राष्ट्र की तत्कालीन परिस्थितियों का गहराई से आकलन किया और मानवीय एकता की भावना पर आधारित मानव-जीवन की न्यूनतम आचार-संहिता राष्ट्र के सामने रखी। नाम दिया 'अणुव्रत'। भारतीय जीवन का आदर्श त्याग और संयम प्रधान जीवन-शैली है। अणुव्रत का प्रमुख लक्ष्य इसी जीवन-शैली को विकसित करना था। गांधी जी के सपनों के भारत का आधार भी कुछ-कुछ ऐसा ही था। यद्यपि गांधीजी और आचार्य तुलसी का मिलना नहीं हो सका था; किन्तु देश के चरमराते हुए सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों की चिन्ता दोनों महापुरुषों को थी। उस समय आचार्य तुलसी के विचारों में महात्मा गांधी के विचारों का प्रतिबिम्ब दिखायी दे रहा था।

अणुव्रत प्रवर्तक की सुस्पष्ट मान्यता थी कि चारित्रिक उत्थान के बिना मानव समाज की सभ्यता और संस्कृति उच्च नहीं बन सकती, इसलिए उन्होंने अणुव्रत के तीन मुख्य लक्ष्य निर्धारित किये—

1. मनुष्य मात्र को आत्म-संयम की ओर प्रेरित करना,
2. मैत्री, एकता, शान्ति और नैतिक मूल्यों की स्थापना,
3. शोषण विहीन और स्वतन्त्र समाज की संरचना,

अपने प्रमुख शिष्य मुनि नथमल (आचार्य श्री महाप्रज्ञ) के साथ आचार्य तुलसी ने देश के सामने जो अणुव्रत आचार-संहिता प्रस्तुत की, उसको न केवल देश के शीर्षस्थ नेताओं ने समर्थन दिया अपितु वे सक्रिय रूप से अणुव्रत के साथ जुड़े भी। पूरे देश में नैतिकता की सुषुप्त चेतना जाग्रत हुई और एक नया वातावरण बना। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने अणुव्रत को राष्ट्रीय चरित्र का आधार-स्तम्भ बताया तो राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने स्वयं अणुव्रत ग्रहण कर स्थान-स्थान पर अणुव्रत के महत्त्व पर विचार प्रकट किये। क्रमशः देश के लगभग सभी दलों के प्रमुख नेताओं, चिन्तकों, विचारकों, लेखकों व पत्रकारों आदि का अणुव्रत को भरपूर समर्थन मिला। साठ और सत्तर के दशक में अणुव्रत आन्दोलन को व्यापक सफलता मिली।

समय के साथ देश की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियाँ उलझती चली गयीं। भ्रष्टाचार, अनैतिकता, दलगत राजनीति, और कालेधन की समानान्तर अर्थव्यवस्था के कारण नैतिकता एवं जीवन-मूल्यों का निरन्तर ह्रास होता गया। अणुव्रत के अलावा देश में कोई अन्य नैतिक आन्दोलन प्रखरता के साथ आगे नहीं बढ़ा, फिर भी अणुव्रत अभियान समर्पित भाव से कार्य करता रहा। राष्ट्रीय नेताओं तथा जन-प्रतिनिधियों को अणुव्रत जैसे अभियान में कोई रुचि नहीं रही। कुल मिलाकर स्थिति यह बनी कि देश भ्रष्टाचार के दंश से आकुल-व्याकुल हो उठा और हमने अभी-अभी देखा कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन उठ खड़ा हुआ।

इतने विशाल स्तर पर जन-जागरण हुआ। हर गाँव, हर शहर ने तत्परता दिखायी; किन्तु परिणाम अब भी स्पष्ट नहीं है। यहाँ विचार आता है, अणुव्रत की भावना को यदि बल मिलता, जन-प्रतिनिधि और जनता नैतिकता के प्रति निष्ठा व्यक्त करते, अणुव्रत आचार-संहिता के छोटे-छोटे व्रतों को समाज मान्यता देता, तो देश आज नैतिकता के एक ऐसे मजबूत धरातल पर खड़ा होता जहाँ भ्रष्टाचार और अनैतिकता का दैत्य जन-साहचरण को यों प्रताड़ित नहीं कर पाता।

अब भी समय है, हमें अणुव्रत को जन-जन का आन्दोलन बनाना होगा ताकि राष्ट्रीय चरित्र और सामाजिक सौष्टव का एक नया अध्याय प्रारम्भ हो सके।

● महेन्द्र जैन



त्याग की परम्परा अध्यात्म के क्षेत्र में छोड़ने की बात पर बल दिया जाता है। आजकल जिन लोगों ने समाज का गहराई से अध्ययन किया है वे अनुभव करते हैं कि ज्यादा संग्रह करना समस्याओं को निमंत्रण देना है।

चेतना का रूपांतरण

आचार्य महाप्रज्ञ

स्वतंत्रता और परतंत्रता--इन दोनों का अपने-अपने स्थान पर मूल्य है। भौगोलिकता और राष्ट्रीयता की दृष्टि से कहा जाता है कि अमुक देश स्वतंत्र है, अमुक देश परतंत्र है। अध्यात्म और नीति के आचार्यों ने भी स्वतंत्र रहने की बात पर बल दिया है। मनुस्मृति में स्वतंत्रता के आधार पर सुख और दुःख की परिभाषा की गई है--

“सर्वपरवशं दुःखं, सर्वमात्मवशं सुखम्।”

इस संदर्भ में आचार्य शय्यंभव द्वारा रचित दशवैकालिक का पद्य भी मननीय है--

“अच्छंदा जे न भुंजति, न से चाइ ति वुच्चइ।”

जो अच्छंद हैं, स्वतंत्र नहीं हैं, पदार्थ का भोग नहीं कर रहे हैं, कारावास में बंदी हैं, उन्हें कुछ नहीं मिल रहा है। क्या उन्हें हम त्यागी कहेंगे? पदार्थ के आधार पर त्याग की व्याख्या नहीं हो सकती। त्याग की व्याख्या चेतना के आधार पर होती है। बहुत बार चेतना और पदार्थ को लेकर विवाद हो जाता है। मुख्य को गौण और गौण को मुख्य कर देते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से पराधीनता का मूल्य नहीं है, स्वाधीनता का मूल्य सर्वोच्च है। स्वाधीनता से पदार्थ को छोड़ना चेतना का रूपांतरण है। विवशता से पदार्थ का त्याग करना चेतना का परिवर्तन नहीं है। आदिवासी क्षेत्रों के एक कमिश्नर ने जब उन्होंने एक आदिवासी क्षेत्र की यात्रा की तथा वे एक विद्यालय में गए तब एक बच्चे से पूछा--‘आज तुम उदास कैसे लग रहे हो?’ बच्चे ने कहा--‘आज मेरा बारा (जनतद)

नहीं है। हम दो भाई हैं, गरीबी बहुत है। एक दिन उसको नाश्ता मिलता है, एक दिन मुझे। आज मेरा बारा नहीं है।’ छोटे बच्चे और रोज नाश्ता न मिले, कितना कठिन कार्य है। पर, क्या इसको हम त्याग कहेंगे? यह त्याग की चेतना नहीं है। यह चेतना का रूपांतरण नहीं है।

धार्मिक दृष्टि से त्याग उसको कहते हैं जिसमें चेतना बदल जाए। बहुत से लोग एक दिन, दो दिन, तीस दिन और साठ दिन कुछ भी नहीं खाते। यह कैसे हो सकता है? चेतना का रूपांतरण होने से यह सब संभव हो सकता है। चेतना का परिवर्तन होने पर न खाना भी व्यक्ति को हितकारी लगता है। डॉक्टर सलाह नहीं देंगे कि दो दिन मत खाओ। उनके अनुसार न खाने से शरीर की बहुत अधिक हानि होती है। डॉक्टर कभी भी नहीं सोच सकता कि चालीस दिन तक आदमी खाए बिना रह सकता है। उनके सिद्धांत में यह बात मान्य नहीं हो सकती। एक बहन थी--साधनाश्री, रामलालजी गोलछा की पुत्री और हुलासजी गोलछा की बहिन। वह बहिन लगभग पांच वर्ष से केवल छन्ने के पानी पर जीवित रही। डॉक्टर ने कहा--हमारे मेडिकल साइंस के अनुसार तो ऐसा नहीं हो सकता। जिसको भोजन में पूरे तत्त्व नहीं मिलें, केवल छन्ने का पानी मिले, वह लम्बे समय तक जीवित रहे, संभव नहीं लगता। साधनाश्री

अपने घर के एक कमरे में अकेली रही। दूसरों की सेवा नहीं ली। यह मनोबल कैसे बढ़ा? इतना संयम कैसे हुआ? यह मनोबल चेतना के रूपांतरण से उपजा। चेतना में इतनी शक्ति है कि वह रूपांतरण कर सकती है।

हमारी चेतना में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति और अनंत आनन्द है। आत्मा में अनंत शक्ति की विद्यमानता के कारण आत्मा से, चेतना से शक्ति उपजती है। मनोबल के कारण भीतर से ऊर्जा आ रही है, शक्ति आ रही है। बहुत अधिक पदार्थ उपलब्ध हो रहे हैं; किन्तु चेतना में परिवर्तन हो जाने पर त्याग की बात सहज हो जाती है। सब कुछ सुलभ होने पर भी न खाना, न पीना, न ओढ़ना और संयम की चेतना का विकास होना, आश्चर्य का विषय नहीं होगा।

हमने बहुत संपन्न लोगों को देखा है जो संयम और सादगी का जीवन जीते हैं। श्रीचन्द रामपुरिया को कोई देखता तो ऐसा लगता--कोई सामान्य आदमी है। साधारण कपड़े पहनते हैं। क्यों? क्या वे संपन्न नहीं हैं? संपन्न होने पर भी साधारण वेशभूषा में रहना चेतना के रूपांतरण का प्रतीक है। जब चेतना का परिवर्तन होता है तो पदार्थ का भार कम होता चला जाता है। वह आदमी पदार्थ के प्रति ज्यादा जागरूक रहता है। जब तक चेतना का रूपांतरण नहीं होता तब तक व्यक्ति

जीवन-दर्शन

पदार्थ के माध्यम से अपने आपको सुन्दर दिखाना चाहता है। जो शरीर को पुष्ट करना चाहता है, उसका पदार्थ से मोह नहीं छूटता।

इस प्रकार हमारी चेतना के दो रूप बन गए--

1 आत्म प्रतिष्ठित चेतना

2 पदार्थ प्रतिष्ठित चेतना

मनोविज्ञान की भाषा में जो सब्जेक्ट पर आ गया, वह अपने आप केन्द्रित हो गया। यदि हम धर्म के द्वारा चेतना का रूपान्तरण न कर सकें, चेतना को बदल न सकें तो धर्म की साधना का अर्थ कम हो जाता है। धर्म की चेतना पदार्थनिष्ठ, वस्तुनिष्ठ न रहे, वह स्व-निष्ठ रहे। यह बहुत कठिन कार्य है।

नाथ संप्रदाय के दो प्रसिद्ध साधक हुए हैं--मत्स्येन्द्रनाथ और गोरखनाथ। मत्स्येन्द्रनाथ गुरु थे और गोरखनाथ शिष्य। एक दिन दोनों कहीं जा रहे थे। रास्ते में जंगल आ गया। मत्स्येन्द्रनाथ के पास एक झोला था। वे बार-बार उसमें देखते थे। गोरखनाथ ने सोचा--क्या बात है, गुरुजी का ध्यान बार-बार झोले पर क्यों जा रहा है? मत्स्येन्द्रनाथ खाते-पीते, आते-जाते, उठते-बैठते झोले को ही संभालते रहते।

एक दिन गुरु और शिष्य जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठे थे। मत्स्येन्द्रनाथ प्रयोजनवश बाहर गए। गोरखनाथ को मौका मिल गया। झोले को खोलकर देखा, उसमें सोने की एक ईंट थी। उसने सोचा--गुरुजी का ध्यान तो इस सोने में अटका हुआ है। उसने सोने की अंत्येष्टि कर दी।

गुरुजी बाहर से लौटे। झोले को उठाया। झोला तो एकदम हल्का हो गया। गोरखनाथ ने कहा--'गुरुदेव! क्या देख रहे हैं? इसमें जो भय था, वह मैंने समाप्त कर दिया। इसमें जो सोने की ईंट थी मैंने कुएं में डाल दी।' यह सुनते ही गुरु को गुस्सा आ गया। उसने गोरखनाथ

को पीटना शुरू किया। शरीर में पसीना आ गया। उसे शिला पर पछाड़ा, पसीने की बूंदें टपकने लगीं, वे सारी बूंदें सोने की बन गईं। देखते-देखते सोने की एक शिला निर्मित हो गई।

गोरखनाथ बोले--'गुरुदेव! आपने हमारे पसीने का सोना बनता है, फिर आपको सोने का इतना आकर्षण?' एक झटके में चेतना बदल गई। गुरु बोले--अब यह कभी नहीं होगा। चेतना का रूपान्तरण हुए बिना योगी होने पर भी सोने का आकर्षण किसी कोने में रह जाता है। हमारी चेतना में चिरकाल से इतने संस्कार जमे हुए हैं कि वह पदार्थ को छोड़ना नहीं चाहती। साधना के द्वारा, धर्म के द्वारा चेतना का रूपान्तरण हो सकता है।

दशवैकालिक सूत्र में ठीक ही कहा गया है--

*“जे य कते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठिकुव्वई।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ ति वुच्चइ।।”*

कान्त और प्रिय, ये दो शब्द बहुत महत्वपूर्ण हैं। कान्त और प्रिय कमनीय हैं, वांछा करने योग्य हैं। कमनीय का अर्थ है, जिसके देखते ही मन में इच्छा पैदा होती है। पहले इच्छा होती है फिर प्रीति पैदा होती है। जागरूक साधक कांत और प्रिय भोगों को भी स्थूलभद्र की तरह पीठ दिखा देता है। जो स्वाधीन होकर भोगों का त्याग करता है, वही त्यागी कहलाता है।

त्याग की परम्परा अध्यात्म के क्षेत्र में छोड़ने की बात पर बल दिया जाता है। आजकल जिन लोगों ने समाज का गहराई से अध्ययन किया है वे अनुभव करते हैं कि ज्यादा संग्रह करना समस्याओं को निमंत्रण देना है। अमेरिका में एक संस्कृति का जन्म हुआ है--वस्तु को काम में लो और फेंक दो। घर में जो भी आया काम में लिया, उपयोगिता समाप्त हुई और उसे फेंक दिया। आज से दो दशक पूर्व इंजेक्शन लगाते थे। लगाने से पूर्व उसको उबालते थे। आज उसे उबालने की जरूरत नहीं है। आज डिस्पोजेबल इंजेक्शन आ गए। इंजेक्शन लगाया और फेंक दिया। यह विचार सामाजिक सुविधा की दृष्टि से पनप रहा है। चेतना के रूपान्तरण का भी यह एक प्रयोग हो सकता है। पदार्थ और विचार का मोह त्यागते चलो।

हम चेतना का जितना रूपान्तरण करेंगे, चेतना को जितनी स्व-निष्ठ बनाएंगे, उतनी ही हमारी वस्तुनिष्ठता दूर होगी। चेतना में नया उन्मेष आएगा। इसलिए बहुत सुन्दर लिखा है--'स्वाधीनता से भोगों को वही छोड़ सकता है, जिसकी चेतना बदल जाती है। आध्यात्मिक अनुष्ठान का यही प्रयोजन है कि हमारी चेतना का रूपान्तरण हो, चेतना बदले। चेतना वस्तु से चिपकी हुई न रहे, वह वस्तुनिष्ठ न बन जाए।'।

अहिंसा यात्रा का लक्ष्य अनुकम्पा की चेतना का विकास



- साम्प्रदायिक सौमनस्य
- भ्रूणहत्या निरोध
- नशामुक्ति
- ईमानदारी का प्रयास

-- आचार्य महाश्रमण --



बोलना भी एक कला है

आचार्य महाश्रमण

जो शरीरधारी प्राणी है, जीवन जीना उसकी नियति है। प्रश्न है, जीवन की परिभाषा क्या है? जहां शरीर और आत्मा दोनों का योग है, वही जीवन कहलाता है। जहां केवल आत्मा है और शरीर अनुपस्थित है, वहां जीवन नहीं हो सकता। परमात्मा के अस्तित्व के साथ जीवन जैसी बात जुड़ी नहीं है, क्योंकि निराकार परमात्मा केवल आत्मा ही है। मनुष्य की मृत्यु हो जाने के बाद केवल पार्थिव शरीर बचा रह जाता है, आत्मा निकल जाती है। पार्थिव शरीर के साथ भी जीवन जुड़ा नहीं होता।

जीना एक कला है

जीना एक बात है और सही अर्थों में जीना दूसरी बात है। जिस मनुष्य का जीवन धर्म के बिना व्यतीत होता है, वह मनुष्य सांस लेते हुए भी शव के समान होता है। लुहार की धौंकनी भी सांस लेती है। उसमें भी सांस लेने के समान क्रिया-प्रतिक्रिया होती है, जैसे मानव देह में होती है। परंतु धौंकनी निर्जीव होती है। धौंकनी की तरह ही धर्महीन मानव निर्जीव पदार्थ के समान होता है। जीवंत मानव वही कहलाएगा जो धर्म, नीति, अध्यात्म, परमार्थ, नैतिकता जैसे मानवीय गुणों को अपनाकर जीवनयापन करता हो।

जीना भी एक कला है। प्राचीन साहित्य में बहतर कलाओं का उल्लेख मिलता है। वर्तमान युग में भी मनुष्य विभिन्न कलाओं का प्रशिक्षण प्राप्त करता है। यह कैसा विरोधाभास है कि एक तरफ जहां संगीत का प्रशिक्षण लिया जाता है! वहीं दूसरी तरफ आतंकवाद के हिंसक कार्यकलापों का संचालन करने के लिए भी प्रशिक्षण लिया जाता है। व्यक्ति चाहे बहतर कलाओं में भले ही निष्णात क्यों न हो जाए, यदि वह जीने की कला नहीं जानता तो उसका सारा ज्ञान व्यर्थ कहलाएगा। इस विचार को इन दो पंक्तियों में इस प्रकार व्यक्त किया गया है--

‘सभी कलाएं हैं विकलाएं, पंडित सभी अपंडित हैं।

नहीं जानते कैसे जीना, केवल महिमामंडित हैं।’

जीने की कला सीखने के लिए धर्म को स्वीकार करना होगा। धर्म और अध्यात्म भारत की ऋषि परम्परा के प्रसिद्ध शब्द रहे हैं। भारत का जनमानस धर्म को अपनाकर ही जीवनयापन करता रहा है। अध्यात्म और धर्म ऐसे चक्षु हैं,

जिनके द्वारा अपने आपको देखा जा सकता है। इनके द्वारा जहां आत्म-शांति प्राप्त की जा सकती है वहीं परमसुख की प्राप्ति भी की जा सकती है। मनुष्य यदि कर्म के साथ धर्म को जोड़ दे तो वह कर्म सत्कर्म बन जाता है। यदि विचार के साथ धर्म को जोड़ दें तो वह सद्विचार बन जाता है। यदि संकल्प के साथ धर्म को जोड़ दे तो सद्संकल्प बन जाता है। यदि आचार के साथ धर्म को जोड़ दे तो वह सदाचार बन जाता है। इस तरह धर्म पर आधारित जीवन के समस्त पक्ष उज्ज्वल बन जाते हैं।

बोलना भी एक कला है

जीवन की विभिन्न क्रियाएं हैं--चलना, बोलना, खाना, उठना, बैठना, सोना और व्यवहार करना। आदर्श जीवन की समस्त क्रियाएं कलात्मक होती हैं। जीने की कला सीखने के लिए इन क्रियाओं का कलात्मक होना आवश्यक है। जीवन की विविध क्रियाओं में वाणी का विशेष महत्व माना गया है। सही अर्थों में बोलना भी एक कला है। वाणी एक अद्भुत शक्ति है जो मात्र मानव को मिली है। विश्व में अनगिनत प्राणी हैं, जिनके पास बोलने की क्षमता नहीं है। कुछ मनुष्य ऐसे हैं जो बोलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त नहीं कर सकते। जो बोलते हैं, उनमें भी कई ऐसे मिलेंगे जो तुतलाते हैं, हकलाते हैं। जिन्हें वाणी की शक्ति प्राप्त है, वे मनुष्य सचमुच भाग्यशाली हैं।

वाणी का सदुपयोग करें

वाणी एक ऐसी शक्ति है जिससे जहां समस्या उत्पन्न की जा सकती है, वहीं समस्या का समाधान भी किया जा सकता है। वाणी का दुरुपयोग भी किया जा सकता है और सदुपयोग भी किया जा सकता है। वाणी के द्वारा दूसरों को कल्याण का रास्ता बताया जा सकता है और वाणी के द्वारा दूसरों को पाप का रास्ता भी दिखाया जा सकता है। आदर्श जीवन जीने वाले मनुष्य का कर्तव्य है कि वह वाणी का सदुपयोग करे। इस संदर्भ में चार सूत्रों को अपनाकर बोलने की कला

दिशा-बोध

सीखी जा सकती है। ये चार सूत्र इस प्रकार हैं--

1. मितभाषिता
2. मधुरभाषिता
3. सत्यभाषिता
4. विचारितभाषिता

मितभाषिता

अनावश्यक रूप से अधिक न बोलें। बोलने का विवेक होना चाहिए कि मैं कितना बोलूँ? कुछ लोग बातूनी होते हैं। वे बहुत ज्यादा बोलते हैं। तिल को ताड़ बनाने या बात का बतंगड़ बनाने में ऐसे लोगों को विशेष आनंद की प्राप्ति होती है। अध्यात्म साधना के लिए वाणी का संयम अत्यावश्यक माना गया है। अनावश्यक न बोलना मौन की साधना है। चौबीस घंटे लगातार इस तरह की साधना का क्रम चल सकता है। कुछ लोग दो घंटे भी चुप नहीं रह सकते। वाचाल लोगों को गंभीरता से नहीं लिया जाता। समझदार लोग ऐसे लोगों की बात पर विशेष ध्यान नहीं देते। वाचाल मनुष्य की वाणी का दूसरों पर क्षणिक प्रभाव पड़ता है। इतना ही बोलें जितना बोलना आवश्यक हो। उचित अवसर के अनुसार ही बोलना चाहिए। जो बात अवसर देखे बिना कही जाती है, उसका अधिक मूल्यांकन नहीं होता, वहीं उचित अवसर पर शालीनतापूर्वक कही गई बात फलदायी होती है। बच्चे चंचल और वाचाल होते हैं, क्योंकि उनके स्वभाव में अस्थिरता होती है। स्वभाव की अस्थिरता जब नहीं रहती तब अनावश्यक बोलना भी बंद हो जाता है।

एक प्रसंग है--एक महिला ने अपनी सहेली से पूछा--“बहन, तुम्हारा मुन्ना बोलना सीख गया है क्या?”

सहेली ने उत्तर दिया--“बोलना तो सीख गया, अब उसे चुप रहना सिखा रहे हैं।” वास्तव में मनुष्य को चुप रहना भी सीखना चाहिए। ‘काम अधिक बातें कम’ का जो नारा है, उसका मर्म यही है कि अधिक बोलने से कार्य संपन्न नहीं होता। अधिक कार्य करना और कम बोलना ही जीवन का मूलमंत्र होना चाहिए।

“महान वह है जो विष को पीना

जानता है। आने वाली हर सांस को जीना जानता है। बातों में माहिर बहुत मिलेंगे दुनिया में, सफल वही है जो मौके पर होठों को सीना जानता है।”

क्रोध के समय दस मिनट का मौन धारण किया जाए तो क्रोध अपने आप शांत हो सकता है। जब कलह की आशंका हो, उस समय मौन धारण कर लेना चाहिए। वैसी स्थिति में कलह की आशंका समाप्त हो जाएगी। संस्कृत के एक श्लोक में कहा गया है--वाचाल प्रवृत्ति मानव को अवनति की दिशा में ले जाती है जबकि मौन मानव को उन्नति की दिशा में ले जाता है। नुपूर मुखर होता है इसलिए उसे पैरों में स्थान मिलता है। हार मौन होता है, इसलिए उसे गले में पहना जाता है।

जीने की कला का महत्वपूर्ण सूत्र है--वाणी का विवेक। बोलने की कला सीखकर जीने की कला सीखी जा सकती है। सम्यक् भाषण का निरंतर अभ्यास करना आवश्यक है। अल्प बोलें, मधुर बोलें, सत्य बोलें और सोच-विचार कर बोलें।

मंच पर भाषण देने वाले कुछ वक्ता श्रोताओं का ध्यान रखे बिना लंबा, नीरस और अनावश्यक बोल जाते हैं। ऐसे वक्ताओं से श्रोता प्रभावित नहीं होते। वहीं जो वक्ता आवश्यकता के अनुसार संयमित वक्तव्य देने की कला जानते हैं, श्रोता उन्हें गौर से सुनना पसंद करते हैं।

मधुरभाषिता

संस्कृत के एक श्लोक में कहा गया है--मधुर वाणी से लोग संतुष्ट और प्रसन्न होते हैं, फिर मनुष्य मधुर बोलने में कृपणता क्यों करे? बोलते समय शालीन, मधुर शब्दों का प्रयोग करने में क्या हर्ज है?

‘तुलसी मीठे वचन से सुख उपजे चहुं

ओर’--मीठा बोलने से सुख उत्पन्न होता है। मनुष्य को कड़वा नहीं, मीठा बोलना चाहिए। दूसरों को अनुकूल बनाने का सूत्र है--मीठा बोलना।

एक कौवा उड़ता हुआ जा रहा था। मार्ग में कोयल से उसकी भेंट हुई। कोयल ने पूछा--“कहां जा रहे हो, भैया?” कौवे ने निराश स्वर में उत्तर दिया--“यह जगह बहुत खराब है। मैं जहां भी बैठता हूं लोग मुझे उड़ा देते हैं। मैं इस स्थान का त्याग कर दूसरे स्थान पर जा रहा हूं।” कोयल ने पूछा--“भैया, कांव-कांव करना छोड़ा या नहीं?” कौवा बोला--“वह तो नहीं छोड़ा।” कोयल बोली--“तब स्थान बदलने से कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। जहां भी जाओगे लोग तुम्हें बैठने नहीं देंगे। तुम्हें स्थान बदलने की जरूरत नहीं है, बल्कि स्वभाव बदलने की जरूरत है।

कैसे बोलें ?

एक दोहे में कहा भी गया है--

‘मीठी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।

औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होए।।’

सत्यभाषिता

मनुष्य क्रोधवश, लोभवश, भयवश या हास्य की स्थिति में झूठ बोल देता है और अपना विश्वास खो बैठता है। प्रामाणिक मनुष्य झूठ नहीं बोल सकता। यदि विश्वास को कायम रखना है तो सत्य बोलना चाहिए। झूठ से बचकर जीवन में प्रामाणिकता के गुण का विकास किया जा सकता है। इस तरह अनेक विपत्तियों से बचा जा सकता है एवं विभिन्न समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। एक दोहा है--

‘सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप। जाके हिरदै सांच है, ताके हिरदै आप।।’

झूठ के पांव नहीं होते। एक झूठ को छिपाने के लिए अनगिनत झूठ बोलने पड़ते हैं। झूठ बोलने वालों की गरिमा समाप्त हो जाती है। वहीं सत्यभाषी का सभी आदर करते हैं। झूठ अनैतिकता का ही एक रूप है, जो मनुष्य को अप्रामाणिक और संदिग्ध बना देता है। वहीं सत्य नैतिकता का मार्ग है, जो कठिन भले ही है, परन्तु जीवन का वास्तविक मार्ग वही है।

एक गांव में एक चरवाहा प्रतिदिन भेड़ चराने जंगल में जाता था। एक दिन उसने झूठ बोलते हुए शोर मचा दिया—भेड़िया आया, भेड़िया आया। सारे गांववासी भेड़ों की रक्षा करने के लिए दौड़े। परंतु जब गांववासियों ने भेड़ों को सुरक्षित पाया तो वे समझ गए कि चरवाहे ने झूठ बोला था। वे नाराज होकर लौट गए। एक दिन चरवाहे ने देखा कि भेड़िया सचमुच आ रहा है। डरकर उसने शोर मचाया— भेड़िया आया, भेड़िया आया! उसकी चीख गांववासियों ने सुनी, मगर किसी ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। कोई रक्षा करने नहीं आया। भेड़िया भेड़ों का शिकार करके चला गया।

विचारितभाषिता

मनुष्य जो भी बोले, सोच-विचारकर बोले। अंग्रेजी में एक कहावत है—“बोलने से पहले यह सोच लो कि तुम जो बोलोगे वह तुम्हारे मौन से श्रेष्ठ होगा या नहीं?” तौलकर बोलना चाहिए। बिना विचार हैं। कई बार कलह की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। परिवार में, समाज में अधिकांश विवाद की शुरुआत बिना विचार किए बोलने पर ही होती है। वाणी की तुलना तीर से की गई है। जिस तरह धनुष से निकला तीर वापस नहीं लौट सकता, उसी तरह कही हुई बात वापस नहीं लौट सकती।

भव्य महल के परिसर में दुर्योधन आ रहा था। वास्तुकारों की अद्भुत परिकल्पना ने परिसर में जल और थल के अंतर को समाप्त कर दिया था। दुर्योधन का पांव फिसल गया। गवाक्ष में द्रौपदी खिलखिला उठी और बोली—“अंधे का बेटा अंधा ही होगा न!” और, बिना विचारे कहे इस एक वाक्य ने महाभारत युद्ध का सूत्रपात कर दिया।

जीने की कला का महत्वपूर्ण सूत्र है—वाणी का विवेक। बोलने की कला सीखकर जीने की कला सीखी जा सकती है। सम्यक् भाषण का निरंतर अभ्यास करना आवश्यक है। अल्प बोलें, मधुर बोलें, सत्य बोलें और सोच-विचार कर बोलें।



राष्ट्र चिन्तन

‘और आंदोलनों के लिए तैयार हो जाए सरकार’

पीटीआई ॥ नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को सरकार को चेतावनी भरे लहजे में कहा कि उसे आने वाले समय में अन्ना हजारे के आंदोलन से भी भयंकर विरोध प्रदर्शन झेलने पड़ सकते हैं। साथ ही उसने जुडिशरी पर किए जा हमलों पर भी कुछ ‘बुद्धिजीवियों’ को आड़े हाथों लिया।

सेवा विवाद से जुड़े एक मामले में सरकार द्वारा सही जानकारी न दिए जाने पर जस्टिस जी. एस. सिंघवी

और एच. एल. दत्ता की बेंच ने यह टिप्पणी की। बेंच ने अडिशन सॉलिसिटर जनरल पी. पी. मल्होत्रा से कहा कि ‘सरकारी अधिकारी अपने वकीलों को भी सारी जानकारी देते। 10 साल रुक जाइए। तब आम लोग आपको सबक सिखाएंगे। तीन दिन पहले आप ऐसा ही नजारा देख चुके हो। आने वाले दिनों में इससे भी बुरी हालत होगी।’ सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह अब आम बात हो गई है कि

सरकारी अधिकारी अपने वकीलों को पर्याप्त डिटेल्स और कागजात मुहैया नहीं कराते। इससे कीमती समय खराब होता है। हाल ही में जुडिशरी की आलोचना के बारे में आए बयानों पर कोर्ट ने कहा कि न्याय तंत्र पर बयानबाजी करने से

अच्छा है कि सरकार पहले खुद का आकलन करे कि उसके अफसर किस तरह काम करते हैं। कोर्ट ने कहा, ‘हमने देखा है कि कुछ प्रबुद्ध ने ऐसा कहा है कि जुडिशरी का



स्तर गिरता जा रहा है। उन लोगों को यह चिल्लाने दीजिए।’

इस मामले के अनुसार, केंद्र ने गुवाहाटी हाई कोर्ट के उस फैसले को चुनौती दी थी, जिसमें उसे आदेश दिया गया था कि वह सारे सरकारी कर्मचारियों को बढ़ी हुई सैलरी दे। सरकार का कहना था कि अगर इस आदेश का पालन किया जाता है, तो सरकारी खजाने को इसका काफी बोझ सहना होगा।

हिन्दी-दिवस की सार्थकता ?

प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा



किसी भी देश की एकता को बनाये रखने के लिए ऐसी एक भाषा आवश्यक होती है, जिसे सब या अधिकांश देशवासी समझते हों और उसके माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान करते हों। इसलिए भाषा की समस्या पर गहरायी से विचार करने के उपरान्त हमारी संविधान-सभा ने देश में सर्वाधिक लिखी, बोली और समझी जाने वाली भाषा हिन्दी को ही राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। श्री गोपालस्वामी आर्यंगर द्वारा प्रस्तुत तत्सम्बन्धी प्रस्ताव को हमारी संविधान-सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को स्वीकृति प्रदान की और इसी प्रस्ताव को संविधान के भाग सत्रह में अनुच्छेद 343 (1) के अन्तर्गत लिखा गया—कि 'संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।'

देश की आम जनता में तो हिन्दी पहले से ही पर्याप्त रूप में प्रचलित थी। संविधान की स्वीकृति के उपरान्त यह कानूनी दृष्टि से भी मान्य भाषा हो गयी।

देश की स्वतंत्रता के उपरान्त हिन्दी का प्रर्याप्त प्रचार-प्रसार हुआ। सिनेमा, रेडियो और टी.वी. ने इसमें विशेष योगदान किया। आज केवल हिन्दी बोलने और समझने वाला कोई भी व्यक्ति सम्पूर्ण देश में सहजता और सरलता से भ्रमण कर सकता है। उसे सामान्यतः कहीं भी भाषा की कठिनाई नहीं आती। इसके बावजूद हमारे कुछ उच्च अधिकारी और राजनेता अंग्रेजी मोह से इतने पीड़ित हैं कि उन्हें हिन्दी बोलने में बड़ा मानसिक कष्ट होता है। हिन्दी फिल्मों के माध्यम से अपनी आजीविका प्राप्त करने वाले फिल्मकारों का अंग्रेजी मोह तो और भी अधिक आश्चर्यजनक तथा खेदजनक है। अंग्रेजी बोलने में गलती हो जाने पर उसे अज्ञानता का प्रतीक समझा जाता है, जबकि हिन्दी में गलती होने पर ये लोग गर्व महसूस करते हैं। यह स्थिति हिन्दी के भविष्य को काफी धुंधला कर रही है।

हिन्दी भाषा के संबंध में यह ज्ञातव्य

है कि हिन्दी को विकसित करने में मुसलमान साहित्यकारों का भी विशेष योगदान रहा है। इनमें अमीर खुसरो, जायसी, रसखान, रहीम, कबीर आदि की चर्चा की जा सकती है। मुगल-शासनकाल में भी हिन्दी का बोलबाला रहा। आम जनता के लिए बादशाह अकबर के हुक्मनामे अक्सर देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी में ही होते थे। औरंगजेब के शासनकाल में भी यह परंपरा कायम रही। फारसी और अरबी का प्रयोग केवल कुछ सरकारी कार्यालयों में और वर्ग विशेष तक सीमित रहा। 1857 में देशवासियों को बहादुरशाह जफर ने भी लालकिले से हिन्दी में ही सम्बोधित किया था। अंग्रेजी सरकार ने बाद में सरकारी कार्यालयों में फारसी-अरबी को प्रतिबन्धित करके अंग्रेजी भाषा को स्थान दे दिया, और उसे निरन्तर बढ़ाया जाता रहा। फिर भी आम जनता में और उससे सम्पर्क के लिए सरकारी कागजों में भी हिन्दी का ही प्रभाव रहा।

राष्ट्रीयता से ओतप्रोत, गैरहिन्दी भाषियों ने भी सदैव हिन्दी को विशेष स्थान दिया। स्वयं कन्नड़ भाषी होते हुए भी हैदरअली और टीपू सुल्तान विदेशों से पत्रव्यवहार हिन्दी में ही करते थे। बंगलाभाषी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द सेना में हिन्दी में ही राष्ट्रीय गीत गाये जाते थे। स्वयं गुजराती होते हुए भी स्वामी दयानन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हिन्दी में की। इस संबंध में स्वामी दयानन्द ने कहा—'हमें अपनी बात उन लोगों की भाषा में कहनी चाहिए, जिनके लिए हम कुछ कह रहे हैं।' चूँकि हमारी लोक भाषा

हिन्दी है, इसलिए हमें अपनी बात भी हिन्दी में कहनी चाहिए, अन्य किसी भाषा में नहीं।' महात्मा गांधी भी मूलतः गुजराती थे। लेकिन वे लोगों से अपनी बातचीत सदैव हिन्दी में ही करते थे। उनकी कामना थी कि 'हम हिन्दी को उसके राष्ट्रभाषा के स्वाभाविक पद पर फिर से प्रतिष्ठित करें और अपने समस्त राष्ट्रीय कार्यों को हिन्दी में करना शुरू करें।' तमिल भाषी श्री राजगोपालाचारी ने दक्षिण भारत के निवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा था--'यदि दक्षिण भारतीय क्रियात्मक रूप में पूरे भारत के साथ एकसूत्र में बंधकर रहना चाहते हैं तो उन्हें हिन्दी पढ़ना जरूरी है।' मराठी भाषी लोकमान्य तिलक ने देश के लिए समान भाषा और समान लिपि की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा--'यदि आप राष्ट्र में एकता लाना चाहते हैं तो उसके लिए एक भाषा के व्यवहार से अधिक शक्तिशाली कोई वस्तु नहीं। ... यदि भारत की सभी भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि अपना ली जाए तो शनैःशनैः हमारे यहां भाषाओं का अन्तर स्वतः समाप्त हो जाएगा।'

केवल गैर हिन्दीभाषी देशवासियों ने ही नहीं अनेक विदेशियों ने भी हिन्दी की उपयोगिता और इसे अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया है। रूसी चिन्तक डॉक्टर मे. पी. चेलीशेव ने पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कहा था--'मैं सच कहता हूँ, जब तक आपके देश का कार्य और शिक्षा का प्रसार हिन्दी के माध्यम से नहीं होगा, तब तक देश वास्तविक प्रगति नहीं कर सकेगा।' पाकिस्तान के लेखक श्री वकार अहमद रिजवी ने कहा--'हमें हिन्दी से नफरत नहीं करनी चाहिए। विभाजन के बाद हिन्दी ने जो तरक्की की है, हम उसे नजरन्दाज नहीं कर सकते। पाकिस्तान में हिन्दी पढ़ने से महाद्वीप में शान्ति बढ़ेगी।'

देश विदेश के इन अनेक गैरहिन्दी भाषी विद्वानों द्वारा हिन्दी की प्रशंसा

हमारे लिए गौरव का विषय है। मगर दूसरी ओर हमारे हिन्दीभाषी इलाकों में जब शिक्षित व्यक्तियों को अनावश्यक ही अंग्रेजी मोह से ग्रस्त देखते हैं तो दुःख होना भी सहज-स्वाभाविक है। हॉलैंड का एक छात्र आलफस वानवेल भारत के एक हिन्दीभाषी प्रदेश में अध्ययन के लिए आया। वह जहां भी जाता हिन्दी में बात करने की कोशिश करता लेकिन उसे उत्तर हमेशा अंग्रेजी में ही मिलता। लोगों को यह आशंका होती कि एक विदेशी से हिन्दी में बात करने से कहीं उन्हें गंवार या अशिक्षित न समझ लिया जाए। आलफस वानवेल द्वारा पूछे जाने पर एक व्यक्ति ने अपने उत्तर में यह कहा भी--'मैं पढ़ा लिखा हूँ, अनपढ़ नहीं। इसलिए अंग्रेजी बोलता हूँ।' इसके विपरीत जब आलफस वानवेल से अंग्रेजी नहीं बोलने का कारण पूछा गया तो उसका व्यंग्यपूर्ण उत्तर, अंग्रेजी मोह से ग्रस्त लोगों के लिए जोरदार थप्पड़ से कम नहीं था। उसने कहा--'मैं अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी में बातें इसलिए करता हूँ, क्योंकि न तो अंग्रेजी मेरी मातृभाषा है और न अंग्रेजों का मैं कभी गुलाम रहा।'

हिन्दी की उपेक्षा और अंग्रेजी को वरीयता देने की हमारी मनोवृत्ति का एक कारण अंग्रेजी माध्यम की हमारी वे संस्थाएं भी हैं, जहां बच्चों को हिन्दी बोलने पर दंडित किया जाता है और अंग्रेजी भाषा

को इस रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जैसे वही विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा है और उसे सीखना, बोलना, पढ़ना विशेष गौरव का प्रतीक है। इन संस्थाओं का शुल्क, अन्य संस्थाओं की तुलना में कई गुना अधिक होता है और उनमें प्रवेश के लिए छात्रों और उनके अभिभावकों को अनेक औपचारिकताओं से गुजरना पड़ता है। यह आश्चर्य की बात है कि इन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद इन संस्थाओं में प्रवेश के लिए छात्रों और अभिभावकों की लम्बी लाईन लगी रहती है। यह एक चिन्तनीय स्थिति है।

प्रतिवर्ष हम 14 सितंबर को हिन्दी-दिवस मनाकर उस दिन की याद करते हैं, जब संविधान-सभा ने हिन्दी को हमारी राज्यभाषा के रूप में स्वीकृति प्रदान की थी। लेकिन इस दिन हमें इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि हम स्वयं हिन्दी को कितना सम्मान देते हैं और दैनिक जीवन में उसका कितना प्रयोग करते हैं। अंग्रेजी की मानसिक दासता से मुक्त होकर जब हम हिन्दी को सचमुच ही गर्व के साथ अपनी भाषा के रूप में स्वीकार करेंगे और उसे पूरा सम्मान देंगे, तभी हिन्दी-दिवस की सार्थकता सिद्ध हो सकेगी।

10/611, मानसरोवर,
जयपुर-302020 (राज.)

**भाषा वह सेतु है, जो व्यक्ति को
समाज के साथ जोड़ता है।**

◆ आचार्य तुलसी ◆

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

वह मेरे बहुत दूर के रिश्तेदार थे। पिछले कई वर्षों से मैं उनसे मिलने से कतराता रहा हूँ। कारण यह था कि उनके सामने जा कर हमेशा खुद के छोटे होने का अहसास होता था। उनके पास बेशुमार दौलत थी।

मेरी बड़ी बेटी सरकारी स्कूल में टीचर नियुक्त हुई तो उसने मिसेज मेहता से बहुत जल्दी ही गाढ़ी दोस्ती कर ली। बाद में उसे पता चला कि मिसेज मेहता तो अपने ही इलाके वाले मेहता जी की धर्मपत्नी हैं।

बेटी ने मेहता परिवार की तारीफों के वह पुल बांधे कि मैंने सोचा, उनसे सम्बन्ध बढ़ाने चाहिए। मैं उनसे मिलने चल पड़ा। घर तो बड़ी आसानी से मिल गया उनका। गेट पर कुछ ज्यादा ही वक्त लगा। अन्दर एक बड़े से हॉल में मुझे बिठाया गया। पानी आया और फिर थोड़ी देर बाद बिना पूछे ही चाय और साथ में बिस्कुट।

खैर, तकरीबन आधे घंटे के बाद मुझे दूसरे कमरे में ले जाया गया। कोई चार कनाल की कोठी होगी उनकी। देखते ही मेहता जी ने बांहों में भर लिया। जरा भी नहीं बदले थे वे। बहुत अरसा हुआ एक शादी में हल्की-सी मुलाकात हुई थी उनके साथ। गजब की पर्सनेलिटी है उनकी।

मुझसे मिलकर बहुत प्रसन्न लग रहे थे वे। अब अपने गांव-कस्बे व अन्य रिश्तेदारों की बातें चल पड़ीं कि आजकल कौन कहां है। दुबारा चाय आ गई। इस बार चाय लाने वाला कोई और था। चाय के साथ भुने हुए काजू, कचौरी, चमचम और उमदा क्वालिटी के बिस्कुट थे। काफी देर प्रेम भरी गपशप के बाद मैं सारे गिले शिकवे भूल गया जो मुझे अब तक मेहता जी के घर आने पर हुए थे।

चाय के बाद मेहता जी ने पूरी कोठी दिखाई। मेरी तो आंखें फटी की फटी रह गईं। घर वाकई आलीशान था। किसी राजा के महल से कम नहीं लगता था। मैं तो प्रभावित हो गया। पुराना कहा सुना सब भूल गया। मेहता जी कोई शेखी नहीं बधार रहे थे। बिल्कुल सहज और दोस्ताना

उनकी मेहमान-नवाजी

जसविंदर शर्मा

जिन्हें वे कब के काटकर फेंक चुके थे। मगर, हम लोग तो गांव-कस्बे के उन्हीं छोटे लोगों के बीच उठते-बैठते थे। उनकी लाख बुराई कर लें मगर उनसे दिल से नफरत नहीं करते थे।

मेहता जी तो हर किसी को पैसे और रुतबे से ही तौलना जानते थे। रिश्तेदारी या छोटे बड़े के लिए कोई स्नेह नहीं था उनके दिल में। जो उनकी जी-हजूरी कर लेता, उनकी नजर में वही अच्छा साबित हो जाता था।

बातों-बातों में मुझसे बोले, 'अब तो सरकारी दफ्तरों में भी खूब रिश्वत चलती है। कहो तो मंत्रीजी से कहलवाकर तुम्हारी तैनाती भी कमाई वाली सीट पर करवा दूं, सारी कड़की मिट जाएगी तुम्हारी। अब तो लड़की भी कमाने लगी है तुम्हारी। दिल्ली में तो रेहड़ी वालों के पास भी कार है आजकल। सैकंड हैंड कार ही खरीद लो। कल लड़की की शादी भी करनी है।'।

उनका असली चेहरा आज दिखाई दिया मुझे। पहली बार तो कोठी की शानोशौकत देखकर मेरी आंखें ही चुंधिया गई थीं। स्टेट्स कांसियस होने की हद थी कि वे अपने घर के गेट तक भी हमें छोड़ने नहीं आए। उन्हें मालूम था कि हम पैदल आए हैं, किसी शानदार गाड़ी में बैठकर नहीं आये। हमारे साथ बाहर उन्हें आस-पड़ोस कोई देख लेता तो....! मैं उनकी मजबूरी समझ रहा था, मगर पत्नी अजीब विरोधाभास की स्थिति में थी। कुछ चीजें उसे अच्छी लगतीं और कुछ समझ से बाहर।

आज मेरे मन का बोझ हल्का हो गया था। आज मैं तनावग्रस्त नहीं था। मुझे यकीन था कि अब यहां कभी नहीं आना पड़ेगा।

5/2डी रेल विहार, मंसा देवी
पंचकुला-134109 (हरियाणा)

वर्ताव कर रहे थे। मिसेज मेहता ने भी मेरी बेटी की तारीफ की। मैं खुश व आश्वस्त हो कर घर लौटा। पत्नी और दोनों बेटियां बातें सुनकर रसविभोर हो गईं।

पत्नी भी आग्रह करने लगी कि वह भी मिसेज मेहता से मिलना चाहती है। मैंने उसे शिष्टाचार के नियम बताए कि एक ही आदमी बार-बार किसी दूसरे के घर जाए तो इज्जत का कचरा होते देर नहीं लगती।

पत्नी ने हमें जलील करना था, सो कर दिया। इस बार यह महज इत्तेफाक ही था कि मेहता जी ने गेट या अपने खैराती हाल में ज्यादा इन्तजार नहीं करवाया। चाय भी काफी अच्छी थी मगर बातों से लग रहा था कि उन्हें हम लोगों से कोई खास लगाव नहीं है। वो तो अपनी मिसेज की खातिर वे संयत होकर बातें करते रहे।

बातों-बातों में जो बातें उन्होंने कहीं वे भी काफी चुभने वाली थीं। अपने इलाके के पुराने व पिछड़े हुए लोग उनके लिए अच्छी यादगार का खराब हिस्सा थे

बड़प्पन एक मानवीय गुण है, जिसका तात्पर्य है—बड़ा एवं श्रेष्ठ होना। बड़प्पन अर्थात् मानवीय गुणों के शिखर पर आरूढ होना। बड़ा होना सामान्य बात नहीं है। यह एक असाधारण बात है, क्योंकि इसके होने का मतलब होता है कि अपनी सभी कमियों एवं कमजोरियों को रौंदते हुए अपनी महानता व श्रेष्ठता का परिचय देना। अपने नुकसान एवं हानि को सहर्ष झेलते हुए, कष्टों और कठिनाइयों को सहजता से अपनाते हुए, मान प्रतिष्ठा को दौंव पर लगाते हुए अर्थात् अपमान को भी सहते हुए, केवल दूसरों के कल्याण का सोचना, दूसरों को खुशी एवं प्रसन्नता प्रदान करना।

बड़प्पन बड़ा दिखने में नहीं, बल्कि सचमुच अपने गुणों के कारण बड़ा होने में है। बड़प्पन एक छायादार एवं फलदार वृक्ष के समान है, जिसके सान्निध्य में आने पर व्यक्ति को पौषण के साथ अपनी इच्छा पूर्ति रूपी शीतलता का अनुभव होता है। इससे आंतरिक खुशी होती है। देने वाले को भी और पाने वाले को भी। 'बड़े' होने के मायने खजूर जैसा वृक्ष नहीं है, जो केवल दिखने में बड़ा होता है। बड़प्पन तो किसी को सुख देने में है, लाभ देने में है, किसी को खुश देखने में है। बड़प्पन का सार है कि दूसरों को थोड़ी सी भी शांति-खुशी प्रदान की जा सके। बड़े वे ही होते हैं जो दूसरों के लिए अपना सर्वस्व वार देते हैं, और इस त्याग में वे अपने लिए कुछ नहीं बचाते हैं। अपना जीवन तक लुटा देते हैं।

कुरुक्षेत्र के मैदान में, महाभारत युद्ध में कौरव-पाण्डव दोनों दल युद्ध के लिए एकत्र हो गये थे। सेनाओं की युद्ध रचना हो चुकी थी। वीरों के धनुष चढ़ चुके थे। महाभारत युद्ध प्रारंभ होने में क्षणों की ही देर जान पड़ती थी। सहसा पाण्डवों के सबसे बड़े भाई धर्मराज युधिष्ठिर ने अपना कवच और अस्त्र-शस्त्र उतारकर रथ में रख दिये तथा वे रथ से उतरकर पैदल ही कौरव सेना में सेनापति भीष्म पितामह के रथ की ओर चल पड़े।

बड़े भाई को इस प्रकार शस्त्रविहीन पैदल ही शत्रु सेना की ओर जाते देखकर अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव भी अपने-अपने रथों पर से उतर कर भ्राता युधिष्ठिर के पास पहुंचे और उनके पीछे-पीछे चलने लगे। श्रीकृष्ण भी पाण्डवों के साथ ही चल रहे थे। भीम, अर्जुन

बड़ों का बड़प्पन

डॉ. रामसिंह यादव

आदि बड़े चिंतित हो रहे थे, वे पूछने लगे—'महाराज! आप यह क्या कर रहे हैं?' युधिष्ठिर ने किसी को कोई उत्तर नहीं दिया। तब श्रीकृष्ण ने भी सबको शांत रहने का संकेत करके कहा—'धर्मात्मा युधिष्ठिर सदा धर्म का ही आचरण करते हैं। इस समय भी वे धर्माचरण में ही संलग्न हैं।'

उधर कौरव सेना में बड़ा कोलाहल मच गया। लोग कह रहे थे—'युधिष्ठिर डरपोक हैं, हमारी विशाल कौरव सेना को देखकर डर गये हैं और भीष्म पितामह की शरण में आ रहे हैं। कुछ लोग यह संदेह भी करने लगे कि सम्भवतः पितामह भीष्म को अपनी ओर मोड़ लेने की यह कोई चाल है।'

युधिष्ठिर सीधे भीष्म पितामह के समीप पहुंचे और उन्हें प्रणाम करके, हाथ जोड़कर बहुत सम्मान के साथ विनम्रता से बोले—'पितामह! हम आपके साथ युद्ध करने के लिए विवश हो गए हैं। हमें युद्ध करने की आज्ञा और विजय प्राप्ति का आशीर्वाद प्रदान करें।'

भीष्म पितामह बोले—'हे भरत श्रेष्ठ! यदि इस प्रकार आकर तुमने मुझसे युद्ध करने की अनुमति नहीं मांगी होती तो मैं अवश्य ही तुम्हें पराजय का शाप दे देता। लेकिन, तुम्हारी विनम्रता से मैं तुम पर अति प्रसन्न हूँ। तुम युद्ध में विजय प्राप्त करो। जाओ, युद्ध करो। तुम मुझसे वरदान मांगो। पार्थ! मनुष्य धन का दास है, धन किसी का दास नहीं। मुझे धन के द्वारा कौरवों ने अपने वश में कर रखा है, इसी से मैं नपुंसकों की भांति कहता हूँ कि अपने पक्ष में युद्ध करने के अतिरिक्त तुम जो चाहो, वह मांग लो। किन्तु, युद्ध तो मैं कौरवों की तरफ से ही करूंगा।'

युधिष्ठिर ने पूछा—'पितामह! आप अजेय हैं, फिर हम लोग आपसे किस प्रकार जीत सकते हैं?' भीष्म पितामह ने उन्हें

किसी अन्य समय आकर यह प्रश्न पूछने को कहा। वहां से धर्मराज युधिष्ठिर अपने गुरु द्रोणाचार्य के पास पहुंचे और उन्हें प्रणाम करके सम्मान पूर्वक उनसे भी युद्ध के लिए अनुमति मांगी और आशीर्वाद लिया। आचार्य द्रोणाचार्य ने भी वही बातें कहकर आशीर्वाद दिया। परन्तु, जब युधिष्ठिर ने उनसे उनकी पराजय का उपाय पूछा, तब आचार्य द्रोण ने बताया—'मेरे हाथ में शस्त्र रहने तक मुझे कोई मार नहीं सकता, परन्तु मेरा स्वभाव है, किसी विश्वसनीय व्यक्ति के मुख से युद्ध में कोई अप्रिय समाचार सुनने पर मैं धनुष रखकर ध्यानस्थ हो जाता हूँ। केवल ऐसे समय मुझे मारा जा सकता है।'

युधिष्ठिर आचार्य द्रोणाचार्य को प्रणाम करके कृपाचार्यजी के पास पहुंचे। उनको प्रणाम करके युद्ध की अनुमति मांगी। कृपाचार्य ने भी भीष्म पितामह की तरह सब बातें कहकर उन्हें आशीर्वाद दिया किन्तु अपने कुलगुरु कृपाचार्य से युधिष्ठिर ने उनकी पराजय का उपाय नहीं पूछा। यह दारुण बात पूछते-पूछते दुःख के मारे धर्मराज स्वयं अचेत हो गए। कृपाचार्यजी ने युधिष्ठिर का तात्पर्य समझ लिया था। वे बोले—राजन! मैं अवध्य हूँ, किसी के द्वारा भी मैं मारा नहीं जा सकता; परन्तु मैं वचन देता हूँ कि नित्य प्रातःकाल भगवान से तुम्हारी विजय के लिए प्रार्थना करूंगा और युद्ध में तुम्हारी विजय में बाधक नहीं बनूंगा।'

इसके पश्चात् युधिष्ठिर मामा शल्य के पास प्रणाम करने पहुंचे। शल्य ने भी पितामह भीष्म की बातें ही दुहराकर उन्हें आशिष दी, साथ ही यह वचन भी दिया कि 'युद्ध में अपने निष्ठुर वचनों द्वारा मैं कर्ण को हतोत्साह करता रहूंगा।'

गुरुजनों को प्रणाम करके उनकी अनुमति और विजय का आशीर्वाद लेकर युधिष्ठिर अपने भाइयों के साथ वापस अपनी सेना में लौट आए। पांडव भाइयों की इस विनम्रता ने भीष्म पितामह, आचार्य द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, मामा शल्य आदि के हृदय में अपने लिए ऐसी सहानुभूति उत्पन्न कर दी थी जिसके बिना महाभारत युद्ध में पाण्डवों की विजय अत्यन्त दुष्कर थी।

14 उर्दूपुरा, उज्जैन 456001 (म.प्र.)

भ्रष्टाचार-मुक्त लोकतंत्र

डॉ. हीरालाल छाजेड़

हमारे देश में लोकतंत्र की जड़ में भ्रष्टाचार इस कदर बैठ गया है कि अब इसे आसानी से उखाड़ फेंकना दिवा-स्वप्न जैसा लगने लगा है। राजनीति अब लोकतंत्र में समाज सेवा कम व्यापार का रूप ज्यादा ले रही है। आज के युग में औद्योगिक घराने (कॉर्पोरेट जगत) का निवेश का माध्यम राजनीति बनती जा रही है।

जब तक लोकतंत्र में धनतंत्र व बाहुबल की अहम भूमिका जारी रहेगी, पिट्टू नेताओं और राजनीतिक पार्टियों को खड़ा करने में करोड़ों-अरबों का निवेश औद्योगिक घरानों का रहेगा, जनमत खरीदा जाता रहेगा, बाहुबली अपने बल पर वोटों को पशु की तरह हांकते रहेंगे, तब तक साफ-सुथरे और नैतिक चरित्र वाले व्यक्तियों का विधानसभा व संसद में अभाव रहेगा। एक छोटा-सा उदाहरण सामने आया कि तमिलनाडु में एक बस की छत से पांच करोड़ रुपए की बरामदगी की खबर लोकतंत्र की दुनिया को बेचैन करने वाली कैसे नहीं होगी? ये रुपए वोट खरीदने, रिश्वत देने या फिर मसल के पावर पर खर्च करने की नीयत से भेजे जा रहे थे। सिर्फ तमिलनाडु की ही बात नहीं है। पश्चिम बंगाल और केरल विधानसभा चुनावों में भी करोड़ों की राशि जब्त हुई। चुनाव आयोग के अनुसार अब तक 42 करोड़ रुपए जब्त हुए हैं और करोड़ों का सोना भी बरामद हुआ है। यह बरामद राशि तो बहुत कम है। अरबों रुपए चुनावों को प्रभावित करने के लिए भेजे जा चुके हैं, जिन्हें चुनाव आयोग और प्रशासन रोकने में लाचार है। राजनीतिक पार्टियां और राजनीतिज्ञों का नैतिक पतन हो गया है। उनसे शुचिता की बात करना बेमानी हो गया है।

भ्रष्टाचारमुक्त लोकतंत्र की स्थापना के लिए नई पौध का निर्माण करना होगा। बच्चों को नैतिक शिक्षा देकर आने वाली पीढ़ी का नैतिक नवनिर्माण करना ही एक मात्र विकल्प है। वर्तमान में चुनाव आयोग द्वारा चुनाव प्रक्रिया को साफ-सुथरे ढंग से संपन्न करवाने के लिए सघन प्रयास करने की जरूरत है।

चुनाव जीतने के लिए धनतंत्र ही नहीं बल्कि बाहुबल के साथ ही साथ अमान्य चुनावी हथकंडे से भी परहेज नहीं है, फिर अन्ना हजारे का आंदोलन हो या 'अणुव्रत आंदोलन' उन्हें फूटी आंख से अच्छे नहीं लगते। ऐसे नेता नैतिक आंदोलन के कार्यकर्ताओं को या फिर जनता को आकर्षित करने के लिए मंच पर आकर जोशीला भाषण देकर आंदोलन की भूरि-भूरि प्रशंसा कर वाहवाही लूटकर चले जाते हैं। लोकतंत्र को धनतंत्र, बाहुतंत्र आदि से कैसे बचाया जाये, इस पर मिथ्या शोर सिर्फ बयानों में ही होता है। धरातल पर चाक-चौबंद व्यवस्था कभी नहीं होती है। इस तरह से तो हमारा लोकतंत्र मजबूत विश्वसनीय और समृद्ध होगा तो कैसे?

धनबल व बाहुबल के आधार पर चुनाव जीतकर पार्टियां अपनी आर्थिक समृद्धि को सौ गुणी स्वयं की व औद्योगिक

घरानों की करने में सहयोगी बनती हैं। विधानसभाओं में जन-मुद्दों को हाशिये पर ढकेलने की प्रक्रिया व बड़ी कम्पनियों के हित साधने की नीतियां बनाती है। अनैतिकता और अमान्य संहिता से चुनाव जीतने वाले सांसदों-विधायकों से अगर हम ईमानदारी की आस करते हैं तो गलती हमारी है। राजनीतिज्ञों और नौकरशाही गठजोड़ से जनता के धन को लूटने की खबरें क्या हमें सचेत करने के लिए काफी नहीं हैं। निश्चित तौर पर यह कहा जा सकता है कि ये सभी बुराइयां इसलिए पांव पसारने का कार्य कर रही हैं; क्योंकि जिस प्रकार प्रारंभ काल में बच्चे को अच्छे संस्कारों से संस्कारित नहीं किया जाता है तब वह बुरी आदतें पाल लेता है और फिर उसको सुधारना नामुमकिन हो जाता है। काश! स्वतंत्रता के शैशव काल में युग-पुरुष आचार्य तुलसी के दिखाये मार्ग पर जनता व देश के कर्णधार गौर फरमाते और 'अणुव्रत-आंदोलन' की आचार-संहिता को देश के प्रत्येक नागरिक/नेता के लिए विश्लेषण-समीक्षा करने की ईमानदारी से कोशिश होती तो आज शायद देश में धनतंत्र व बलतंत्र का साम्राज्य नहीं होता और न ही भ्रष्टाचार अपनी जड़ें जमा पाता।

मेरी राय में भ्रष्टाचारमुक्त लोकतंत्र की स्थापना के लिए नई पौध का निर्माण करना होगा। बच्चों को नैतिक शिक्षा देकर आने वाली पीढ़ी का नैतिक नवनिर्माण करना ही एक मात्र विकल्प है। वर्तमान में चुनाव आयोग द्वारा चुनाव प्रक्रिया को साफ-सुथरे ढंग से संपन्न करवाने के लिए सघन प्रयास करने की जरूरत है।

**जयश्री टी. कंपनी, चौधरी बाजार,
नन्दीशाही, कटक-1 (उड़ीसा)**

भ्रष्टाचार बन गया शिष्टाचार

अशोक सहजानन्द

आजादी के साथ ही 'भ्रष्टाचार' ने हमारे देश में पांव पसारने प्रारंभ किये और आज अंगद के पांव की तरह अपने पांव जमा बैठा है, जिसे हिलाना-डुलाना, उखाड़ना आसान नहीं है। पं. जवाहरलाल नेहरू ने सुरसा की तरह फैलते भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने का प्रयास किया पर सफल नहीं हो पाये। नेहरूजी ने दुःखी मन से यहां तक कह डाला कि "भ्रष्टाचारियों को सरेआम खंभे पर लटका कर फांसी दे देनी चाहिए।" पर, प्रथम प्रधानमंत्री ऐसा नहीं कर पाये, क्योंकि कानून इसकी इजाजत नहीं देता।

विगत छह दशकों में धीरे-धीरे फैलते हुए भ्रष्टाचार ने समूचे देश को ही लूट लिया है। हर व्यक्ति भ्रष्टाचार रूपी गंगा में स्नान कर करोड़पति-अरबपति बन निखर रहा है। हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि कोई भी सरकारी काम बिना 'लिये-दिये' नहीं होता। चपरासी, बाबू, अधिकारी, जनप्रतिनिधि, मंत्री सभी भ्रष्टाचार रूपी गंगा में स्नान कर दोनों हाथों से पुण्यरूपी धन लूट रहे हैं एवं अत्याचार कर रहे हैं। जनतंत्र में हो रहे इन अत्याचारों के सामने राजतंत्र में हुए अत्याचार बौने साबित हो रहे हैं। तभी तो बिहार में हुए एक हजार करोड़ रुपये के 'चारा घोटाला' मामले में सुनवाई के दौरान उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश एस.वी. सिन्हा और न्यायाधीश एम. कारजू की पीठ ने 7 मार्च, 2007 को लगातार बढ़ते जा रहे भ्रष्टाचार पर कठोर टिप्पणी करते हुए कहा—"हर शख्स देश को लूटने में लगा है। कानून हमें इजाजत देता तो कुछ भ्रष्टाचारियों को सरेआम फांसी की सजा देते।" उच्चतम न्यायालय की यह टिप्पणी देश के लिए गंभीर

चेतनावनी है कि भ्रष्टाचार रूपी कैंसर का जल्दी से उपचार किया जाये, वरना यह रोग समूचे राष्ट्र को दीमक की तरह चट कर जायेगा।

भ्रष्टाचारी देशों की सूची में हमारे देश का नाम ऊपर है। ऊपर से नीचे तक चोर-बाजारी, रिश्वत, मिलावट, जमाखोरी का बोलबाला है। यह भी देखने में आया है कि जनप्रतिनिधि, मंत्री, अधिकारी, उद्योगपति भ्रष्टाचार के विरोध में बोलते हैं उनमें से अधिकांश खुद भ्रष्टाचार में लिप्त पाये गये हैं। समाचार-पत्रों में आये दिन जो समाचार प्रकाशित हो रहे हैं वे चौकाने वाले हैं। हमारे सार्वजनिक जीवन और बाजार-व्यवस्था में चोरी, कर-चोरी, मिलावट, कम माप-तौल, अगुणवत्ता, बेईमानी शासकीय दखल-अंदाजी प्रमुख तत्त्व हैं और यहीं से प्रारंभ होता है भ्रष्टाचार का सिलसिला, जो हमें ले जाता है भ्रष्टाचार-लिप्त देशों की शीर्षता पर। समाज में प्रदर्शन, आडम्बर और बड़ा आदमी बनने की लालसा तथा विलासिता की प्रवृत्ति इस कदर घर कर गई है कि व्यक्ति को इसकी सम्पूर्ति के लिए आड़े-टेढ़े-मेढ़े रास्तों से अर्थ का उपार्जन करना होता है और इन अनैतिक कार्यों को छिपाने के लिए राजकीय अधिकारियों-कर्मचारियों-राजनेताओं को कुछ ले-देकर खुश करना होता है, यही बढ़ते भ्रष्टाचार की आधार-शिला है।

भारतीय राजनैतिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार आज सर्वाधिक ज्वलंत समस्या है। यह आज की भारतीय राजनीति के व्यावसायिक चरित्र को प्रतिबिम्बित करने लगा है। भारत में भ्रष्टाचार के कई पहलू हैं। पहला भ्रष्टाचार राजनैतिक और

नौकरशाही का, दूसरा चुनावों का और तीसरा प्राकृतिक संसाधनों की लूट का।

दुर्भाग्य से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक के बाद एक सत्तारूढ़ होने वाली सरकारों ने भ्रष्टाचार से कड़ाई से निपटने में कोई उत्साह नहीं दिखाया, इसलिए यह फलता-फूलता रहा और इसकी जड़ें और गहरी होती गयीं। देश के तमाम राजनीतिक, दक्षिणापंथी से लेकर वामपंथी तक, जनता के नाम पर उच्च आदर्शों का दावा करते हुए बात करते हैं, लेकिन जैसे ही उन्हें सत्ता मिलती है, वे स्वयं उन्हीं कार्यों में लिप्त हो जाते हैं जिनका वे पहले विरोध करते थे।

आज राजनीति ऐशो-आराम भरी जिन्दगी और दौलत के अंबार लगाने का जरिया होने के अलावा अपराधियों की शरण-स्थली भी बनती जा रही है। पिकनिक स्पॉट बन चुकी संसद और विधानसभाओं में विकास की चर्चा तो बहुत दूर की बात है, हो-हल्ले के बाद सिर्फ कार्यवाही-स्थगन का दृश्य ही नजर आता है।

आज न्यायपालिका में भी भ्रष्टाचार आम हो गया है। लगने लगा है जैसे न्यायालयों में न्याय मिलता नहीं, बिकता है। वहां मामले के सम्बन्ध में कानूनी तर्कों के आधार पर बहस कम, 'बारगेनिंग' ज्यादा होती है। न्यायधीश बहसों को कम सुनते हैं, वे वकीलों के इशारों को ज्यादा समझते हैं। उनका कानून से सम्बन्ध कम व 'कानूनविदों' से ज्यादा होता जा रहा है। उनका ध्यान फैसला सुनाने पर कम, फैसले की मीडिया में प्रतिक्रिया जानने पर ज्यादा होता है।

प्रारंभ में ऊपरी कमाई के कुछ ही विभाग माने जाते थे; किन्तु आज ऊपरी

कमाई का संकल्प लेकर किसी भी विभाग में जाने वाले युवा कर्मचारी ने हर विभाग को ऊपरी कमाई का विभाग बना दिया है। आज की स्थिति में भ्रष्टाचार एक शिष्टाचार बन गया है। शिक्षा विभाग में अंकतालिका प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को कुछ देना पड़ता है। स्कूल की मान्यता के नवीनीकरण का कागज लेने के लिए स्कूल के प्रबंधक या सम्बन्धित क्लर्क को कुछ देना होता है।

अभावग्रस्त लोगों के लिए केन्द्र सरकार का 'नरेगा' कार्यक्रम तक भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा केन्द्र बन गया है। केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी ने राज्यसभा में एक प्रश्न के जवाब में बताया कि नरेगा में हो रही धांधली के हजारों शिकायती पत्र हमारे विभाग को मिले हैं; अतः हमने नरेगा में हो रहे भ्रष्टाचार को रोकने के लिए राज्य सरकारों को हर जिले में लोकपाल नियुक्त करने का निर्देश दिया है।

जोशीजी से पूछना चाहता हूँ कि यदि लोकपाल भ्रष्ट हो जाये तो उन्हें नियंत्रित करने के लिए एक फौज बनानी होगी। यही नहीं, गरीबों को राज्य सरकारें सस्ते दर पर अनाज, तेल, आदि प्रदान करती हैं किन्तु विडम्बना यह है कि वे सस्ते दर की चीजें गरीबों को न मिलकर सीधे बाजार में पहुंचा दी जाती हैं। भ्रष्टाचार की चरम सीमा और तंत्र की लाचारी इस देश को कहां ले जायेगी? आज के समय का यह

अहम सवाल है?

आज राजनीतिक दल, कहीं कहीं परिवारों के और कहीं कुछ व्यक्तियों के बंधक बनकर रह गये हैं। आरक्षण को रामबाण प्रचारित कर उपजातियों को वोट-बैंक बनाने की होड़ लग गयी है। राष्ट्र का वृहत्तर हित सबकी नजरों से ओझल है। देश में कोई भी राजनैतिक दल सत्ता के मोह से ऊपर नहीं उठ पाया है।

स्थिति दिन-ब-दिन, बद से बदतर होती जा रही है। अमीर और गरीब का अंतर निरंतर बढ़ रहा है। गरीब अधिक गरीब हो रहे हैं और अमीर और अधिक अमीर। पहले एक-दो टाटा-बिरला थे, आज हजारों हैं। सरकार कहती है--देश महाशक्ति बनने के मार्ग पर है। दूसरी ओर लोग आत्म-हत्या कर रहे हैं। अन्याय-अत्याचार बढ़ गया है।

आज की पीढ़ी का लक्ष्य है--निजी उत्कर्ष हर कीमत पर, नैतिक मूल्यों की कीमत पर, देश के हितों की कीमत पर। वे भी क्या कर सकते हैं जब राजनेता ही ऐसे हों तो-- 'यथा राजा तथा प्रजा'।

आज कहां नहीं है भ्रष्टाचार? कौन नहीं है परिचित भ्रष्टाचार से? भ्रष्टाचार चतुर्दिक व्याप्त है। वस्तुतः आज भ्रष्टाचार देश का कैंसर बन गया है।

क्या सामरिक श्रेष्ठता और विज्ञान-तकनीकी की उन्नति ही किसी देश को शक्ति सम्पन्न बनाती है। हमारा विचार है कतई नहीं। देश महान् और महाशक्ति

सम्पन्न तब बनता है जब उसकी जनता खुशहाल होती है। अशिक्षा, बेरोजगारी, कुपोषण और धर्मान्धता नहीं होती है तथा व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए राष्ट्रहित की बलि चढ़ा देने वाला नेतृत्व नहीं होता। आज भारत में ये सब अपना वर्चस्व बनाए हुए हैं। भ्रष्टाचार जीवन-शैली बन गया है। शिक्षा जगत भी भ्रष्टाचार से अछूता नहीं है। स्कूली शिक्षा, जहां बच्चों के भविष्य की नींव रखी जाती है, भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी है। उच्च शिक्षा में संलग्न प्रायः सभी घटक शिक्षक, शिक्षार्थी, प्रशासन, कर्मचारी कार्य संस्कृति के शत्रु हैं। शिक्षक पढ़ाना नहीं चाहते, शिक्षार्थी पढ़ना नहीं चाहते। प्रशासन नकारा है और कर्मचारी कामचोर है। सभी वेतन के बारे में सजग हैं। भ्रष्टाचार का कुनबा दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है।

उच्च शिक्षा संस्थानों के संचालक प्राप्त वित्तीय साधनों का न केवल दुरुपयोग करते हैं, अपितु दिन-रात अपनी झोली भरते रहते हैं। सरकार द्वारा उच्च शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के निजीकरण के स्वरूप जो भ्रष्टाचार पनपा है उसका उदाहरण कुकुरमुत्तों की तरह उगने वाले निजी विश्वविद्यालय हैं।

भ्रष्टाचार के इस दुश्चक्र के केन्द्र में विकास की आधुनिक अवधारणा है, जो यह मानती है कि वही व्यक्ति विकसित है जो अधिक भौतिक समृद्धियों में जीता है। अतः इस अवधारणा के मुताबिक जिस व्यक्ति के पास जितना ज्यादा धन है, जो जितना ज्यादा सुख-सुविधाओं के साथ रहता है, वह व्यक्ति उतना ही ज्यादा विकसित है। विकास की यह अवधारणा उपभोक्तावादी संस्कृति को जन्म देती है और उपभोक्तावादी संस्कृति भ्रष्टाचार को जन्म देती है।

जिस राष्ट्र के शीर्षस्थ व्यक्ति भ्रष्टाचार की समस्या के प्रति जागरूक होते हैं वहां भ्रष्टाचार को कम करने का रास्ता साफ हो जाता है और जिस राष्ट्र के

आज आवश्यकता है दृढ़ संकल्प की। इसके लिए सत्ता के शीर्ष पर बैठे हुए लोगों को खुद ईमानदार होना होगा, तभी वे सख्त भी हो सकेंगे। एक टी.एन. शेषन चुनाव व्यवस्था में सुधार ला सकता है तो प्रधानमंत्री देश की व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त क्यों नहीं कर सकते? साथ ही प्रत्येक देशवासी को निर्णय लेना होगा कि वह पहले भारतीय है फिर और कुछ। यदि भारत ही नहीं रहेगा तो उसका अस्तित्व कैसे रहेगा? आज जन-जागरण की आवश्यकता है। स्वयंसेवी संस्थाओं को इस दिशा में समयबद्ध कार्य करने की आवश्यकता है।

शीर्षस्थ व्यक्ति भ्रष्टाचार को स्वाभाविक मान लेते हैं अथवा 'यह सर्वत्र होता है' इस तर्क से उसकी पुष्टि करते हैं वहां भ्रष्टाचार को पनपने का और अधिक मौका मिलता है। हमें इस सच्चाई को नहीं भूलना चाहिए कि अनैतिकता, भ्रष्टाचार और अपराध राष्ट्र की प्रतिष्ठा को ही कम नहीं करते, उसकी स्वतंत्रता पर भी प्रश्न चिह्न लगा देते हैं।

भ्रष्टाचार के कारण भी असंख्य है और क्षेत्र भी असंख्य हैं। भ्रष्टाचार की समस्या अतीत में भी रही है, वर्तमान में है और भविष्य में नहीं रहेगी, ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस सच्चाई को झुठलाकर आकाश-कुसुम से सुगंध नहीं ले सकते।

आज 'भ्रष्टाचार' शब्द को समाप्त कर इसके स्थान पर 'शिष्टाचार' शब्द का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। भ्रष्टाचार

शब्द को शब्दकोश से ही निकाल देना चाहिए। व्यर्थ में इस शब्द का भार क्यों ढोया जाए? जब सारी अपेक्षाएं और आवश्यकताएं बढ़ जाती हैं तो फिर कोई पिछड़ा नहीं रहना चाहेगा। लूट की इस अंधी दौड़ में सब शामिल हो जाना चाहेंगे।

आज भ्रष्टाचार की चिंता सब कर रहे हैं, पर इसकी जड़ कहां है, इस पर कौन ध्यान दे रहा है? जब तक शिक्षा के साथ नैतिकता के संस्कार नहीं मिलेंगे, तब तक भ्रष्टाचार को मिटाने का प्रयत्न सफल नहीं हो सकेगा।

आज आवश्यकता है दृढ़ संकल्प की। इसके लिए सत्ता के शीर्ष पर बैठे हुए लोगों को खुद ईमानदार होना होगा, तभी वे सख्त भी हो सकेंगे। एक टी.एन. शेषन चुनाव व्यवस्था में सुधार ला सकता है तो प्रधानमंत्री देश की व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त क्यों नहीं कर सकते? साथ ही प्रत्येक

देशवासी को निर्णय लेना होगा कि वह पहले भारतीय है फिर और कुछ। यदि भारत ही नहीं रहेगा तो उसका अस्तित्व कैसे रहेगा? आज जन-जागरण की आवश्यकता है। स्वयंसेवी संस्थाओं को इस दिशा में समयबद्ध कार्य करने की आवश्यकता है।

एन.आर. नारायणमूर्ति के शब्दों में-- "मुझे भारत के उज्ज्वल भविष्य में पूरी आस्था है। भ्रष्टाचार समाप्त करना है तो पहले उन लोगों से शुरू होनी चाहिए जो ऊंचे स्थानों पर बैठे हैं, जिन पर समाज ने, देश ने अपनी देखभाल का उत्तरदायित्व सौंपा है। हमारे राजनेताओं, प्रशासकों और उद्यमियों को मिल-जुलकर इस मुसीबत से पार पाना है। सबसे पहले हमें प्रेरक, निःस्वार्थ और साहसी नेतृत्व चाहिए।"

संपादक : 'सहज आनन्द' (त्रैमासिक)
239, दरीबाकलां, दिल्ली-110006



अणुव्रत अनुशास्ता युवा मनीषी आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव

पर
शत-शत अभिवन्दन

श्रद्धावन्तः

समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यगण
श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा पालघर

नवजीवन प्रोविजन स्टोर, सब्जी बाजार
रेलवे स्टेशन के पास, पालघर (थाना-महाराष्ट्र)

शिक्षा ऐसी ना हो!

प्रो. प्रेम मोहन लखोटिया

विश्व-मण्डल में शिक्षा-क्रान्ति अपने सर्वोच्च बिन्दु पर सत्वर विकासमान है। यह 21वीं सदी के लिए एक सौभाग्य-सूचक है। अब कोई अज्ञान के अंधेरे में अपने जीवन का दैन्य न भोगे—“सब पढ़ें, सब बढ़ें” यह सावदेशिक अभियान बन गया है। समाज के सारे मनीषी, नीतिकार और प्रशासक तथा शिक्षाविद् इस बात के गहन शोध और अनुसंधान में पूरी तन्मयता से जुटे हैं कि हर स्तर पर हमारी भावी शिक्षा कैसी हो; ज्ञान-विज्ञान के साथ मानवीय मूल्यों और प्रकृति के संरक्षण का आचरणीय विधान कैसे स्थापित हो? कैसे जन-जीवन में प्रेम, करुणा और अहिंसापूर्ण सद्भाव शिक्षा के माध्यम से विकसित हो? धरती के कोने कोने में शिशुओं के क्रीड़ा-विद्यालयों से लेकर महाविद्यालय और विश्वविद्यालय तथा तकनीकी प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना पूरी सन्नद्धता के साथ सम्पन्न हो—ऐसा मानसिक एवं कार्मिक दायित्व हर प्रशासन ने स्वीकार कर लिया है। शिक्षा उल्लासपूर्ण हो, शिक्षार्थी ग्रहण करने के लिए उत्सुक हों, शिक्षा की विधा सहज और वैज्ञानिक उपयंत्रों के माध्यम से और भी सुलभ हो—यह सभी चाहते हैं और चाहना भी चाहिए। शिक्षा पूर्ण विश्व-जनता का मौलिक और प्राथमिक अधिकार हो—यह दायित्व समाज की हर निर्माणकारी शक्ति को ग्रहण करना ही चाहिए।

ऐसी मानस भूमि के पटल पर मेरे आलेख का शीर्षक अवश्य नकारात्मक लगेगा। शिक्षा धर्म है, धन नहीं। इसका प्राचुर्य अपने आप में अर्जन की समृद्धता नहीं है। इसका गुणात्मक और चरित्रात्मक उत्कर्ष न हो तो शिक्षा भी काले धन के समान बन जाती है। कुछ ऐसा होता भी प्रतीत हो रहा है। शिक्षा आदर्श और

आचरण का विषय है, गंभीर साधना के बाद जीवन के सर्वोत्तम निर्वाह का त्रुटिहीन और कभी न चुकने वाला साधन है। धर्म के त्रयाधार की भांति इसका एक अनुपम और श्रेष्ठ ध्येय होना चाहिए, परमात्मा और पूर्णतम प्रकृति के साथ लयात्मक ज्ञान होना चाहिए और प्रखर चुनौती के साथ श्रेष्ठ मानवीय चरित्र का इसे अचूक उपादान होना चाहिए। शिक्षा विद्या की गति ग्रहण करते हुए स्व और विश्व की स्फूर्त चेतना वाला ज्ञान होना चाहिए। इसमें अगाध मौन और गहन मीमांसा वाली आध्यात्मिकता होनी चाहिए, न कि वर्तमान वाली वाचालता, तर्कना और संशयात्मक आलोचना। शिक्षा का जो स्वरूप अभी प्रचलित है, उसकी अभी तो यही साक्षी है कि जिसने जितना पढ़ा, वह उतना वादर, विवादी, तार्किक, हर आस्था पर मुखर, संशयी, आलोचना-उन्मुखी और भौतिक तथ्यों और पराबौद्धिक कथ्यों का प्रवर्तक बन गया है। यह शिक्षा का नकारात्मक स्वरूप है। शिक्षा विनय और विमर्श के लिए उदार बनाने वाली होनी चाहिए। वाणी का संयम और वैचारिक औदार्य शिक्षा को ऋषित्व प्रदान करते हैं। मैं यहां ‘ऋषि’ शब्द को इसके मूल अभिप्राय में प्रयुक्त कर रहा हूँ—सत्यानुसंधानी वैज्ञानिक। शिक्षा का स्व-प्रचारात्मक उद्देश्य हमारी सांस्कृतिक मर्यादा में कभी नहीं स्वीकार किया गया। अब सनद-शोभित पाण्डित्य में प्रदर्शन और विश्व-श्रुता होने का भाव ऐसा समन्वित और सम्पादित हुआ है कि हम कई बार प्रकाण्ड मूर्खों के



सम्मुखीन होने का आत्म-तथ्य ही मौन रह कर स्वीकार करते हैं। आज भी हमारे बीच बहुत विपुल मात्रा में शुद्ध ज्ञानी तपस्वी हर ओर दिखाई देते हैं जो अगाध मौन का भी पालन करते हैं और हितमयी वाणी से निर्झर जीवनोपयोगी बात समझाते हैं। उनमें साधना है, वाणी-संयम है और साहित्य की उत्तमता है। मैं यह नहीं कहता कि अब शिक्षा को उपादानी साधनों पर आधारित मत करो, परन्तु उन पर आश्रित करना मुझे तो बहुत मंगलमय नहीं लगता।

अब तो शिशु-क्रीड़ायित शिक्षालयों में भी आधुनिकता के बहुरंगी आयामों में खोने लगे हैं शिशुओं का अबोध औत्सुक्य, उनका साहित्य-बोध और आचरण के पाठों की परम्परागत संस्कृति। वे जीवन के प्रथम मुहूर्त से ही विश्व-नागरिक बनने की दौड़ और होड़ में लग जाते हैं। अपनी माटी से कटने को मैं शिक्षा मान लूँ—ऐसी गवाही मेरी अंतरात्मा नहीं दे पाती। उसके बाद के विद्यालयों में पूर्णकालिक आघात होना आरम्भ हो जाता है विद्यार्थी

की अपनी मातृ-भाषा पर जो कदाचित् उनके अपने परिवारों में ही विलुठित हो चुकी है। बस पराए तवे पर सिक्की रोटियों के चस्के जैसी मानसिकता यहीं से पनपने लगती है। थोड़ा-सा आगे बढ़ते ही ज्ञानार्जन जीवनार्जन के लिए प्रस्तुत किया जाने लगता है। जीवन में आगे आने वाली प्रतिद्वंद्विताओं के लिए अभी से किशोर मनों में विद्रोहात्मक, विरोधात्मक और टक्कर मारते हुए आगे बढ़ने की प्रतिद्वंद्विता जागृत कर दी जाती है जो खुद से निराश माता-पिता और शिक्षकों की मानसिक स्थिति का पटाक्षेप करने के लिए प्रसूत होती हैं। हर जगह शिक्षा का व्यावसायिक रूप उभरना इस बात की किसी भी भांति अमान्य न होने वाली व्यवस्था है, जिसका कभी कभी आधुनिकता और युग की मांग के नाम से ढक-ढांप कर औचित्य ठहराया जाता है। संभव है कि आज के जग-मापदंड पर मुझे अविवेकी होने का आरोप सहना पड़े, किन्तु एक अंतर्मना शिक्षक होने के नाते मैंने जो कुछ भी श्रद्धा अपने विद्यार्थियों से उपलब्ध की, वह इस प्रणाली से दूर रह कर ही की है।

शिक्षा में उग्रता और रुग्रता के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। शिक्षा है मानव के सर्वोत्कर्ष के पल्लवन का साधन और उपादान। सर्वोत्कर्ष एक वैयक्तिक साधना है। इसमें प्रतिद्वंद्विता और प्रतिस्पर्द्धा का क्या प्रयोजन? प्रयोजन है तो बस इस बात का कि बच्चे भी समुल्लास के वातावरण में एक से बढ़ कर एक बनें। अगर हो भी तो हो उत्साह वाली परस्परता-मिल कर हासिल करने का हौसला। जिस प्रकार की प्रतिद्वंद्विता अभी हमारे विद्यार्थियों में हमने उकसाई है, वह तो एक प्रकार की हिंसा का संस्करण ही है। हिंसा का ही दूसरा प्रतिमान है असंयमित स्वार्थ और आत्म-केन्द्रिता।

पिछले कुछ महीनों में लेखक को नव-शिक्षा के दो महत्त्वपूर्ण प्रकल्पों की संयोजनाओं वाली गोष्ठियों में आमंत्रित

होने और अपना दृष्टिकोण रखने का अवसर मिला। दोनों ही प्रकल्प इस बात की सम्पुष्टि कर रहे हैं कि उनके नव-विधान बच्चों के लिए शिक्षा में अपेक्षित क्रान्ति लाने के प्रवर्तक बनेंगे। दोनों के पास साधनों का समुचित प्रभाव है और दोनों ही प्रकल्पों के पीछे बौद्धिकता से सम्पन्न प्रवासी भारतीयों की महत्वाकांक्षी भाव-भूमिका है। पहले प्रकल्प में क्रीड़ा-कक्षा से ही ऑन-लाइन शिक्षा वाले और प्राकृतिक छटा वाले सौन्दर्य के वातावरण में खुले विद्यालय का प्रावधान है। दूसरे प्रकल्प में बच्चों के प्रति कोमल और ममत्वपूर्ण परिवेश में प्रेम, अहिंसा और मानवीय मूल्यों के साथ चरित्र निर्माण का आधार स्वीकार किया गया है, जिसमें जैनागत अहिंसा-प्रशिक्षण का अवलम्बन लिया जाएगा; जिसकी आधारगत मान्यता मनीषी अमेरिका प्रवासिनी युवा-ऊर्जा सम्पन्न वयोवृद्धा श्रीमती निर्मला बोधरा के प्रतिपादन “शुद्ध आचरण ही धर्म है” से प्रेरित है। एक प्रकल्प देश के पश्चिम में और दूसरा देश के पूर्व में स्थापित करने की सुदृढ़ योजनाएं बनाई गई हैं।

जिस बात पर मेरा मन अब भी व्यग्र है, उसका संकेत मैं ऊपर दे चुका हूँ। मुझे दुःख है कि शिक्षा की बात पर आधुनिकता कितनी अशिक्षित है! हम बच्चों के बारे में इतना सोचते हैं; परन्तु क्या हम बच्चों की नैसर्गिक आवश्यकता के बारे में सोचते हैं? हम उनको अपने स्वप्न या महत्वाकांक्षा के ढांचे में ही ढालना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे आने वाले समय में विकट प्रतिस्पर्द्धा में जुझारू बन कर जीतें, चाहे वे टक्कर मार कर आगे बढ़ें या कोई कूट नीति लेकर--बच्चों को बस सबसे आगे जाना है वहां तक, जहां तक उनके माता-पिता या अन्य अभिभावक पहुँचने की कल्पना भी नहीं कर पाए थे। हम चाहते हैं कि वे भविष्य में सफलता की नई परिभाषा लिखने वाले भी हों, अदम्य भी हों और साथ ही चरित्रवान, आतंकहीन,

शान्तिप्रिय और अहिंसावादी हों, यानि प्रखर गति से आगे बढ़ कर, हिंसात्मक प्रतिस्पर्द्धा और व्यावसायिक दक्षता के साथ आगे बढ़ कर सौम्य बनें! बच्चों के प्रति ऐसी निष्ठुर और निर्मम अपेक्षा रख कर मेरे एक पुराने और बहुचर्चित लेख “कोमल कोपलों पर कड़ी धूप” के शीर्षक को जीवन्त किया चाहते हैं। उनसे उस आदर्श की अपेक्षा जो हममें तो है नहीं और सो भी मृदुलताहीन कठोर मार्ग से!! बच्चों का बचपन छीन कर! नन्हीं-सी उम्र में घर की तन्हाई से मुक्ति दिलाने के लिए स्कूल की भीड़ में, ताकि अभिभावक अपने जीवन की समस्याओं का समाधान करने में टूटते-बिखरते रहें! आधुनिक और अहिंसा के ऐसे स्वयं-विरोधी शिक्षा नवाचार से मैं स्वयं कुछ आतंकित-सा हो उठा हूँ। नहीं, शिक्षा ऐसी नहीं होनी चाहिए।

हाँ, दूसरे प्रकल्प के प्रति मेरी गहरी आस्था है। बच्चों को उन्मुक्त बचपन लौटाते हुए, सौम्यता से उन्हें तरुण और दायित्वपूर्ण स्वावलम्बन वाला प्रशिक्षण केवल चरित्र-निर्माण की दिशा-धारा से ही दिया जा सकता है। प्रेम और अहिंसा दोनों मानवीय चरित्र के दाय हैं जिसके लिए रसात्मक साहित्य की भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी भौतिक, वैज्ञानिक और तकनीकी दक्षता के विषयों की। अन्य समाहित लेखों में इस बात का जिक्र जरूर मिलेगा--ऐसी मेरी आशा है। मेरा सुनिश्चित मानना है--“ज्ञान वही वैज्ञानिक होता जिसमें आध्यात्मिक तत्त्व नहीं खोता हो।” शिक्षा स्वाध्याय से हटकर, वाचालता और प्रदर्शन से पटकर तथा सनदों में सिमट कर शुभ नहीं हो सकती। शिक्षा के नवाचार में भारतीय सांस्कारिक परम्परा को अब सारा विश्व सम्मान देने लगा है। अच्छा हो, अब हम भी देना सीखें और आधुनिकता के असंयमित प्रवाह से बचें। एवमस्तु!

स्मृति, 141/ए, गणेश नगर,
मानसरोवर, जयपुर

अपराध नियंत्रण व पुलिस प्रशासन

सत्यनारायण सिंह

आम नागरिक पुलिस से आशा व अपेक्षा करता है कि वह बगैर किसी डर, पक्षपात व भय के, ईमानदारी व निष्पक्षता से अपनी जिम्मेदारी निभाये और राजनेता पुलिस को तथा गुंडों व अपराधियों को अपने हित साधन के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकें। परन्तु, लम्बे अर्से के बाद भी पुलिस के चरित्र एवं उत्तरदायित्व में बदलाव नहीं आया है। वर्दी पहनने के साथ ही सदा सच्चाई, ईमानदारी व देश के लिए कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखने वाले पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों की मानसिकता में बदलाव आ जाता है। संवेदनशीलता समाप्त हो जाती है। आम लोग उन पर संदेह करने लगते हैं।

पुलिस कर्मचारियों द्वारा बलात्कार, नाजायज मारपीट, अमानुषिक एवं बर्बरतापूर्ण व्यवहार, हिरासत में मृत्यु की खबरें आज आम हो चुकी हैं। दूसरी ओर, कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी व कर्मचारी यदि कुख्यात अपराधी व बदमाशों को पकड़ते हैं तो वह किसी न किसी तरह भ्रष्ट तरीके अपनाकर अथवा प्रभावशाली अधिकारियों व राजनेताओं की मदद से कानून से बच निकलते हैं और फिर गुनाह करते हैं। पुलिस की बदनामी होती है। नामी बदमाशों को एनकाउंटर में मारने पर आलोचना व प्रत्यालोचना सहनी पड़ती है। अपराधी खुलेआम घूमते हैं। कभी कोई नेता हस्तक्षेप करता है तो कभी प्रताड़ित करने की धमकी देता है। खुलेआम डांटने से भी गुरेज नहीं करता।

अपराधियों के सरगनों से पुलिस के निपटने की कार्यप्रणाली अभी निर्धारित नहीं है। एक ओर मानवाधिकार से जुड़े अनेक लोग व समाजशास्त्रियों का मत है कि पुलिस ज्यादातियों तथा फर्जी मुठभेड़ से हत्याओं की घटनाएं बढ़ी हैं। पुलिस पर अब नियंत्रण नहीं रहा। परन्तु, यह भी स्पष्ट है कि अपराधियों के सरगनाओं से

पुलिस सामान्य कानून द्वारा नहीं निपट सकती। पेशेवर अपराधी आज इतने ताकतवर बन गये हैं कि पुलिस बल के लिए चुनौती बने रहते हैं और पुलिस पर भी हमला करने से बाज नहीं आते। इस सिद्धांत को अब नहीं माना जा सकता कि जब तक पुलिस दल पर फायर नहीं हो तब तक गोली नहीं चलाई जानी चाहिए।

आत्मघाती अपराधियों की संख्या बढ़ती जा रही है। आतंकवाद बढ़ता जा रहा है। सामाजिक व आर्थिक शोषण व गरीबी के कारण लोग कानून को हाथ में लेने लगे हैं। इसलिए अब पुलिस को भी कठोर कार्यवाही करनी पड़ती है। यह सही है कि अनेक बार बहुत से निर्दोष भी लापरवाही व गफलत अथवा अति उत्साह से पुलिस की चपेट में आ जाते हैं, परन्तु डकैती, मारकाट, लूटपाट, आतंक फैलाने वालों के साथ सख्ती भी आवश्यक है।

पुलिस जांच में आज भी वही पुराने यातनापूर्ण तरीके, मारपीट, अमानुषिक व्यवहार व मानसिक आघात के तरीके अपनाये जाते हैं। पुलिस अधिकारियों के अक्खड़ व्यवहार, गाली-गलौच की भाषा से निर्दोष लोग राजनीतिज्ञों व प्रभावशाली लोगों की शरण में जाते हैं। एकजीक्यूटिव मजिस्ट्रेट या न्यायपालिका का पुलिस कार्यप्रणाली पर कोई प्रभावी नियंत्रण नहीं है। वह अब न तो न्यायपालिका के प्रति जिम्मेदार है और न ही एकजीक्यूटिव मजिस्ट्रेट के प्रति। दलितों व दलित महिलाओं पर अत्याचार बढ़े हैं। बाल अपराधों में वृद्धि हो रही है। तस्करि व आर्थिक अपराध बढ़े हैं। अपराध के वैज्ञानिक तरीके अपराधियों ने सीख लिये हैं। पुलिस के पास आधुनिक संसाधन नहीं हैं। परन्तु यह भी सच है कि अब पुलिस में भी अपराधीकरण, क्षेत्रीयकरण, जातीयकरण एवं व्यक्तिगत निष्ठा बढ़ी है।

अपराध बढ़े हैं, अपराध करने के तरीके भी बढ़े हैं एवं अपराधियों की



संख्या भी बढ़ी है। अपराध करना व बच निकलना अधिक आसान हो गया है। मामला पेचीदा होता जा रहा है। नये-नये तरीकों से नये-नये अपराध हो रहे हैं और पुलिस के पास संसाधन कम हैं। स्पष्ट सोच व निष्पक्षता, कर्तव्य भावना, इच्छाशक्ति, ईमानदारी कम हुई है। यदि कार्य-व्यवहार में बदलाव कर, जनता का विश्वास अर्जित कर साधनों का पूर्ण क्षमता से उपयोग कर पुलिस बर्बर तरीके छोड़कर कार्य करें तो बड़े-बड़े मामलों में भी गहराई तक पहुंचा जा सकता है। भ्रष्टाचार व दबाव को छोड़कर न्यायपूर्ण तरीके से मामलों को हल करने की चेष्टा की जाए, राजनेताओं की राजी-नाराजगी की परवाह नहीं की जाये, दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कार्यवाही की जाये, कठोर मानसिकता को बदलकर संवेदनशील तरीका अपनाया जाये तो तेजी से सुधार लाया जा सकता है और पुलिस के कार्य-व्यवहार व आचरण के प्रति जनमानसिकता में बढ़ते असंतोष व रोष को कम किया जा सकता है। अपराधों के बढ़ने का कारण पुलिस कर्मचारियों की निष्क्रियता व अवहेलना भी रही है इसलिए अकारण गोली चलाने की घटनाएं भी घटी हैं। निर्दोष, गरीब, मजदूर लोगों को अपराध करने से रोकने के लिए पुलिस को पब्लिक फ्रेंडली बनाना आवश्यक है।

अंग्रेजी सलतनत द्वारा अपनी रक्षा के लिए बनाये गये पुलिस संगठन व पुलिस

झांकी है हिन्दुस्तान की

कानून में बुनियादी बदलाव की आवश्यकता है। पूर्व कानून के अनुसार हर तरीके से कानून व आदेश की पालना कराना मात्र पुलिस का कर्तव्य है। चाहे इसके लिए लाठी, गोली चलानी पड़े। जांच पड़ताल के तरीकों में भी आधुनिक व वैज्ञानिक तरीकों को नहीं अपनाया गया है। पुलिस में अभी सर्वेक्षण, जांच व्यवस्था का पृथक्करण नहीं हुआ है।

यह भी सही है कि पुलिस के कार्यों में राजनेताओं का हस्तक्षेप होता है। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी अपने को बचाने में लगे रहते हैं। परन्तु, यह भी सही है कि अनेक लोग राजनैतिक हस्तक्षेप को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं। स्वयं जिम्मेदारी, स्वतंत्रता एवं नियंत्रण के अभाव में गैरजिम्मेदाराना व्यवहार करते हैं।

आज आवश्यकता है पुलिस को संवेदनशील बनाने की व आमजन को संगठित कर पुलिस अधिकारियों पर समुचित नियंत्रण की। उसे भी कानून के भय की आवश्यकता है। पुलिस को स्पष्ट बताना होगा कि विशिष्टजन व आमजन कानून से ऊपर नहीं हैं। स्वतंत्र व निष्पक्ष सिटीजन कौंसिल उन्हें कानूनी व व्यावहारिक रूप से नियंत्रित कर सकती है। पुलिस अधिकारियों को विभागीय दृष्टिकोण में भी बदलाव लाना होगा। सही को सही व गलत को गलत कहना व सुनना होगा। यदि कोई अत्याचार अथवा दुर्व्यवहार की शिकायत है तो वरिष्ठ अधिकारी को उस पर कार्यवाही करनी होगी और आम आदमी की तरह व्यवहार करना होगा।

पुलिस नियंत्रण व परीक्षण प्रक्रिया में भी आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। वैज्ञानिक एवं आधुनिक अन्वेषण के तरीकों से कार्य करने की आदत डालनी होगी। नागरिकों को सम्मान देने की भावना पैदा करने की आवश्यकता है। पुलिस के सूचना तंत्र को भी मजबूत बनाना होगा। संसाधनों में वृद्धि कर कार्य व्यवहार को पारदर्शी बनाकर आम जनता के साथ मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाकर ही हम सफल हो सकते हैं। सूचना, अनुसंधान, प्रशिक्षण व कार्य-प्रणाली को विषम स्थितियों एवं परिस्थितियों में बदलने की आवश्यकता है।

आज अपराध बढ़ते जा रहे हैं। अपराधी पुलिस प्रशासन को खुली चुनौती दे रहे हैं। सत्ता के नशे में चूर राजनेता इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं। भूमि हड़पने के आरोप लग रहे हैं। जांच रिपोर्ट बगैर कार्यवाही के पड़ी रहती है। राजनैतिक कारणों से आरोपियों पर कार्यवाही नहीं होती। पुलिस प्रशासन का खौफ समाप्त होने से दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह हो गयी है कि गंभीर अपराधों की संख्या बढ़ रही है। राजनेताओं को पुलिस अधिकारियों के पदस्थापन व स्थानांतरण से अपने को अलग करना होगा। मनचाहे फैसले कराने के लिए आकांक्षा के आधार पर ऐसे अधिकारियों का पदस्थापन कराना, जो उनका मुंह ताकते रहें व हुक्म बजाते रहें, की प्रवृत्ति को छोड़ना होगा और उन्हें समझना होगा कि इससे पूरी कानून व्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

4/45, सूर्य पथ, जवाहरनगर, जयपुर - 302004 (राजस्थान)

- मध्यप्रदेश के भोपाल और इंदौर शहर के नागरिकों को आगामी छह साल में मेट्रो की सुविधाएं मिलनी शुरू हो जाएंगी। भोपाल एवं इंदौर शहर में मेट्रो रेल योजना की प्री-फिजिबिलिटी सर्वे रिपोर्ट प्राप्त हो गई है। इसके अनुसार भोपाल में मेट्रो रेल लाइन की लम्बाई 50 किलोमीटर तथा इंदौर में 60 किलोमीटर होगी। इससे यहां के लोगों को सुविधा प्राप्त होगी। प्रथम चरण में भोपाल में 28 किलोमीटर की लाइन डालने पर 6300 करोड़ रुपये का व्यय संभावित है। दोनों शहरों की विस्तृत परियोजना की तैयारी चल रही है।

- भारत में पिछले तीन दशक के दौरान बेटे की चाह में लाखों लड़कियों की भ्रूणहत्या कर दी गई। इन हत्याओं के जिम्मेदार लोगों में ऐसे लोगों की तादाद खासी बड़ी है जो कथित रूप से पढ़े-लिखे और सम्पन्न हैं। स्वास्थ्य पत्रिका लांसेट की एक ताजा रपट के मुताबिक, भारत में बहुत से संपन्न और पढ़े-लिखे लोगों को भी जब पता चलता है कि उनकी दूसरी संतान भी बेटी होगी, तो वे उसकी भ्रूणहत्या करवाने में देर नहीं लगाते। इस सोच और इस तरह के सिलेक्टिव अबॉर्शन्स का नतीजा साल-2011 की जनगणना के शुरुआती आंकड़ों से पता चलता है। यह 6 साल तक के लड़कों और लड़कियों की संख्या में बढ़ते असंतुलन को जाहिर करते हैं। रिपोर्ट के अनुसार पिछले तीन दशक के दौरान 40 लाख से लेकर एक करोड़ 20 लाख कन्याओं की भ्रूणहत्या कर दी गई। लांसेट के मुताबिक, अगर पहली संतान बेटा है तो बेटे के जिंदा रहने की उम्मीद बढ़ जाती है।

- मध्यप्रदेश में कन्या भ्रूण परीक्षण की सही जानकारी देने वाले व्यक्ति को राज्य सरकार की ओर से एक लाख रुपये का इनाम दिया जाएगा। दोषी व्यक्ति के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।



अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा उद्घोषित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह (26 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2011)

अणुव्रत आंदोलन न कोई सम्प्रदाय है न कोई परम्परा। असाम्प्रदायिक और शाश्वत धर्म है--अणुव्रत। इसके परिपार्श्व में चरित्र विकास, नैतिक और अहिंसक मूल्यों की पुनर्स्थापना का अभियान विगत 60 वर्षों से गतिशील है। अणुव्रत मानव जाति के विकास के लिए एक पथ-दर्शन है, जिसकी शाश्वत अपेक्षा है। अणुव्रत कार्यक्रमों की शृंखला में इस वर्ष अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का क्रम निम्नानुसार निर्धारित हुआ है--

■ 26 सितंबर, 2011 सोमवार : पर्यावरण शुद्धि दिवस

शुद्ध पर्यावरण स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है। पर्यावरण चेतना को जन-जन तक पहुँचाया जाये, यही इस दिवस का उद्देश्य है। इस दिन स्थान-स्थान पर यात्राएं, भाषण, चित्रकला, नाटक, गायन प्रतियोगिताएं, प्रदर्शनियां आयोजित की जाएं।

■ 27 सितंबर, 2011 मंगलवार : जीवन विज्ञान दिवस

शिक्षा का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप जीवन में निखरे। शिक्षा को मूल्यपरक बनाने के लिए जीवन विज्ञान एक प्रभावी विकल्प है। इस दिन शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों, शिक्षक-शिक्षिकाओं को जीवन-विज्ञान की जानकारी दी जाये एवं प्रयोग भी करवाये जायें।

■ 28 सितंबर, 2011 बुधवार : अणुव्रत प्रेरणा दिवस

जन-जन को अणुव्रत आचार-संहिता, वर्गीय आचार-संहिता की जानकारी दी जाए। 'अणुव्रती बनो' अभियान संचालित हो। स्थानीय स्तर पर अणुव्रत समिति का गठन किया जाए। 'अणुव्रत' आधारित भाषण, निबन्ध, चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं।

■ 29 सितंबर, 2011 वृहस्पतिवार : सांप्रदायिक सौहार्द दिवस

दुनिया में संप्रदाय सदा रहे हैं, आगे भी रहेंगे। आवश्यकता है कि संप्रदाय सापेक्षता को समझा जाए तथा इससे जुड़ी संकीर्णता, द्वेष, दुर्भावना आदि को दूर किया जाए। विभिन्न संप्रदायों के प्रमुखों तथा अनुयायियों के साथ मिलकर संप्रदायों की सापेक्षता पर विचार किया जाए एवं सांप्रदायिक सौहार्द का वातावरण बनाया जाए। इस दिवस पर सर्वधर्म सम्मेलन, गोष्ठियां, सेमिनार आदि आयोजित हों।

■ 30 सितंबर, 2011 शुक्रवार : नशामुक्ति दिवस

नशा नाश का द्वार है। आज नशे के अनेक प्रकार प्रचलित हैं। सभी लोगों को नशे के दोषों, हानियों की जानकारी दी जाये तथा नशामुक्ति का संकल्प कराया जाए। इस कार्यक्रम में चिकित्सकों, नशामुक्ति से संबंधित सरकारी विभागों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं का सहयोग लिया जाए। नुककड़-नाटक, गीत, प्रदर्शनी, भाषण आदि के विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।

■ 01 अक्टूबर, 2011 शनिवार : अनुशासन दिवस

अनुशासन व्यक्ति और समाज का मूलाधार है। अनुशासन के अभाव में जीवन बिखर जाता है। इस दिन अनुशासन के संदर्भ में जानकारी दी जाये एवं अनुप्रेक्षाओं के प्रयोग भी करवाए जायें।

■ 02 अक्टूबर, 2011 रविवार : अहिंसा दिवस

वर्तमान में बढ़ती हुई हिंसा को रोकने के लिए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने अहिंसा समवाय के माध्यम से अहिंसा प्रशिक्षण का प्रवर्तन किया है। इस दिन गोष्ठियों, सभाओं, शिविरों द्वारा अहिंसा के स्वर को जन-जन तक पहुँचाया जाए। अहिंसा में विश्वास रखने वाले व्यक्तियों/संगठनों से संपर्क किया जाए एवं सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।



मुस्कान

डॉ. निजामउद्दीन

चार अक्षरों का यह शब्द असीमित शक्ति और प्रभाव को अपने अंदर समेटे हुए है। मुस्कान में मृदुलता होती है, स्नेहिलता होती है, निश्छलता होती है, पावनता होती है, निर्मलता होती है, आंतरिक स्वच्छता होती है। अजीब तरह का आकर्षण और सम्मोहन होता है। मानवता का दर्पण होता है। बालक की मुस्कान स्वर्ग-तुल्य आनंद प्रदान करती है, यह अनमोल है। मुस्कान बाज़ार में बिकने या खरीदने वाली चीज़ नहीं है। स्वाभाविक, सहज मुस्कान सात्विक होती है। संसार में करोड़ों जीवधारी हैं, पशु-पक्षी हैं, लेकिन मुस्कान-अधरों की मुस्कान केवल, हां, केवल मनुष्य के ही हिस्से में आई है। क्या आपने कभी किसी पशु-पक्षी को हंसते-मुस्कुराते देखा है? मनुष्य से श्रेष्ठ इस संसार में कोई प्राणी नहीं, उसी प्रकार मानव-मुस्कान के समान संसार में कोई चीज़ नहीं। मुस्कान मौन है, निःशब्द है, लेकिन इसका मूल्य कोई अदा नहीं कर सकता।

‘मोनालिज़ा’ की मुस्कान विश्व-विख्यात है, आप उसकी पेंटिंग खरीद सकते हैं, मुस्कान नहीं। यह भाव है, जज़्बा है। हमारे देवी-देवता चाहे वे मंदिरों में विराजमान हों, चाहे तस्वीर में हों या शिल्पकला में दर्शाए गए हों, कभी देखा है उन्हें—गौर से देखा है वे सदा मुस्कुराते नज़र आते हैं। यह मंद मुस्कान शाश्वत है। उन चित्रों से, मूर्तियों से यह संदेश मिलता है कि हमेशा आदमी को मुस्कुराते रहना चाहिए, यही सच्चा जीवन है, यही मुक्ति है संसार के सब क्लेशों-कलहों से, झंझटों से, झगड़ों से, तनावों से, अवसादों से, हिंसा से, आतंक से, घृणा से, क्रोध से, लोभ-मोह से, अहंकार से।

माता-पिता बालक को गोद में लेकर

उसे प्यार-दुलार करते हैं, उसकी मुस्कान का रसपान करते हैं। बच्चा ज़रा उदास हुआ नहीं कि उनका सुख-चैन ख़त्म। अनजान व्यक्ति भी मुस्कुराते बालक को सहज ही प्यार करने लगता है। बालक की मुस्कान हो या किसी औरत-आदमी की, उसका अपना सौंदर्य है, अपना मूल्य है, अपना अर्थ है। पारस्परिक मनमुटाव दूर करने का मुस्कान रामबाण है, इसे ज़रूर आजमाइए।

तुलसी ने वन-गमन प्रसंग में लिखा है कि जब गांव की महिलाएं सीता को राम-लक्ष्मण के साथ मार्ग में पैदल चलता देखती हैं तो जिज्ञासावश सीता से पूछती हैं कि (राम की ओर संकेत कर) जो युवक बार-बार तुम्हें निहारता है, सांवाला-सलौना है, वह तुम्हारा क्या लगता है? सीता उनकी जिज्ञासा को शांत करते हुए उत्तर देती है, शब्दों से नहीं, मौन-मुस्कान से— ‘मुस्काई कछु समुझाई चली।’ सीता का राम की ओर मुस्करा कर देखना, मुख पर ज़रा-सा आंचल करना, सीता का उत्तर है।

शाश्वत मुस्कान जीवन की शाश्वत ऊर्जा का प्रतीक है, इसमें चांदनी की सी आभा-कांति है। बादलों से रात्रि में चांद का लुकना-छिपना और फिर नज़र आना, उसकी दिव्य मुस्कान है। फूल के खिलने को हम फूल की मुस्कान कहते हैं लेकिन उसमें निर्जीवता होती है। दिनकर जी ने नारी को ‘सवाक सुमन’ कहकर उसकी सजीवता को, प्राणमयी रूपराशि को अभिव्यंजित किया है। एक बार पैगम्बर मुहम्मद साहब (सन् 571-632) प्रवचन कर रहे थे, उसमें उन्होंने फरमाया—बूढ़े-मर्द-औरत जन्त में, स्वर्ग में नहीं जायेंगे। श्रोताओं में एक बुढ़िया भी थी। वह घर आकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। उधर से बिलाल नाम के काले रंग के एक हब्शी निकले, बुढ़िया को रोते-बिलखते देखकर

उसके पास गये और उससे रोने का कारण पूछा। बुढ़िया ने पैगम्बर हज़रत मुहम्मद साहब की बात दोहराई कि बूढ़े जन्त में दाखिल न होंगे। बिलाल ने आकर पैगम्बर साहब से उसके रोने की बात कही। पैगम्बर साहब ने मंद-मुस्कान के साथ फरमाया—“हाँ, काले आदमी भी जन्त में नहीं जायेंगे।” यह सुनकर बिलाल भी चिंतित हो गए। फिर पैगम्बर साहब ने फरमाया—“जन्त में सब स्त्री-पुरुष सुंदर रूप के होंगे और सब मध्यायु (न बूढ़े - न बालक) में—युवकावस्था में जन्त में दाखिल होंगे—स्मित-वदन।” मुस्कान वही सुंदर है जो फरेब से परे हो, कामोद्दीपक भी न हो।

माता-पिता के चेहरे को मुस्काते देखना पुण्यदायक है। किसी दीन-दुखी तक को प्यार भरी मुस्कान से देखना भी ‘सदक़ा’ खैरात, दान कहा गया है और इसमें हमारा कुछ खर्च भी नहीं होता। आज के आदमी की दशा इस दृष्टि से शोचनीय है कि उसके अधरों की मुस्कान गायब हो गई है, उसे किसी ने छीन लिया है। भौतिकतावाद की चकाचौंध से उसकी आंखें तक धुंधली हो गई हैं, चुंधिया गई हैं। वह और क्या देखेगा, उसे अपने को भी देखने की फुर्सत नहीं! उसने यह अनमोल दौलत अपने हाथों गवां दी है। उसने सुख-सुविधाओं के अम्बार लगा रखे हैं, वह धन-सम्पन्न है, कार-बंगले वाला है, उच्च पद का अधिकारी है लेकिन बिना मुस्कान के कितना निरीह और कंगाल है! उसकी मुक्त हंसी में पीड़ा मुखरित होती है, हृदय की दुख-अनुभूति उसमें छिपी है। कहते हैं—देखकर मत मुस्कुराओ, मुस्कराकर देखो। मुस्कराकर देखना खुद प्रसन्न होकर दूसरे को प्रसन्न करने का भाव है। मुझे आचार्य श्री तुलसी का स्मित वदन याद आता है। अनमोल मुस्कान से वे सदा अपने श्रद्धालु श्रावकों, आमंत्रित व्यक्तियों, मार्ग में मिलते बालक तथा स्त्री-पुरुष आदि सबको अपनी मुस्कान का आशीर्वाद देते थे।

मोहल्ला : साज़गरीपोरा,
श्रीनगर - 190011 (कश्मीर)

मन को शांत बनाएं

डा. विनोद गुप्ता

मानसिक शांति दुनिया की सबसे बड़ी नियामत है। यदि मन शांत नहीं है तो चाहे जितने भौतिक सुख-साधन उपलब्ध हों, कोई मायने नहीं रखते। आखिर, मन अशांत क्यों रहता है? क्या उसे शांत नहीं बनाया जा सकता?

तनाव चाहे किसी भी प्रकार का हो, मन को अशांत कर देता है और जब तक वह रहता है शांति नहीं मिलती। जरा सोचिए, तनाव पालने से क्या होगा? क्या सारी समस्याएं जड़ से समाप्त हो जाएंगी? उल्टे तनाव की वजह से अनेक बीमारियां घर कर जाती हैं। बेहतर होगा कि तनाव से दूर रहें। चिंता की बजाय चिंतन करें तो रास्ते खुद ब खुद निकल आएंगे।

कुछ लोग नकारात्मक सोच वाले होते हैं। उनकी इसी प्रवृत्ति की वजह से उनका मन सदैव दुखी और अशांत रहता है। जब सोच ही नकारात्मक हो तो मन-मस्तिष्क में अच्छे खयाल कहां से आएंगे? इसलिए अपनी सोच को सकारात्मक बनाएं। शुभ सोचें, शुभ ही होगा। ऐसे में आपका मन कभी अशांत नहीं होगा।

जिनका गुस्सा सदैव सातवें आसमान पर रहता है, उनका मन कभी शांत नहीं होता; क्योंकि उनका यही गुस्सा उनकी मानसिक अशांति का कारण बनता है। इसलिए गुस्सा थूकिए और अपने चेहरे पर हंसी लाइये। जब मन में क्रोध नहीं होगा तो वहां अशांति भी नहीं होगी।

एकांत में मन में तरह तरह के खयाल आते हैं, जिससे वह अशांत हो जाता है। इसलिए सक्रिय रहें, सामाजिक बनें, लोगों से मेलजोल बढ़ाएं। यदि जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण है, तभी जीने का उत्साह है। वह सब करें जो आपका मन कहता है, या जिससे आपको खुशी मिलती है।

महत्वाकांक्षी होना बहुत अच्छी बात है, लेकिन अतिमहत्वाकांक्षी होना ठीक नहीं; क्योंकि इससे सदैव निराशा ही हाथ लगती है। और मन अशांत होता है। इसलिए अपने साधन-सुविधाओं और क्षमताओं को देखकर ही लक्ष्य निर्धारित

करें। उन्हें प्राप्त करने का प्रयास भी करें। क्षमता से अधिक की कल्पना न करें, इससे मानसिक शांति बनी रहती है।

जो घटनाएं घटित नहीं हुई हैं, उन्हें लेकर अनिष्ट की आशंका पालना या उनसे भयभीत रहने से मन अशांत रहता है। इसलिए अपने मन में सदैव अच्छे विचार लाएं तथा अनिष्ट की कल्पना न करें।

ऐसे लोग भी हैं जो किसी भी स्थिति में खुश नहीं रहते और उनका मन सदैव अशांत बना रहता है। इसके विपरीत कुछ लोगों का मन प्रतिकूल परिस्थितियों में अशांत हो जाता है। परिस्थितियां चाहे अनुकूल हों या प्रतिकूल, मन को स्थिर तथा शांत रखना चाहिए, तभी आप चुनौतियों का मुकाबला कर सकेंगे।

अनिद्रा भी मानसिक अशांति का कारण बनती है। इसलिए रात्रि में छह से आठ घंटे तक की नींद लें, ताकि सुबह जब उठें तो मन-मस्तिष्क प्रफुल्लित रहें।

ध्यान, योग, व्यायाम, खेलकूद आदि गतिविधियों से मन को शांति मिलती है। इसलिए इन्हें अपनी जीवन का अंग बनाएं।

यदि आपसे कोई गलती या अपराध हुआ है या आपकी वजह से किसी का मन दुखा है तो आपका मन भी शांत नहीं रहेगा तथा उसमें उथलपुथल मची रहेगी। इसलिए अपनी गलती को स्वीकारें तथा संभव हो तो उसका पश्चाताप भी करें ताकि आपके मन मस्तिष्क से अपराध-बोध दूर हो सके।

यदि आप किसी क्षेत्र में नाकामयाब रहे हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि सब कुछ खत्म हो गया। इस पर मन को उदास करना ठीक नहीं। हां, अपनी नाकामी से सबक लेना चाहिए तथा उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इससे एक दिन सफलता आपके कदम चुमेगी और मन को शांति मिलेगी।

मन को शांत रखना है तो तकरार की

बजाय प्यार का तरीका अपनाएं। जो बात मिल बैठ कर सुलझाई जा सकती है उसे अनावश्यक तूल देने से मानसिक अशांति बढ़ती है। कड़वी यादों को भुला देना ही बेहतर है। अपनी स्मृति में मधुर यादें संजोकर रखें। किसी भी समस्या का समाधान तकरार, लड़ाई झगड़ा नहीं है उसे प्यार से भी सुलझाया जा सकता है।

संगीत में वह जादू है जो अशांत और उदास मन को शांत तथा उत्साह पैदा कर सकता है। इसलिए संगीत में रुचि रखें। मधुर संगीत सुनें। इससे तन और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं।

हर हाल में खुश रहने की आदत डालें। समय बदलता रहता है। यदि आज आपके बुरे दिन चल रहे हैं तो कल अच्छे दिन भी आएंगे। अतः मन को अशांत न करें। अच्छे कल और कल्पना करें।

आस्तिक बनें, नास्तिक नहीं। आपका इष्ट चाहे जो हो उसकी आराधना करें तथा उस पर विश्वास रखें। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, मठ, गिरजाघर, चर्च जिसमें भी आपकी श्रद्धा हो वहां जाएं और शांत मन से प्रार्थना करें। प्रार्थना का असर सदैव सकारात्मक होता है। धर्म के प्रति आस्था रखना चाहिए, तभी मन को शांति मिलती है।

परिवार में शांति और सौहार्द बनाए रखने की कोशिश करें क्योंकि पारिवारिक कलह मन को अशांत बना देता है, जिसकी परिणति अच्छी नहीं होती। रिश्ता चाहे पति-पत्नी का हो या संतान और माता-पिता का अथवा भाई बहन का, इनके बीच प्रेम और सद्भाव होना चाहिए। परिवार के आपसी मतभेद परिवार में सौहार्दपूर्ण वातावरण में ही सुलझाएं, उन्हें कोर्ट कचहरियों में घसीटना ठीक नहीं, इससे किसी को भी शांति नहीं मिलती।

43/2 सुदामा नगर रामटेकरी,
मंदसौर (म.प्र.) 458001

प्रदूषित होती नदियां

नरेन्द्र देवांगन

आस्था का सार्वजनिक प्रदूषित नदी अब पर्यावरण पर भारी पड़ रहा है। हर साल हमारे देश में कई स्थानों पर जोर-जोर से गणेशोत्सव मनाया जाता है और उसके बाद जगह-जगह दुर्गा पूजा का आयोजन होता है। एक स्थूल अनुमान के मुताबिक हर साल लगभग दस लाख मूर्तियां नदी, तालाबों और झीलों के पानी के हवाले की जाती हैं और उन पर लगे वस्त्र, आभूषण भी पानी में चले जाते हैं। चूँकि ज्यादातर मूर्तियां पानी में न घुलने वाले प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी होती हैं, उन्हें विषैले एवं पानी में न घुलने वाले नॉन बायोडिग्रेडेबल रंगों से रंगा जाता है, इसलिए हर साल इन मूर्तियों के विसर्जन के बाद पानी की बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड तेजी से घट कर जलजन्य जीवों के लिए कहर बन जाती है। चंद साल पहले मुंबई से वह विचलित करने वाला समाचार मिला था जब मूर्तियों के धूमधाम से विसर्जन के बाद लाखों की तादाद में जुहू किनारे मरी मछलियां पाई गई थीं।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा दिल्ली में यमुना नदी का अध्ययन इस संबंध में आंखें खोलने वाला रहा है कि किस तरह नदी का पानी प्रदूषित हो रहा है। बोर्ड के निष्कर्षों के मुताबिक नदी के पानी में पारा, निकल, जस्ता, लोहा, आर्सेनिक जैसी भारी धातुओं का अनुपात दिनोंदिन बढ़ रहा है। दिल्ली के जिन-जिन इलाकों में मूर्तियां बहाई जाती हैं वहां के पानी के सैंपलों को लेकर अध्ययन करने के बाद बोर्ड ने पाया कि मूर्तियां बहाने से पानी की चालकता, ठोस पदार्थों की मौजूदगी, जैव रासायनिक ऑक्सीजन की मांग और घुले हुए ऑक्सीजन में कमी बढ़ जाती है। पांच साल पहले बोर्ड ने अनुमान लगाया था कि हर साल लगभग 1799

मूर्तियां दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में बहाई जाती हैं। और, उसका निष्कर्ष था कि इस कर्मकाण्ड से नदी को कभी न भरने लायक नुकसान हो रहा है, और प्रदूषण फैल रहा है।

सबसे ज्यादा जल प्रदूषण प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी मूर्तियों के विसर्जन से होता है। पूजा के दौरान हुआ ऐसा कचरा, जिसकी रिसाइकलिंग नहीं की जा सकती है, उससे भी जल प्रदूषण अधिक मात्र में होता है। पीओपी ऐसा पदार्थ है जो कभी समाप्त नहीं होता है। इससे वातावरण में प्रदूषण की मात्रा के बढ़ने की संभावना बहुत अधिक रहती है। प्लास्टर ऑफ पेरिस, कैल्सियम सल्फेट हेमी हाइड्रेट होता है, जो कि जिप्सम (कैल्सियम सल्फेट डीहाइड्रेट) से बनता है। जबकि ईको फ्रेंडली मूर्तियां चिकनी मिट्टी से बनती हैं, जिन्हें विसर्जित करने पर वे आसानी से पानी में घुल जाती हैं। लेकिन अब इन्हीं मूर्तियों में रासायनिक रंगों (भारी रासायनिक पदार्थों से तैयार) से रंगा जाता है और फिर जब इन्हें विसर्जित किया जाता है, तो ये रंग पानी में घुलते हैं, जो जल प्रदूषण को बढ़ाते हैं।

मूर्तियों द्वारा होने वाले जल प्रदूषण के ऊपर बंगलुरु में किए गए अध्ययन से यह पता चला है कि:--

- पानी में उपलब्ध अम्ल का प्रतिशत बढ़ रहा है।

- टोटल डिऑक्सीजन 100 प्रतिशत तक बढ़ चुका है।

- मूर्तियों के विसर्जन के मौसम में दिन में पानी में उपलब्ध ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है और रात में घट जाती है।

संभावित समाधान :

चूँकि मूर्ति-विसर्जन हमारी श्रद्धा, आस्था और भावनाओं से जुड़ा है, इसलिए

जल-प्रदूषण रोकने की दृष्टि से कुछ सुझाव इस प्रकार हो सकते हैं:--

- सीधे झील, नदी या समुद्र में मूर्तियों का विसर्जन करने से अच्छा है कि हम उन्हें सरकार द्वारा बनाए गए बड़े-बड़े पानी के टैंकों में प्रवाह करें।

- मूर्तियों को प्राकृतिक सामग्रियों से तैयार किया जाए।

- यदि संभव हो तो मूर्तियों का उपयोग दुबारा किया जाए।

- यदि कोई व्यक्ति, पीओपी सामग्रियों का प्रयोग कर रहा है तो उसे पानी में प्रवाह करने की बजाय, उस पर पानी की दो-चार बूँदें सांकेतिक तौर पर प्रवाह के रूप में डाली जाएं। इससे किसी की भावना को भी ठेस नहीं पहुंचेगी और वातावरण भी सुरक्षित रहेगा।

पूजा के फूलों का उचित प्रबंधन :

नदियों में मूर्तियों के साथ अन्य कई सामग्रियां फल, फूल, अगरबत्ती एवं पूजा के कपड़े भी प्रवाहित किए जाते हैं। आजकल लोग धर्माकोल से बने मंदिर भी जल में प्रवाहित करते हैं।

इनके संभावित समाधान इस प्रकार हो सकते हैं:--

- नॉन-बायोडिग्रेडेबल चीजों का प्रयोग नहीं हो,

- सभी बायोडिग्रेडेबल चीजों को कम्पोस्ट किया जाये।

- फूलों को प्रवाहित करने के बजाय उन्हें खाने के लिए बांट दिया जाये।

- फूलों को रिसाइकल करके, उससे हस्त-निर्मित कागज एवं अन्य उत्पाद बनाए जाएं।

पोस्ट - खरोरा 493225
जिला-रायपुर (छ.ग.)

शालिनी मैडम अपने कार्यालय में किसी जरूरी कार्य में तन्मयता से लगी हुई थी। चौथी क्लास का एक विद्यार्थी शायद मैडम के काम से विराम लेने का अवसर देख रहा था। उसके हाथों में एक पेपर था। काफी देर खड़े रहने के बाद उसने धीमे से दबी आवाज में कहा—‘गुडमार्निंग, दीदी!’

शालिनी ने अपनी गर्दन ऊपर उठाई। एडमीशन फीस ले आए? शालिनी की आवाज में कड़ाई थी। पिछले कई दिनों से इस बालक के साथ यही प्रश्न दोहराया जाता रहा है। बच्चे ने पेपर के साथ अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा—“दीदी! यह मेरी मम्मी ने आपको देने के लिए कहा है।”

शालिनी ने उस पेपर को गौर से देखा। वह तो फीस नहीं एप्लीकेशन थी, जिसमें उसकी मां अपने बेटे हिमांशु की टी. सी. की मांग कर रही थी।

—अरे! क्या तुम लोग गांव छोड़कर शहर जा रहे हो या तुम्हारी मम्मी तुम्हें किसी अन्य स्कूल में दाखिला दिलाना चाहती है? उसे कुछ कारण भी तो बताना था।

—दीदी! मेरी मम्मी बहुत गरीब है। मुझे पढ़ाने के लिए अब उनके पास पैसे नहीं हैं। मम्मी कहती है, अब मुझे भी उसके साथ काम करना होगा। जब कुछ पैसा इकट्ठा हो जाएगा तो मैं फिर से पढ़ सकूंगा। कहते-कहते बच्चे का आत्मविश्वास झलक रहा था। पर, कल से वह स्कूल नहीं आ पाएगा, यह सोचकर उसका चेहरा अचानक रूआंसा हो गया।

शालिनी का दिल बर्फ की तरह पिघलता जा रहा था। वह सोचने लगी—आखिर कब तक हमारे देश की ये नन्ही जानें समय से पहले अपने आपको समझदार बनाने का भार ढोती रहेंगी? संवेदनशील होते हुए उसने कहा—तुम अपनी मम्मी को यहां ले आओ। मुझे उससे कुछ बात करनी है। बच्चा कार्यालय से बाहर चला गया और शालिनी अपने अतीत में डूब गयी....।

एक दिन शालिनी की शादी तय

सच्ची हमदर्दी

पूनम कुमारी



हो गई। जिसके साथ वह शादी करने जा रही थी, उस लड़के के पहले से दो बच्चे थे और दो साल पहले उसकी पत्नी उन्हें मंझधार में छोड़ भगवान को प्यारी हो गयी थी। चारों तरफ से पड़ने वाले दबाव के कारण शालिनी का मन न होते हुए भी उसे यह सब स्वीकार करना पड़ा था। पहली बार उसे अपने दुर्भाग्य का अहसास हुआ।

दुर्भाग्य हो या सौभाग्य, उसका निर्माता व्यक्ति स्वयं है यह अहसास होने में अभी भी कुछ देर थी

घर के लोगों ने शालिनी को विदा देकर संतोष की सांस ली। उसके जाने से सबके होश ठिकाने आ जायेंगे, ऐसा कहने वाली उसकी मां भी उसे भेजकर कोई बला टले जैसी खुशी मना रही थी; क्योंकि पिछले वर्षों में वह भी बहुत कुछ देख-जान चुकी थी।

शादी हुए एक सप्ताह भी नहीं बीता। घर में ऐसा झगड़ा होता, मानो शालिनी नई बहू बनकर नहीं झगड़े की झड़ी लेकर आई हो। यह सच है, झगड़े का कारण अभी तक शालिनी का स्वभाव नहीं, उन लोगों की धन के प्रति भूखी नजरें ही थीं। वे मुंहमांगी रकम लेकर भी तृप्त नहीं थे और शालिनी के पिता ने सामर्थ्य से भी इतना ज्यादा दिया था कि उसे शादी न कहकर सौदा कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। इस सौदे के लिए उसके पिता मजबूर थे; क्योंकि शालिनी उनके घर में किसी कबाड़खाने से भी ज्यादा अनुपयोगी समझी जाने लगी थी।

शालिनी अपने आपको चक्की के दो पाटों के बीच पीसती हुई अनुभव करने लगी। ससुराल धन के लालच में उसे पीड़ित कर रहा था तो मायके में

वह अपने स्वभाव के कारण शादी होते ही अधिकारविहिन हो चुकी थी। शायद उसकी शादी उसे उस अधिकार से वंचित करने के लिए ही की गई थी।

अब उसकी सोच एकमात्र अपने ऊपर ही टिक कर रह गई। उसे अपने दुर्भाग्य में अपने ही कर्तृत्व के पश्चाताप के साथ कुछ अहसास होने लगा। वह अपने जुआरी-शराबी व गुस्सैल पति तथा झगड़ालू सास को भी सहन कर शांति से रहना चाहती थी, पर उसका पूर्वकृत पाप शायद बहुत खुलकर अभिनय करना चाहता था। वह ज्यों-ज्यों शांत रहने का अभ्यास कर रही थी, सास व पति का उस पर बिगड़ना बढ़ता जा रहा था। क्योंकि; उनका मकसद उसके शांत रहने से नहीं, धन मिलने से ही सिद्ध हो सकता था। वह बुत बनकर सहती रही, अपने लिए नहीं, आने वाली एक नन्ही जान के लिए, जो उसकी कोख में अपना स्थान बना चुकी थी। पर शालिनी ने इसकी चर्चा किसी से भी नहीं की।

और, एक दिन जब शालिनी के पति ने धन के लिए शराब पीकर उसे बहुत बेरहमी के साथ यूं पीटा मानो वह कोई औरत नहीं सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी हो। शालिनी ने अब इस संसार में अपने जीवित रहने की कोई आवश्यकता नहीं समझी। अपने आपको खत्म करने में उसे धरती का भार कुछ हल्का ही होता प्रतीत हुआ; क्योंकि वह मायके जाकर और अधिक दुःखी नहीं होना चाहती थी।

अचानक उसके कानों में आवाज आई—तुम मरने की सोच रही हो, पर तुम अकेली नहीं हो, तुम्हारे साथ कोई और भी है। जिसने तुम्हारा आश्रय लिया है, उसे जन्म से पहले मार देने

का क्रूर निर्णय तुम कैसे ले सकती हो? तुम्हें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

शालिनी को लगा, उसकी कोख में पलने वाली नन्हीं जान चीख-चीखकर अपने जीवन की भीख मांग रही है। उसे लगा—उसके पापों का अन्त इतनी सरलता से नहीं हो सकता। वह मरना चाहकर भी जीने के लिए मजबूर है। उसे जीना ही होगा। कर्मों का कर्ज जो उतारना है। उसने अपना निर्णय बदल दिया। पर, इस घर में वह अब और नहीं रह पाएगी। उस नन्ही जान को लेकर सास व पति कोई बखेड़ा खड़ा करे उससे पहले वह वहां से सुरक्षित निकल जाना चाहती है।

उसने बची हुई सारी आशा को एक बार फिर बटोरा और मायके पहुंच गई। उसके भाईयों ने बताया, मां व पिता जी दोनों बीमार हैं। वे अभी हॉस्पिटल में भर्ती हैं। तुम ससुराल से भागकर आई हो, इस दुःख से दुःखी होकर वे और ज्यादा बीमार न हो जाएं, इस लिए अभी तुम्हारा मिलना उनसे उचित नहीं होगा। हम लोग उनकी देख-रेख में वैसे भी बहुत व्यस्त हैं, अतः तुम जाओ और जैसे-तैसे ससुराल में ही अपना मन लगाने की चेष्टा करो। लड़की के लिए ससुराल मन्दिर व पति ही देवता होता है। तुम अपने आपको बदलने की कोशिश करोगी तो सब अपने आप अच्छे हो जाएंगे। भाइयों की नजरों में तीखा व्यंग्य था।

शालिनी कैसे समझाए कि उन्हें मेरे स्वभाव से शिकायत नहीं, बल्कि पैसे से प्यार है और वह मैं कहां से लाऊं?

खैर, शालिनी वहां नहीं रही। समय के थपेड़े खा-खाकर वह अपने पैरों पर खड़ी हो गई। उसकी दृष्टि एकमात्र अपने बच्चे पर केन्द्रित थी। उसके जीवन का चरम और परम लक्ष्य बन गया—बच्चे का पोषण व पढ़ाई। वह स्कूल में काम करने लगी। उसके जीवन की गाड़ी खिंचती-सी चल रही थी।

बच्चे को होनहार बनाने के लिए उसे गांव की स्कूल में न पढ़ाकर शहर

के प्रसिद्ध स्कूल के हॉस्टल में दाखिल करा दिया तथा रात-दिन मेहनत करना उसकी मजबूरी बन गयी। अब वह अतीत को भूल भविष्य की कल्पनाओं में रंग भरने लगी। पर, उसका दुर्भाग्य अभी भी उसका पीछा कर रहा था।

उसके बच्चे को तीसरी क्लास में प्रवेश लेना था, पर अचानक उसे ज्वर हुआ और निमोनिया बिगड़ गया। शालिनी कर्ज लेकर भी उसे बचाने का हर संभव प्रयास कर रही थी।

इधर उसके एडमिशन की लेटफीस की तारीख भी निकल चुकी थी। वह फीस कैसे भरे? बच्चे को पढ़ाने से पहले तो बचाने की जरूरत थी और एक दिन, इधर बच्चा अंतिम सांसें गिन रहा था, उधर एक डाकिए ने कोरियर लाकर दिया, जिसमें उसके बच्चे की टी.सी. थी, क्योंकि वह फीस नहीं भर सकती थी। बच्चे को टी.सी. के साथ निकाल दिया गया था।

शालिनी ने अपने आपको इतना असहाय उससे पहले कभी अनुभव नहीं किया था। वह इस घटना के स्मरण मात्र से कांप सी गई और उसकी आंखों से आंसू बह निकले।

उसकी तरह कोई मां अपने बच्चे की फीस भरने में असमर्थ है, पर आखिर क्यों? इसे वह जानना चाहती थी, इसीलिए उसने हिमांशु को टी.सी. नहीं दी। वह उसकी मम्मी से मिलकर ही कुछ निर्णय करेगी।

‘दीदी! क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ—इस आवाज ने उसका ध्यान भंग किया। द्वार पर हिमांशु अपनी मम्मी के साथ खड़ा पूछ रहा था।

शालिनी ने उन्हें अन्दर आने का संकेत किया और जब उसकी मम्मी को निकटता से देखा तो उसकी आंखें आश्चर्य के साथ फैल गईं। वह बुदबुदायी — शान्ता! तु...म? तुम यहां रहती हो? यह हिमांशु तुम्हारा बच्चा है? अपनी तलाकशुदा भाभी को सामने देख शालिनी एक विचित्र-सी स्थिति का अनुभव कर रही थी। शालिनी के

बदले स्वभाव ने द्वेष की जगह सहानुभूति का स्थान ले लिया था।

उसने शान्ता की पूरी कहानी सुनी। शान्ता ने जो कष्ट सहे, उन्हें भोगना तो दूर सुनने में भी वह अपने आपको असमर्थ पा रही थी। उसके कष्टों में किसी हद तक वह अपना ही हाथ मान रही थी। अपने आपको ही जिम्मेवार समझ रही थी। उसने शान्ता में अपने आपको देखा और हिमांशु में आकाश को।

शान्ता! अब यह तेरा दर्द नहीं, मेरा भी दर्द है। तुम चिन्ता मत करो। हिमांशु मात्र तेरा नहीं, मेरा भी बच्चा है। मैं उसमें आकाश को देख रही हूँ। अब इसकी टी.सी. निकलवाने की कोई जरूरत नहीं। उसे पढ़ना है और हर हालत में पढ़ना है। शालिनी कहती चली गई। पर पर शालिनी! अभी मेरे पास इतने पैसे नहीं होंगे....।

वही तो मैं कह रही हूँ। अब इसके भविष्य के कैनवास में तुम और मैं दोनों मिलकर रंग भरेंगे। विधाता ने शायद इसीलिए तुम से मुझको मिलाया है। मेरे पापों का इससे बढ़िया प्रायश्चित और क्या हो सकता है। शालिनी के भीतर हमदर्दी का सागर हिलोरें ले रहा था। हमदर्दी से बढ़कर कोई धर्म नहीं, पापों के प्रायश्चित के लिए इससे सुन्दर साधन नहीं, यह शालिनी के दिमाग में खटाखट बैठ गया था।

शान्ता व हिमांशु को देख उसका दिल दर्द से घायल हुआ तो उनके प्रति हमदर्दी से उसका दर्द हल्का भी हो रहा था। उसे लगा—उसका टूटा हुआ आकाश एक बार फिर उसके ऊपर छा रहा है।

उसने शान्ता व हिमांशु को अपने साथ ही रख लिया और शान्ता को अपने ही स्कूल में नौकरी भी दिला दी। शालिनी की जिन्दगी का कोई खालीपन अब भरने जा रहा था। उसने हिमांशु को गले लगा लिया। शान्ता हमदर्दी ‘दे या ले’ के असमंजस में अब भी बुत की भांति खड़ी थी....।

72, कैलाश पार्क अर्थला,
पोस्ट-मोहन नगर 201007

वर्तमान युग की जटिल समस्या है तनाव। आज हर मानव तनाव की दुनिया में जी रहा है। अनियमित दिनचर्या, सामाजिक रीति-रिवाजों का दबाव, व्यापारिक स्पर्धाएं, आकस्मिक दुर्घटनाएं आदि मानसिक तनाव उत्पन्न कर देती हैं। आज तनाव अपवाद न होकर दिनचर्या का अंग बन गया है। व्यक्ति रात-दिन तनाव की शरण में ही रहता है तथा तनाव से निजात पाने के लिए व्यसन की ओर कदम बढ़ाता है। व्यसन का तात्पर्य समझाते हुए एक संस्कृत कवि ने लिखा है--“व्यस्यति



देश के नैतिक व चारित्रिक विकास तथा राष्ट्रीय भावना के विकास के लिये नशामुक्ति आवश्यक है। व्यसनमुक्ति से ही चरित्रनिष्ठ एवं उन्नत राष्ट्र का निर्माण संभव है। जिस देश की युवा पीढ़ी व्यसन ग्रस्त है, वह देश कभी सुख और समृद्धि के शिखर को छू नहीं सकता।

नशा है नाश का द्वार

साध्वी कनकरेखा

पुरुषं श्रेयसः इति व्यसनं जो व्यक्ति को श्रेय मार्ग से हटाकर विनाश के मार्ग पर ले जाता है, वह व्यसन कहलाता है।

दुर्व्यसन एक ऐसी आग है, जिसमें कर्तव्याकर्तव्य का विवेक, सत्यनिष्ठा, करुणा, सहिष्णुता आदि सारे गुण भस्म हो जाते हैं। नशे से अपराध चेतना जागती है जो बाह्य और आंतरिक जीवन को खोखला बना देती है। जिसका परिणाम न केवल परिवार को बल्कि देश और समाज को भी भोगना पड़ता है। इसी कारण आज कुंठा, निराशा, मानसिक तनाव, लड़ाई-झगड़े दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं।

आज व्यसनों की बाढ़ सी आ गई है। बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, शराब, पान-मसाले इत्यादि व्यसन द्रुत गति से बढ़ रहे हैं। इन व्यसनों से व्यक्ति केवल शारीरिक, मानसिक बीमारी से ही ग्रसित नहीं होता है बल्कि इससे धन की बर्बादी तो होती ही है साथ ही इज्जत भी खराब होती है। इससे भी आगे आत्मा का पतन होता है। फिर भी इस नशे की प्रकृति से आबाल वृद्ध जुड़ा हुआ है। कोई वेग ऐसा

नहीं जो इस प्रवृत्ति से अछूता हो। खेद का विषय है कि युवा वर्ग इस क्षेत्र में सबसे आगे है। कहा है--

“युवा पीढ़ी फंसी है नशे के पाश में,
जी रही है जहरीले धुएं की सुवास में
सुख के गमले कैसे हो विकसित
जब जन्म से ही तैनात है
तोड़-फोड़ विनाश में।।”

समाज में हिंसात्मक, तोड़-फोड़मूलक प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं। नशे की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने में विज्ञापन की भी अहं भूमिका रही है। नशे के दुष्परिणाम ने मानव संस्कृति को विकृत बना दिया है। दुकान, मकान, धर्मशाला आदि कोई ऐसा स्थान नहीं जहां इसका सेवन नहीं। दुख की बात है कि यह विकृति विद्यालयों में भी प्रवेश पा चुकी है। जो विद्या का पवित्र आलय है, जहां जीवन का निर्माण होता है, वहां विनाश का बीज-व्यसन अपने पांव फैला रहा है। नशे ने जीवन की पवित्रता को खत्म कर दिया है, जिससे मनुष्य में अपराध की चेतना जागृत होती है।

नशा विनाश का द्वार है। तम्बाकू के

अधिक सेवन से शरीर के प्रत्येक अवयव प्रभावित होते हैं। बीड़ी, सिगरेट, पान-मसाला, गुटखा, जर्दा आदि शरीर के लिए अत्यन्त घातक हैं। तम्बाकू में अधिक प्रचलित सिगरेट है, यह जिस कागज से बनती है, वह एक विशेष प्रकार के घोल से बनता है, उसमें सखिया का मिश्रण होता है। जब वह कागज जलता है तब उससे फरफरोल नामक नया विष उत्पन्न हो जाता है। जो मस्तिष्कीय ज्ञान-तंतु को मंद करता है। नाक, कान, आंख आदि इन्द्रियों की शक्ति का क्षरण होता है। बीड़ी, सिगरेट पीने वाले तो प्रभावित होते ही हैं, अन्यान्य लोग उस वातावरण में सांस लेने वाले भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। अमेरिकी डॉक्टर आल्टन ओशनर ने शोध कर बताया है कि नशा करने वालों की संतान भी इस विष के कारण शारीरिक व मानसिक दृष्टि से कमजोर व विकलांगता को प्राप्त होती है। इसके अलावा सिगरेट में चार हजार रसायनों का मिश्रण भी बताते हैं। जिसमें निकोटीन और मोनोआक्साइड आदि सम्मिलित हैं।

कुछ रसायन श्वास नली से शरीर के भीतर गले की नली व फेफड़ों में कैंसर का कारण बनते हैं। कुछ रक्त में समा जाते हैं, जिससे गुर्दे व मूत्राशय का कैंसर हो जाता है। तम्बाकू में 24 प्रकार के घातक

विष होते हैं। इसकी खेती गुजरात में अधिक होती है। वहां की महिलाएं तम्बाकू की पत्तियां हाथ से तोड़ती हैं। डॉक्टरी जांच करने से पता चला कि पत्ती तोड़ने मात्र से उनके शरीर में प्रचुर मात्रा में निकोटिन पाया गया है, और जो इसे अधिक मात्रा में खाते हैं उनका तो कहना ही क्या? डॉक्टरों का कहना है कि प्रतिदिन एक बीड़ी व सिगरेट पीने वाले मनुष्य की आयु औसतन छः मिनट कम हो जाती है। इस प्रकार जो प्रतिदिन 20 सिगरेट पीता है उसकी करीब 12 वर्ष की आयु घट जाता है। किडनी का फेल होना, हार्ट अटैक, लीवर, कैंसर, दमा, अस्थमा आदि बीमारियां अधिकांशतः मादक पदार्थों के सेवन से होती हैं।

मादक पदार्थों में शराब भी एक भयानक पेय पदार्थ है। इससे लाखों घर बर्बाद हुए हैं। शराब में एक प्रकार का विष होता है। जो सारे शरीर में फैल जाता है। रक्त नाड़ियों व दिमाग के कार्यों में विघ्न डालता है। इसीलिए शराब पीने वाले व्यक्ति का दिमाग नियंत्रण में नहीं रहता। वह अनेक अपराधों का भागीदार बन जाता है। शराब पीने से मुंह में दुर्गंध आती रहती है। मानवीय संबंधों में परिवर्तन आ जाता है। पत्नी व परिवार के साथ लड़ाई-झगड़ा चालू रहता है और कभी मारपीट भी होती है। पारिवारिक व सामाजिक दृष्टि से त्रासदी को प्राप्त करता हुआ भी वह उसे छोड़ता नहीं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के सर्वेक्षण अनुसार भारत में प्रत्येक महीने में 140 करोड़ से अधिक एवं वर्ष में 16 अरब 80 करोड़ रुपये के तम्बाकू का सेवन किया जाता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि फेफड़ों के कैंसर से ग्रसित होने वालों में 90 प्रतिशत तम्बाकू, पान मसाला खाने वाले लोग होते हैं। दमा व हृदय रोगों से ग्रसित होने वालों में भी ऐसे लोगों की संख्या ज्यादा रहती है। गला, पेट और मुंह

के रोगों में अधिकांश धूम्रपान करने वाले ही होते हैं।

नशा करने के कई कारण हो सकते हैं। कुछ लोग शौक के रूप में थोड़ा शुरू करते हैं फिर आदत बन जाती है। कुछ तनाव व दुःख को कम करने के लिये सेवन करते हैं। कुछ सोसायटी के नाम पर उचित अनुचित करने को तैयार रहते हैं। उनकी सोच इतनी छोटी है कि उन्हें कोई बैकवर्ड न समझे। इसलिए शुरू कर देते हैं। कुछ बुरी संगति के कारण गलत आदतों के शिकार हो जाते हैं। नशे का एक कारण अज्ञान भी है। अज्ञानी व्यक्ति को हित अहित का बोध नहीं रहता, वह प्रायः गतानुगतिक होता है। प्रारंभ में तो व्यक्ति सुखानुभूति के लिए नशीले पदार्थ खाता है। कालांतर में नशा व्यक्ति को खाने लग जाता है। फिर चाहने के बाद भी नशामुक्त होना कठिन हो जाता है, पर असंभव नहीं है।

देश के नैतिक व चारित्रिक विकास तथा राष्ट्रीय भावना के विकास के लिये नशामुक्ति आवश्यक है। व्यसनमुक्ति से ही चरित्रनिष्ठ एवं उन्नत राष्ट्र का निर्माण संभव है। जिस देश की युवा पीढ़ी व्यसन ग्रस्त है, वह देश कभी सुख और समृद्धि के शिखर को छू नहीं सकता।

व्यसनों से छुटकारा पाने के दो रास्ते हैं—कानून और हृदय परिवर्तन। कानून से मन पर नियंत्रण नहीं होता। नियंत्रण के बिना व्यक्ति नशामुक्त नहीं होता। वर्तमान

युग में कानून व उपदेश जितना असर नहीं करता उतना असर करता है प्रयोग। गणाधिपति आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ ने अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान जैसे दो महान् उपक्रम दिये हैं, जो सिद्धांत व प्रयोगों के माध्यम से नशे की आदतों को बदल रहे हैं। उनके द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत एक ऐसा आंदोलन है जो प्रवृत्ति से पहले परिणाम पर ध्यान देता है। अणुव्रत आचार-संहिता उसी पर आधारित है। उसका नियम है—मैं नशीले, मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करूंगा। दृढ़ संकल्प के द्वारा रूपांतरण घटित हो सकता है। बुरे संस्कारों को क्षीण कर श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है।

प्रेक्षाध्यान एक वैज्ञानिक पद्धति है, जिसमें प्रयोगों के माध्यम से व्यक्ति को नशामुक्त बनाया जा रहा है। जो भाई-बहिन नशे से मुक्त होना चाहते हैं वे निम्नांकित चार प्रयोग प्रतिदिन कर सकते हैं:--

1. **दीर्घश्वास** - चित्त को नासाग्र पर केन्द्रित कर गहरा और लंबा श्वास लें, और गहरा लंबा श्वास छोड़ें।

2. **अनुप्रेक्षा** - दर्शन-केन्द्र पर चित्त को केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा का प्रयोग करें।

3. **संकल्प-शक्ति का प्रयोग** - व्यसनमुक्ति का संकल्प बार-बार दुहराएं।

4. **हरे रंग पर ध्यान** - अप्रमाद केन्द्र पर हरे रंगा का ध्यान करें एवं कान पर ऊपरी, मध्य व निचले भाग पर खिंचाव दें।

उक्त चारों प्रयोग आदत परिवर्तन के अचूक उपाय हैं। इनके सतत् अभ्यास से जटिल आदतों को बदला जा सकता है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से दिन में पचास-पचास बार बीड़ी, सिगरेट व जर्दा खाने-पीने वालों की आदत भी छूट सकती है। अपराधी एवं आक्रामक मनोवृत्ति से मुक्ति पाई जा सकती है। अणुव्रत से हृदय परिवर्तन कर व्यक्ति आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण कर सम्मानित जीवन जी सकता है।



निम्न रक्तचाप और प्रेक्षा चिकित्सा

मुनि किशनलाल

शरीर में रक्त की आपूर्ति धमनियों द्वारा होती है। हृदय सम्पूर्ण शरीर में पम्प करके रक्त को पहुंचाता है। सामान्य रक्तचाप से नीचे रहने वाले रक्तचाप को निम्न रक्तचाप कहते हैं। निम्न रक्तचाप होने से प्राणधारा असंतुलित हो जाती है। रक्त प्रवाह भी धीरे हो जाता है। शरीर को ऊर्जा रक्त से ही प्राप्त होती है। रक्तचाप के सामान्य से कम हो जाने के कारण शरीर की ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति अपेक्षानुसार नहीं हो पाती है। व्यक्ति सुस्त और आलसी होने लगता है। निम्न रक्तचाप से व्यक्ति को घबराहट, चक्कर आने से कहीं गिर सकता है।

शरीर में प्राणऊर्जा की कमी से रक्तचाप निम्न हो जाता है। सामान्य रक्तचाप 120-80 तक होता है। जिस प्रकार उच्च रक्तचाप से अनेक बीमारियां होती हैं उसी प्रकार निम्न रक्तचाप से भी व्यक्ति अस्वस्थ हो जाता है। कार्यक्षमता घट जाती है। स्फूर्ति नहीं रहती है। प्रेक्षाध्यान चिकित्सा पद्धति में इसका उपचार निम्न प्रयोगों द्वारा किया जाता है।

1. **कायोत्सर्ग**—बाएं पार्श्व शयन के साथ।

2. **आसन**—सुप्त ताड़ासन, उत्तानपादासन, शशांकासन, पद्मासन, सिद्धासन।

3. **प्राणायाम**—कपालभाति, उज्जाई, सूर्यभेदी और भस्त्रिका। भोजन से पूर्व सूर्य स्वर का प्रारम्भ। भोजन के पश्चात सीधे लेटकर आठ श्वास-प्रश्वास, दाईं करवट, सोलह और बाईं करवट लेटकर बत्तीस श्वास प्रश्वास करें।

4. **प्रेक्षा**—दर्शन केन्द्र पर लाल रंग का ध्यान।

5. **अनुप्रेक्षा**—शरीर में प्राण की सक्रियता का सुझाव — “मेरा प्राण प्रवाह संतुलित हो रहा है।

6. **जप** — ॐ

7. **तप** — गरिष्ठ और तली हुई वस्तुओं का वर्जन।

8. **मुद्रा** — प्राण मुद्रा

9. **रंग** — पीला और लाल रंग प्राण को उत्तेजित करता है। प्राण सक्रिय होने से निम्न रक्तचाप सामान्य होने लगता है। कायोत्सर्ग की स्थिति में दाहिने मस्तिष्क में रक्त के सामान्य होने की संकल्पना के मानसिक चित्र से व्यक्ति स्वस्थ बन सकता है।

उपरोक्त प्रयोगों को समझकर इस प्रकार करें —

1. **कायोत्सर्ग** —

शुद्ध प्राणवायु वाले स्थान का चयन करें। साफ जगह में आसन लगा कर दक्षिण पार्श्व से शयन करें। शरीर को स्थिर करें। शिथिल होने का सुझाव दें, शरीर का प्रत्येक अंग शिथिल हो रहा है। पूरी जागरूकता के साथ शरीर और

चेतना के भेद को समझें। प्राणशक्ति को मजबूत करने का सुझाव दें। एक-एक कोशिका में प्राणशक्ति सक्रिय हो रही है। रक्तचाप संतुलित हो रहा है, संतुलित हो गया है। ऐसी भावना करें।

आसन : सुप्त ताड़ासन —

1. आसन पर सीधे लेटें। दोनों हाथों की अंगुलियों को एक-दूसरे में फंसाकर श्वास भरते हुए हाथों को सिर की ओर ले जाएं।
2. श्वास छोड़ते हुए शरीर को तनाव दें।



3. श्वास भरते हुए हाथों को नीचे लाएं।
4. श्वास छोड़ते हुए शरीर को शिथिल करें।

उत्तानपादासन

1. आसन पर सीधे लेटें। श्वास भरते हुए बिना घुटने मोड़े पैरों को 30 डिग्री ऊपर लाएं।
2. श्वास छोड़ते हुए पैरों को धीरे-धीरे नीचे लाएं।
3. श्वास भरते हुए पैरों को 60 डिग्री ऊपर उठाएं।
4. श्वास छोड़ते हुए पैरों को धीरे-धीरे नीचे लाएं।



शशांकासन

1. आसन पर वंदना आसन या वज्रासन की मुद्रा में बैठकर, श्वास भरते हुए दोनों हाथों को ऊपर ले जाएं।
2. श्वास छोड़ते हुए नीचे झुकें। मस्तक जमीन पर लगाएं। हाथ मिले हुए सीधे रहें।

3. श्वास भरते हुए हाथ, कमर, गर्दन को उठाते हुए हाथों को पुनः ऊपर उठाएं।
4. श्वास छोड़ते हुए हाथों को नीचे लाएं, घुटनों पर रखें।

सिद्धासन

1. सुखासन में बैठें। बाएं पैर की एड़ी को गुदा तथा मुत्रेन्द्रिय के मध्य खाली स्थान पर लगाएं।
2. दाएं पांव को उठाकर बाएं पैर के ऊपर वाले टखने पर टिकाएं। पैर के पंजे नितम्ब तथा पिण्डलियों के बीच रहेंगे।

- मेरुदण्ड सीधा, दृष्टि नासाग्र पर या आंखें कोमलता से बन्द। हाथों की मुद्रा वीतराग या ज्ञान मुद्रा।
- श्वास-प्रश्वास दीर्घ और मन्द गति से लें और छोड़ें।



लाभ

- प्राणशक्ति का विकास होता है। निम्न रक्तचाप में लाभ होता है।
- साधना की सिद्धि के लिए यह सहयोगी बनता है।
- ध्यान और समाधि में यह उत्तम आसन है।

प्राणायाम

कपाल भाति प्राणायाम : कपाल का अर्थ है मस्तक तथा भाति का अर्थ है कांति, प्रकाश। दीर्घ, बोध, ज्ञान होता है। इस प्राणायाम का प्रयोग सम्पूर्ण मस्तिष्क को सक्रिय करने के लिए तथा उसकी क्षमता को बढ़ाने के लिए किया जाता है। मस्तिष्क को सक्रिय और रचनात्मक रखने के लिए यह प्राणायाम अति उत्तम है। प्राणायाम में कपाल याने मस्तिष्क की ऊर्जा को सक्रिय करने के लिए श्वास सहज भाव से लिया जाता है और तेजी से छोड़ा जाता है। इससे मस्तिष्क की कोशिकाएं या न्यूरॉन सक्रिय हो जाते हैं। इसलिए इसका नाम "कपाल भाति प्राणायाम" है। इसे एक मिनट से शुरू करके धीरे-धीरे पांच मिनट तक बढ़ाया जा सकता है। इससे प्राण की सक्रियता बढ़ती है जिससे निम्न रक्तचाप संतुलित होता है।

उज्जाई प्राणायाम : सुखासन में स्थिरता से बैठ कर ज्ञान मुद्रा लगाएं। जीभ के अग्रभाग को मोड़कर तालू से सटाएं। स्वरयंत्र कंठ को स्पर्श करते हुए श्वास लें और छोड़ें। कंठ से खर्राटे जैसी मधुर ध्वनि श्वास छोड़ते समय करें।

लाभ : रक्तचाप संतुलित होता है। नाड़ी संस्थान को शक्ति प्रदान करता है। श्लेष्मा रोग में लाभ होता है। टॉसिल, खांसी, जुखाम में लाभकारी है।

सूर्यभेदी प्राणायाम :

पहला प्रकार — बाएं नथुने को बन्द करें। दाएं नथुने से श्वास लें और दाएं नथुने से श्वास छोड़ें।

दूसरा प्रकार — दाएं नथुने से श्वास लें और बाएं नथुने से श्वास छोड़ें।

लाभ : शरीर में सक्रियता आती है। रक्तचाप संतुलित होता है। सर्दी, जुकाम, दमें में भी लाभदायक है।

भस्त्रिका प्राणायाम — तीव्र गति से श्वास लें और तीव्र गति से छोड़ें। श्वास लेते समय पेट फूले और निकालते समय सिकुड़े। कुछ समय बाद लिये गये श्वास को कुछ समय रोके अर्थात् कुम्भक करें। फिर इसी क्रिया को बाएं नथुने से लेकर दाहिने से छोड़ें और दाहिने से लेकर बाएं से छोड़ें। क्रमशः यह क्रिया करें।

लाभ : प्राणशक्ति तीव्र बनती है। वात, पित्त, कफ आदि

की शिकायतें दूर होती हैं। गले के रोग दूर होते हैं। खांसी में लाभदायक है। हृदय को शक्ति प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया से खून तथा श्वास की नशों के विकार दूर होते हैं। कुण्डलिनी जागरण के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है।

विशेष : भोजन शुरू करते समय सूर्यस्वर चालू रहने से पाचन क्रिया ठीक होती है। सूर्य स्वर को चालू करने के लिए दाईं तर्जनी अंगुली को गोल मोड़कर अंगूठे से दबाएं तब सूर्य स्वर चालू हो जाता है। भोजन के बाद सीधे पेट के बल लेटें, बाईं करवट लेकर सो जाइए। 2-3 मिनट में सूर्य स्वर चालू हो जाएगा।

भोजन के बाद सीधे सो जावें। मेरुदण्ड को सीधा रखें। चित्त को दर्शन केन्द्र पर केन्द्रित करें। दर्शन केन्द्र अर्थात् भृकुटि के बीच का स्थान, जिसे आज्ञा चक्र भी कहते हैं। उदय होते हुए सूर्य के समान लाल रंग की कल्पना करें। यह प्रयोग कम से कम 5 मिनट करें। लाल रंग का ध्यान निम्न रक्तचाप को संतुलित करने में सहायक होता है।

अब अपने चित्त को दाहिने पैर के अंगूठे से लेकर शरीर के प्रत्येक भाग पर ले जाएं। एक-एक अंग पर ध्यान केन्द्रित कर वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। पहले अधोलोक, अर्थात् पैरों के अंगूठे से कटि भाग तक, की प्रेक्षा करें। इसके पश्चात् मध्यलोक, कटि से कंठ तक और अन्त में उर्ध्वलोक, अर्थात् कंठ से सिर तक की यात्रा करें। वहां पर होने वाले प्राण के प्रकम्पनों का अनुभव करें। यह प्रयोग भी प्राणशक्ति को विकसित करने में बहुत सहायक होता है।

अनुप्रेक्षा : ध्यान अवस्था में रहें। शरीर को सुझाव दें— "मेरा प्राण प्रवाह संतुलित हो रहा है।" इस वाक्य को नौ बार उच्चारित करें। फिर नौ बार इसी वाक्य का मानसिक जप करें। इस क्रिया को कम से कम 15 मिनट करें।

जप : "ऊँ" का जप 10 मिनट करें। जप करते समय उसी में लीन हो जाएं।

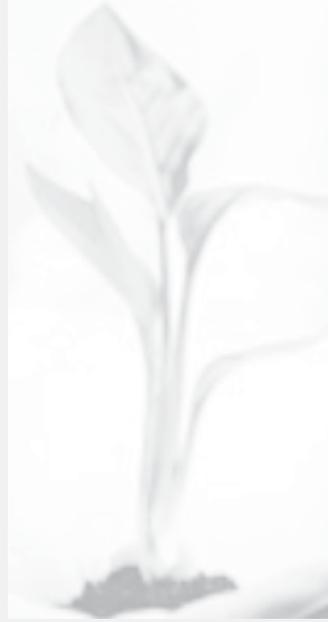
तप : गरिष्ठ भोजन का त्याग करें। तली हुई वस्तुएं जो पाचन क्रिया को विकृत करती हैं का त्याग करें। संतुलित और सात्विक भोजन संतुलन पैदा करता है।

मुद्रा : प्राण मुद्रा का प्रयोग करें। कनिष्ठा और अनामिका के अग्रभाग अग्रभाग और अंगूठे के अग्रभाग को मिलाएं। शेष अंगुलियों को सीधा रखें।

लाभ : इस मुद्रा के प्रयोग से प्राण का संचार सम्यक् रूप से होने लगता है। प्राण संचार गति ठीक होने से निम्न रक्तचाप अपने आप ठीक एवं व्यवस्थित होने लगता है।



निष्कर्ष : किसी प्रकार शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक तनाव से, अवसाद की स्थिति से बचें। सभी प्रकार की घटनाओं को देख कर, समझ कर, सहजता से स्वीकार करें। सभी घटनाओं के प्रति सम रहें। प्रेक्षा चिकित्सा का सतत अभ्यास ही लाभकारी है।



बढैं संयम पथ पर



लोकमान्य गोल्छा

अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)

फोन नं. : 4250001/4249939 (D)

फैक्स : 00977-1-4249723

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में विभिन्न आयोजन

केलवा, ११ अगस्त। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में साहित्य समिति द्वारा प्रातःकालीन कार्यक्रम में गीत गायन प्रतियोगिता की समायोजना की गई। इस प्रतियोगिता में ३६ साधु-साध्वियों ने धर्मसंघ के आचार्यों द्वारा रचित गीतों की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, मुनि विजयकुमार, साध्वी जिनप्रभा एवं साध्वी शारदाश्री ने इस प्रतियोगिता के निर्णायक के रूप में अपनी भूमिका निभाई। प्रतियोगिता में मुनि महावीरकुमार ने प्रथम, साध्वी चारित्र्यशा ने द्वितीय एवं मुनि जंबूकुमार (मिंजूर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। मुनि प्रशमकुमार, मुनि सुधांशुकुमार, साध्वी विवेकश्री और साध्वी संगीतप्रभा को प्रोत्साहन पुरस्कार हेतु चयनित किया गया। प्रतियोगिता के उपरान्त मुनि सुखलाल ने अपने विचारों को अभिव्यक्ति दी। साध्वी जिनप्रभा ने प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए। प्रतियोगिता का संचालन मुनि जितेन्द्रकुमार ने किया।

आचार्य महाश्रमण ने इस अवसर पर कहा—‘दो दिनों तक गीत गायन प्रतियोगिता चली। जैसे तो अंकन करना निर्णायकों का काम होता है, किन्तु साथ में मैं भी अंकन कर रहा था। मुनि महावीरकुमार ने बहुत सुन्दर और सरस प्रस्तुति दी। साध्वी चारित्र्यशा भी अच्छा गाती हैं। मुनि जंबूकुमार ने भी अच्छा गाया। अन्य अनेक साधु-साध्वियों ने भी सुन्दर प्रस्तुति दी। संगान भी एक अच्छा उपक्रम है, प्रयास है। यह प्रयास बढ़ता रहे।’ आचार्यश्री ने अनुग्रह करवाते हुए प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं एवं अन्य सभी संगायकों को क्रमशः इक्कीस,

इक्कीस, ग्यारह, नौ एवं सात कल्याणक बख्शीश किए।

१२ अगस्त। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। उन्होंने आते ही आचार्यवर का अभिवादन करते हुए कुशलपृच्छा की। आचार्यश्री ने मोहन भागवत के साथ कुछ समय वार्तालाप किया। तत्पश्चात् आचार्यवर के सान्निध्य एवं मुख्य अतिथि भागवत की उपस्थिति में आचार्यवर की नवीनतम कृति ‘सुखी बनो’ का लोकार्पण समारोह आयोजित हुआ। अपराह्न में भागवत पुनः आचार्यश्री के उपपात में उपस्थित हुए और एक घंटे से अधिक समय तक वार्तालाप किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण की नवीनतम कृति ‘सुखी बनो’ का लोकार्पण हुआ। जैविभा द्वारा प्रकाशित यह कृति आचार्य महाश्रमण की उत्तराध्ययन और गीता पर आधारित प्रलंब प्रवचन शृंखला का प्रथम खण्ड है। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संस्कृत पत्रिका ‘भारती’ का आचार्य महाप्रज्ञ विशेषांक पत्रिका के प्रबंध संपादक सुदामा शर्मा ने आचार्यश्री को उपहृत किया। शंकरप्रसाद शुक्ल ने इस संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा—‘राष्ट्र संत आचार्य तुलसी के समय से ही तेरापंथ के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का जो आत्मीय संबंध रहा है, उसी कारण आचार्यश्री के दर्शन करने मैं यहाँ आया हूँ। भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता अनादिकाल से रही है। उस एकता का दिग्दर्शन तेरापंथ में होता आ

रहा है। आचार्य तुलसी के समय से सतत आध्यात्मिक और नैतिक उद्बोधन के साथ-साथ समन्वय और एकता का प्रयोगात्मक रूप में तेरापंथ में देख रहा हूँ।’

पुस्तक के संदर्भ में भागवत ने कहा—‘सृष्टि का जीवन सुखी बनाने के लिए संतों की परंपराएं सदैव सचेष्ट रही हैं। उसी धारा को अस्खलित रूप में बढ़ाने का काम तेरापंथ में चल रहा है। इसीलिए तेरापंथ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आत्मीय संबंध बना है। ‘सुखी बनो’ पुस्तक उस धारा को आगे बढ़ाने वाली और सहजता से सबकी समझ में आ सकने वाली पुस्तक है। जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने उपनिषदरूपी दूध का निचोड़ गीतारूपी मक्खन में उपलब्ध कराया, वैसे ही आचार्यश्री ने इस पुस्तक में दोनों ग्रंथों का निचोड़ सबके लिए सुपाच्य रूप में उपलब्ध करा दिया है। यह पुस्तक सुखी बनने के भारतीय पंथ का विशद विवेचन करती है। यह केवल पठनीय ही नहीं, आचारणीय पुस्तक है। इस पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम में उपस्थित होने का मुझे अवसर मिला, यह मेरा परम सौभाग्य है।’

पुस्तक के संपादन के संदर्भ में आचार्यश्री ने कहा—‘मेरा कार्य वक्तव्य देना था। उन वक्तव्यों को सजाने-संवारने और पुस्तक का

आकार देने में साध्वी सुमतिप्रभा ने अत्यन्त निष्ठापूर्ण श्रम किया है। ऐसा लगता है कि इन्होंने मेरे साहित्य का संपादन करना मानों अपने जीवन का मिशन बना लिया है। समर्पण और निष्ठा भावना के साथ ये इस काम में लगी रहती हैं। कार्य करते-करते इनका अध्ययन भी बढ़ सकेगा और इस कार्य में ये दक्षता भी अर्जित कर सकेंगी।’

तेरापंथ और आर. एस. एस. के दीर्घकालीन संबंधों की चर्चा करते हुए आचार्यश्री ने कहा—‘राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ तेरापंथ का संबंध रहा है। आज सरसंघचालक मोहन भागवत आए हैं तो मानो इतिहास की पुनरावृत्ति हो रही है।’

१३ अगस्त। आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य एवं सरसंघचालक मोहन भागवत की उपस्थिति में आर.एस.एस. द्वारा राजसमन्द जिलास्तरीय स्वयंसेवक समागम के रूप में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में राजसमन्द जिले के हजारों स्वयंसेवक निर्धारित गणवेश में उपस्थित थे। कार्यक्रम में प्रार्थना एवं परिचय के बाद गीत प्रस्तुत किया गया। सरसंघचालक भागवत ने स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए उन्हें अनुशासित, संयमित एवं निष्ठापूर्ण बने रहने की प्रेरणा दी।

आचार्यप्रवर ने स्वयंसेवकों



असली आजादी का आनन्द : आचार्य महाश्रमण

को संबोधित करते हुए कहा--'मेरे सामने बड़ी संख्या में स्वयंसेवक बैठे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक व्यवस्थित और अनुशासित संगठन है। शाखा वह माध्यम है, जिसके द्वारा कार्यकर्ताओं में अच्छे संस्कार भरे जा सकते हैं। स्वयंसेवक अर्थात् कार्यकर्ता वह होता है, जो दूसरों के लिए कार्य करता है। यदि उसमें सेवाभावना, सहिष्णुता, विनम्रता, निर्भीकता, दक्षता, नैतिकता आदि गुण विकसित होते हैं तो उसका कार्यकर्तृत्व और अधिक निखार को पा सकता है।'

१४ अगस्त। आचार्य महाश्रमण की पावन सन्निधि में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की चतुर्थ राष्ट्रीय कान्फ्रेंस द्विदिवसीय आयोजन का प्रारंभ हुआ। उद्घाटन कार्यक्रम में संजय भानावत ने गीत प्रस्तुत किया। फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेन्द्र शामसुखा, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी एवं प्रायोजक पंकज ओस्तवाल ने समागत प्रोफेशनल्स का स्वागत किया। प्रभारी मुनि रजनीशकुमार ने सम्मेलन का विषय प्रतिपादित किया। फोरम की सभी शाखाओं के सदस्यों एवं पदाधिकारियों को शामसुखा ने शपथ दिलाई। संजय धारीवाल ने टी.पी.एफ. न्यूज लेटर के बारे में अवगति देते हुए उसे पूज्यचरणों में उपहृत किया। प्रकाश मालू ने निर्देशिका भेंट की। शासन गौरव मुनि धनंजयकुमार ने संभागियों को संबोधित किया।

सभी प्रोफेशनल्स को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने कहा--'फोरम से जुड़ा हर सदस्य नशामुक्त बने और समाज को भी व्यसनमुक्त बनाने का सलक्ष्य प्रयास करे। दूसरों को अच्छा बनने की सीख देने का अधिकारी वह हो

सकता है, जो स्वयं अच्छा हो। प्रोफेशनल्स के पास बौद्धिक संपदा है। वे अपने प्रोफेशन के साथ धार्मिक साहित्य का भी अध्ययन करें। सभी को होमवर्क दिया जाना चाहिए और अगले अधिवेशन के लिए अभी से तैयारी शुरू कर देनी चाहिए।'

दो दिन तक चली प्रोफेशनल फोरम की कान्फ्रेंस में आचार्यश्री की प्रेरणा और पाठ्य प्राप्त हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा एवं मुख्यनियोजिका के अभिभाषण हुए। विभिन्न सत्रों में मुनि उदितकुमार, मुनि धनंजयकुमार, मुनि कुमारश्रमण, साध्वी शशिप्रभा, डॉ. जयशंकर, डॉ. मनीष सिन्हा ने विविध विषयों पर प्रशिक्षण दिया। अधिवेशन की सफलता में फोरम प्रभारी मुनि रजनीशकुमार का निष्ठापूर्ण श्रम और प्रेरणा रही। इन्द्रचन्द्र दुधोड़िया, सलिल लोढ़ा, डी.सी.सुराना, विजय कोठारी, एस.पी. मेहता, सुशील चोरड़िया, प्रकाश बैद, देवेन्द्र कच्छारा, कैलाश बाफना, बलवंत चोरड़िया, कपिल इंटोदिया, सुनील कोठारी, डॉ. जी. एल. जैन एवं जया राखेवा के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। जिज्ञासा-समाधान का भी सुन्दर

क्रम चला। कान्फ्रेंस के दौरान दिल्ली में आई.ए.एस., मुम्बई में मेडिकल, कोलकाता में सी.ए., सी. एस., एवं चेन्नई में एम.बी.ए. के लिए कौंसिलिंग सेंटर खोले जाने की घोषणा की गई। कान्फ्रेंस में २७१ प्रोफेशनल्स संभागी बने।

१५ अगस्त। भारत का स्वतंत्रता दिवस। गुलामी की जंजीरों से मुक्त होकर भारत की जनता ने आजादी की खुली सुहावनी सांस ली। स्वाधीनता का दिन संबंधित देश के लिए गौरव का क्षण होता है। इस संदर्भ में मंत्री मुनि ने अपने अभिभाषण में आत्मानुशासन को मजबूत करने की बात कही।

आचार्यश्री ने कहा--'भारत एक लोकतांत्रिक प्रणाली वाला देश है। लोकतंत्र एक सुन्दर शासन प्रणाली है। यह राजतंत्रीय प्रणाली से कहीं अधिक बेहतर है। इसमें जनता के द्वारा जनता के लिए जनता पर शासन होता है। यहाँ न्यायपालिका के द्वारा उच्च पदों पर बैठे लोगों पर भी अंकुश लगाया जा सकता है। लोकतंत्र में प्रशिक्षण बहुत जरूरी है।'

आचार्यश्री ने विभिन्न क्षेत्रों में भारत के विकास को महत्त्वपूर्ण

बताया और विकास के चार आयामों की विशद विवेचना करते हुए कहा--'भौतिक व आर्थिक विकास व्यवहार में आवश्यक माने गये हैं। इसके साथ नैतिक व आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक हैं। पूज्य गुरुदेव तुलसी ने भरत की स्वतंत्रता के कुछ समय बाद अणुव्रत आन्दोलन प्रारंभ किया। अणुव्रत ऐसा आन्दोलन है, जो असली आजादी का मूर्तिमान स्वरूप है। आजादी की प्राप्ति के लिए व्यापक संघर्ष करना पड़ा। कुछ पाने के लिए संघर्ष और कठिनाइयों की तंग गलियों में से गुजरना पड़ता है। संघर्षों को झेलते-झेलते व्यक्ति कुछ पाने की स्थिति में पहुँच सकता है।'

देशवासियों को संबोधित करते हुए 11वें अधिशास्ता आचार्यश्री ने कहा--'भारत की जनता में चरित्र, नैतिकता एवं मानवीय मूल्यों का विकास हो। भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए भी प्रयास हो। जब देश से भ्रष्टाचार के दैत्य को पछाड़ कर नैतिकता, प्रामाणिकता, पारदर्शिता जैसे मूल्यों को स्थापित किया जाएगा, तभी सही अर्थों में असली आजादी का आनंद प्राप्त होगा।'



नशायुक्त व्यक्ति संस्थाओं के पदाधिकारी न बनें

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण का उद्बोधन

केलवा, 20 अगस्त। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने सम्मेलन में उपस्थित प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा--तेरापंथी सभाओं आदि संघीय संरचनाओं के अध्यक्ष आदि पदों पर नशायुक्त व्यक्ति दूर रहना चाहिए। संस्थाओं के पदाधिकारी अनिवार्य रूप से नशामुक्त हों, यह अपेक्षित है।

आचार्यश्री ने आगे कहा कि कार्यकर्ता सेवा करता है यह अच्छी बात है। पर सेवा करने की योग्यता अर्जित करनी चाहिए। संस्थाओं के पदों पर आने वाले आवेग पर नियंत्रण रखें, नशा मुक्त हो और चरित्र शुद्धि हो। यह अपेक्षित है। ऐसी अर्हताएं रखने वाला संस्थाओं के साथ जुड़कर सेवा करने के योग्य होता है। जिसको सेवा करने का दायित्व मिलता है वह अपने दायित्व के प्रति जागरूक रहे। समाज और संघ में अपना चिंतन नियोजित करें। संगठन संस्था का नेतृत्वकर्ता अपने जीवन को त्याग, संयम और सादगी से स्थापित कर दूसरों के सामने आदर्श प्रस्तुत करे तो समाज का चहेता बन सकता है और सम्मान पाने की योग्यता पा सकता है।

आचार्य महाश्रमण ने कार्यकर्ता को तीन रूप में परिभाषित करते हुए कहा--एक कार्यकर्ता वह होता जो केवल काम में विश्वास करता है। इसे मैं उच्च श्रेणी में रखता हूँ। दूसरा काम और नाम दोनों में विश्वास करता है। यह मध्यम श्रेणी में आता है और तीसरा काम तो करता नहीं, बस उसे नाम की चेष्टा रहती है। यह निम्न स्तर का कार्यकर्ता होता है। इसलिए व्यक्ति को सदैव कर्म में विश्वास रखना चाहिए। इससे ही



उसकी समाज और देश में अलग पहचान कायम हो सकेगी। कार्यकर्ता सेवा करें और कभी भी फल की इच्छा मन में न आने दें। भोग से अर्जित किए जाने वाले आनंद की अनुभूति क्षणिकभर की होती है। इसलिए भौतिकता की वस्तुओं को त्यागने की आवश्यकता है। जीवन में आनंद के कई स्रोत हैं। सभी को अपने दायित्व के प्रति जागरूक होना चाहिए और सेवा की भावना प्रबल होनी चाहिए। अपने जीवन को सदाचार और सत्याचरण से जोड़ना होगा। खान-पान, आचार-व्यवहार, आत्म नियंत्रण और दर्शन। इन सबके प्रति जागरूक रहकर कार्य करना होगा। धर्मसंघ के प्रत्येक व्यक्ति को यह चिंतन करना चाहिए कि समाज के विकास के लिए कैसे योगदान कर सकते हैं।

आचार्यश्री ने महासभा के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि वह एक मां की तरह कार्य कर रही है जो अपने बच्चों को संरक्षण प्रदान करती है। सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को धर्मसंघ की आचार-संहिता का पालन करना चाहिए। सामायिक, नशामुक्ति, कषायमुक्ति आदि को

संघीय प्रवृत्ति का पालन करना चाहिए।

मंत्री मुनि सुमेरमल लाडनू ने प्रतिनिधि सम्मेलन को एक विशेष उपलब्धि मानते हुए कहा--सभी प्रतिनिधि एवं संपूर्ण श्रावक समाज आज अपने दायित्व के प्रति सचेष्ट हों और समाजहित में कार्य करें। कोई भी छात्र अर्थ के अभाव में शिक्षा से वंचित न रहे। तभी हमारे धर्मसंघ की नींव मजबूत होगी।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि तेरापंथ का ध्वज धर्मसंघ के आधार का प्रतीक है। उसमें जुड़े हुए दोनों हाथ भगवान महावीर के प्रति नमन और तेरापंथ के प्रति आस्था और विश्वास दर्शाते हैं। हम विचार करें कि हम किस स्तर तक पहुंचे हैं और कहां पहुंचना है। हम अतीत से प्रेरणा लेकर भविष्य का निर्माण करें। हमें विचार करना है कि संघीय आस्था को और अधिक कैसे मजबूत कर सकते हैं।

महासभा के प्रभारी मुनि धनंजयकुमार ने कहा--महासभा को धर्मसंघ की शीर्षस्थ संस्था होने का गौरव प्राप्त है। वह अनेक परियोजनाओं का आयोजन कर संघ और समाज के विकास के लिए कार्य करती है। इस प्रतिनिधि

सम्मेलन में योगक्षेम प्राप्ति के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार विमर्श किया जाए।

महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिंडालिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि सम्मेलन का केन्द्रीय विषय योगक्षेम है, जो वर्तमान में हमारे संघ, समाज के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रसंग है। मेवाड कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष पूर्व न्यायाधीश बसंतीलाल बाबेल ने आचार्य महाश्रमण के प्रज्ञावान व्यक्तित्व और अमृत धारा प्रवाहिनी की अभिवंदना की। महासभा के महामंत्री भंवरलाल सिंघी ने सभा प्रतिनिधि सम्मेलन की प्रस्तावना प्रस्तुत की। इस अवसर पर चैनरूप चिंडालिया ने ध्वजारोहण और सम्मेलन के सूत्र वाक्य के प्रतीक चिह्न का अनावरण किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी ने स्वागत की रस्म अदा की। महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी ने आभार व्यक्त किया।

त्रिदिवसीय सभा प्रतिनिधि सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में मुनि उदितकुमार, मुनि कुमारश्रमण, जैविभा यूनिवर्सिटी की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा एवं प्रदीप चौपड़ा ने विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण दिया। जैविभाध्यक्ष सुरेन्द्र चोरड़िया, महासभा के निवर्तमान अध्यक्ष जसकरण चौपड़ा, प्रधान न्यासी राजेन्द्र बच्छावत, उपाध्यक्ष ख्यालीलाल तातेड़, रतन दूगड़, विजयसिंह चोरड़िया, कल्पना बैद, सुमेरमल सुराणा, डालमचन्द नोलखा, सोहनराज चौपड़ा, मांगीलाल सेठिया, जय तुलसी फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी सुरेन्द्रकुमार दूगड़ ने महासभा की विभिन्न प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला।

महासभाध्यक्ष चैनरूप चंडालिया ने महासभा की विभिन्न योजनाओं के बारे में विशद चर्चा की। प्रतिनिधियों के आठ गुप्तों में महासभा संवाद का क्रम चला।

21 अगस्त। आचार्य महाश्रमण के प्रवचन से पूर्व और पश्चात मुनि जयंतकुमार, मुनि प्रसन्नकुमार, मुनि किशनलाल, मुनि पानमल एवं मुनि सुखलाल के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। मुनि विजयकुमार, बहादुर सिंह सेठिया (बेंगलोर) एवं कांकरोली के ज्ञानार्थियों ने गीत प्रस्तुत किया। प्रवास व्यवस्था समिति जसोल के संयोजक गौतम सालेचा ने सभी प्रतिनिधियों को आगामी चातुर्मास में जसोल आने का निमंत्रण दिया।

कार्यकारिणी की घोषणा

दिल्ली से समागत अणुव्रत महासमिति के नवनिर्वाचित अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने प्रातःकालीन कार्यक्रम में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत महासमिति की नवगठित कार्यसमिति की घोषणा करते हुए सभी अणुव्रत समितियों एवं जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभाओं से आग्रह किया कि अणुव्रत आंदोलन में गतिशीलता लाने हेतु क्षेत्रीय

राष्ट्र का सत्त्वा निर्माण हो

जीन्द, 11 अगस्त। अणुव्रत जीवन विज्ञान अभियान के तहत मुनि विजयराज ने 60 शिक्षण संस्थानों के 29205 छात्र एवं शिक्षकों को लाभान्वित किया तथा व्यसनमुक्ति के 14222 संकल्प फॉर्म भरवाए गए। अणुव्रत अधिवेशन केलवा में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के कर कमलों में अणुव्रत सेवी सुरेन्द्र कुमार जैन एडवोकेट एवं प्रो. देवेन्द्र कुमार जैन ने सादर भेंट किये, जिन्हें आचार्यश्री ने सहर्ष स्वीकार किया।

स्तर पर आपसी सामंजस्य स्थापित करें।

नवगठित कार्यसमिति की घोषणा उपरांत प्रवचन पंडाल में उपस्थित कार्यसमिति के अनेक सदस्य उपस्थित थे, जिन्होंने आचार्य महाश्रमण से मार्गदर्शन एवं प्रेरणा पाथेय प्राप्त किया। साथ ही अणुव्रत आंदोलन को आगे बढ़ाने की बात कही।

22 अगस्त। पूज्यप्रवर के प्रवचनोपरान्त महासभाध्यक्ष चैनरूप चंडालिया ने सम्मेलन की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा प्रतिवर्ष घोषित होने वाली श्रेष्ठ सभा व विशिष्ट सभा के रूप में क्रमशः गुवाहाटी व केसिंगा (ओडिसा) सभा के नामों की घोषणा की। महामंत्री भंवरलाल सिंघी ने आभार व्यक्त किया। श्री सिंघी ने सम्मेलन के सभी सत्रों का संचालन किया।

तीन दिनों तक चले इस सम्मेलन में खूब चिंतन-मंथन हुआ और कार्यकर्ताओं को अच्छी खुराक मिली। उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं ने संघ और समाज के विकास के लिए निर्धारित कार्यक्रमों को लागू करने में पूरी सक्रियता दिखाने की बात कही। सम्मेलन में देशव्यापी सभाओं के लगभग 651 प्रतिभागियों ने शिरकत की।

इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा--मुनि विजयराज ने श्रमपूर्वक प्रेरणा देकर हरियाणा में व्यसन मुक्ति के संकल्प फॉर्म भरवाकर साधुवाद का कार्य किया है। स्कूलों में जीवन विज्ञान व व्यसनमुक्ति की प्रेरणा देने का उनका रुचि का विषय है। अणुव्रत सत्त्वा जीवन जीने का विज्ञान है। अणुव्रत मानवता की शान है। छोटे-छोटे संकल्प कितना निखार लाते हैं। सुखी जीवन का वरदान है अणुव्रत।

नैतिक मूल्यों का आधार-स्तंभ है अणुव्रत



नई दिल्ली, 18 अगस्त।

प्रेक्षाध्यान प्रभारी मुनि जयकुमार के सान्निध्य में कांस्टिट्यूशनल हॉल नई दिल्ली में अणुव्रत महासमिति के अणुव्रत संसदीय मंच के तत्वावधान में “लोकतंत्र में नैतिकता” विषयक संगोष्ठी आयोजित हुई। बीकानेर के सांसद अर्जुन मेघवाल के संयोजन में देश के विभिन्न राज्यों से 19 सांसदों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। कार्यक्रम का प्रारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ।

मुनि जयकुमार ने कहा-- लोकतंत्र की सफलता के लिए नेता एवं जनता में त्याग, संयम तथा कर्तव्यनिष्ठा की भावना का विकास होना चाहिए। राजनीति के सुचारू संचालन हेतु राजनेताओं को आध्यात्मिक प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है। संसदीय प्रणाली अत्यन्त अच्छी प्रणाली है, क्योंकि लोकतंत्र में सभी प्रकार की समानताएं हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि राजनीति में नैतिकता आएगी, इसके लिए दृष्टिकोण में परिवर्तन और कथनी-करनी में समानता लानी होगी, तभी हम भ्रष्टाचार रूपी जड़ को समाप्त कर सकते हैं। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों से जो प्रतिबिंब निकले वे राष्ट्र के उत्थान में एक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत के प्रमुख घोष संयम: खलु जीवनम को अपनाकर हम इस बुराई से बच सकते हैं।

अणुव्रत महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने देश में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद के प्रति अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा--हम अणुव्रत के छोटे-छोटे ब्रतों को जीवन में अपनाकर अनेक बुराइयों से बच सकते हैं।

कार्यक्रम में सांसद हुकमदेव नारायण यादव, प्रभात सिंह पी. चौहान, दिलीप सिंह गांधी, वीरेन्द्र कश्यप, डॉ. भोला सिंह, महेन्द्र सिंह चौहान, ए.टी. नाना पाटिल, डॉ. विजेन्द्र कुमार, जितेन्द्र सिंह बुंदेला, ज्योति धुर, ईश्वरलाल जैन, अशोक अर्गल, नरेश कुमार, रामसिंह कसबा, भूतपूर्व सांसद भानुप्रताप सिंह एवं अन्य सांसदों ने महत्वपूर्ण अपने विचार रखते हुए अणुव्रत में आस्था जताई। दिल्ली सरकार के लेबर कमिश्नर दिल्ली मुनीष कुमार गौड़ भी उपस्थित थे। सभी महानुभावों का मानना था कि बिना नैतिक आचरण में सुधार के बुराइयों से नहीं लड़ा जा सकता। क्योंकि स्वच्छ एवं स्वस्थ लोकतंत्र के मूल में नैतिकता की महत्ती आवश्यकता है। मूर्धन्य कवि राजेश चेतन ने अपनी देशभक्ति की कविताओं द्वारा उपस्थित सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया।

अंत में सांसद एवं कार्यक्रम के संयोजक अर्जुन मेघवाल ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम संचालन का संचालन सुनीता ने किया।

अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान संगोष्ठी

बालोतरा, 8 अगस्त। साध्वी चांदकुमारी एवं साध्वी तिलकश्री की सहवर्तिनी साध्वी हेमलता एवं साध्वी तितिक्षाश्री के सान्निध्य में अणुव्रत समिति बालोतरा के नवनिर्मित अध्यक्ष कमलेश बोहरा के निवेदन पर मदर टेरेसा स्कूल में “अणुव्रत व जीवन विज्ञान” संगोष्ठी का आयोजन हुआ। शुभारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। साध्वी हेमलता ने अणुव्रत व जीवन विज्ञान पर प्रकाश डालते हुए प्रामाणिक एवं नशामुक्त जीवन जीने की प्रबल प्रेरणा दी। अणुव्रत जिला प्रभारी ओमप्रकाश बांठिया ने अणुव्रत पर विचार रखे। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष कमलेश बोहरा ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। गौतम वैद मुथा ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में विद्यालय की प्राचार्या वीणा बोहरा, जवेरीलाल सालेचा, सम्पतराज नाहटा, मोहनलाल वागरेचा, कमला देवी ओस्तवाल, पुष्पा देवी ओस्तवाल व पुष्पा देवी बालड़ उपस्थित थे। विद्यालय में

जोधपुर में शिक्षक कार्यशाला

जोधपुर, 8 अगस्त। मुनि रविन्द्रकुमार व मुनि पृथ्वीराज के सान्निध्य में तातेड़ गेस्ट हाउस सरदारपुरा में अणुव्रत समिति जोधपुर के तत्वावधान में “शिक्षक कार्यशाला” का आयोजन हुआ। इसमें शिक्षक संसद के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. हीरालाल श्रीमाली ने मुख्य वक्ता के रूप में भाग लिया। कार्यशाला में लगभग एक सौ लेक्चरर, प्रधानाचार्य एवं शिक्षकगण सम्मिलित थे। मुनिश्री ने अणुव्रत संकल्प पत्र के नियमों की जानकारी देकर संकल्प करवाए।

कार्यशाला का प्रारंभ स्वाति रामदेव द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। डॉ. आनन्द प्रकाश कल्ला ने अणुव्रत की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। डॉ. ललिता संचेती ने जीवन

अणुव्रत समिति की ओर से अणुव्रत तथा जीवन विज्ञान का साहित्य भेंट किया गया।

● इससे पूर्व अणुव्रत समिति बालोतरा के तत्वावधान में साध्वी चांदकुमारी व साध्वी तिलकश्री की प्रेरणा से रक्षा बंधन पर्व पर साध्वी मंजूबाला व साध्वी तितिक्षाश्री ने कारागृह में कैदियों को संबोधित किया। साध्वीश्री ने कैदी भाई-बहनों को प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान व अणुव्रत की जानकारी देते हुए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये। इस अवसर पर समिति द्वारा बहनों ने कैदी भाइयों को राखी बांधी एवं उनसे बुरे कार्यों का त्याग कर अच्छे कार्यों में लगने की भावना व्यक्त कराई। इस अवसर पर ओम बांठिया, कमलेश बोहरा ने कारागृह अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में फतेहचंद ओस्तवाल, जवेरीलाल सालेचा, ललित जीरावला, ललित श्रीमाल, कमला ओस्तवाल, पुष्पा ओस्तवाल, पुष्पा बालड़, निधि सालेचा व अंकिता रांका उपस्थित थे।

विज्ञान की आवश्यकता पर विचार रखे। डॉ. प्रतिभा कोचर ने विचार रखे। विशिष्ट अतिथि डॉ. नन्दलाल कल्ला थे एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. सोहन राज तातेड़ ने की। कार्यशाला का संचालन समिति के अध्यक्ष गोविन्दराज पुरोहित ने किया। आभार व्यक्त समिति की मंत्री सुधा भंसाली ने किया। अल्पाहार की व्यवस्था सभाध्यक्ष धनपत मेहता ने की। सुमेर तातेड़ का सराहनीय श्रम रहा। समिति द्वारा तीन शिक्षकों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के प्रायोजक उम्मेदमल सिंघवी थे। मुनि रविन्द्रकुमार ने पांच स्कूलों में विद्यार्थियों को संस्कार निर्माण एवं जीवन विज्ञान की जानकारी दी।

अणुव्रत आचार संहिता का विमोचन

उदयपुर, 24 अगस्त। अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा गणाधिपति आचार्य तुलसी द्वारा प्रतिपादित एवं आचार्य महाश्रमण द्वारा निर्देशित अणुव्रत आचार संहिता का विमोचन समिति के संरक्षक एवं महानिरीक्षक पुलिस उदयपुर रेंज गोविन्द गुप्ता द्वारा किया गया।

समिति के कार्यकारी महामंत्री राजेन्द्र सेन ने बताया कि उदयपुर जिले के 101 पुलिस थानों में अणुव्रत आचार संहिता के बड़े बोर्ड लगाए जाएंगे जिसमें चरित्र निर्माण, नशामुक्ति एवं अनुशासित

जीवन जीने के छोटे-छोटे 11 नियमों को अंकित किया गया है।

अणुव्रत आचार संहिता का विमोचन समिति अध्यक्ष गणेश डागलिया, उपाध्यक्ष सवाईलाल पोखरना, डॉ. कैलाश मानव, माणक नाहर, कार्यकारी महामंत्री राजेन्द्र सेन, मनमोहन राज सिंघवी, डॉ. के. एल. कोठारी, डॉ. रंगलाल धाकड़, डॉ. शोभालाल ओदिच्य, वर्द्धमान मेहता, अरविन्द चित्तौड़ा, जमनालाल दशोरा, आर.के.जैन, सुबोध कोठारी सहित कई पदाधिकारी उपस्थित थे।

अणुव्रत सेवी संबोधन

■ जुगराज नाहर, चेन्नई



अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने जुगराज नाहर चेन्नई द्वारा अणुव्रत आंदोलन के प्रचार-प्रसार में दी जा रही सेवाओं का अंकन करते हुए केलवा में संपन्न हुए अणुव्रत महासमिति के 62 वें अधिवेशन में 2 अगस्त, 2011 को “अणुव्रत सेवी” के संबोधन से संबोधित किया। जुगराज नाहर चेन्नई एवं दिवेर में प्रमुख समाज सेवी के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनकी उदारता व दानवीरता के लिए राजस्थान सरकार ने इन्हें भामाशाह का अलंकरण प्रदान किया है। आप धर्मसंघ के किसी भी संस्थान के लिए तन, मन व धन से समर्पित रहते हैं। आप महाशिला लेख टॉडगढ़, तुलसी अमृत निकेतन कानोड के अध्यक्ष हैं तथा अणुव्रतम् तमिल पत्रिका के भी संरक्षक हैं। आप अणुव्रत महासमिति के पूर्व उपाध्यक्ष हैं एवं आपने अणुव्रत महासमिति के साहित्य प्रकाशन में आर्थिक सहयोग दिया तथा अणुव्रत पत्रिका को राजस्थान विधानसभा के सभी विधायकों को भेजने की पहल की। उदार दानवीर समर्पित श्रावक एवं मधुरभाषी श्री नाहर को अणुव्रत महासमिति परिवार की हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएं।

■ निर्मल एम. रांका, कोयम्बटूर

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने अणुव्रत महासमिति के निवर्तमान अध्यक्ष निर्मल एम. रांका द्वारा अणुव्रत आंदोलन के प्रचार-प्रसार एवं अणुव्रत महासमिति की सर्व प्रवृत्तियों के सुचारु संचालन में दी जा रही सेवाओं का अंकन करते हुए केलवा में संपन्न हुए अणुव्रत महासमिति के 62 वें वार्षिक अधिवेशन में 2 अगस्त, 2011 को “अणुव्रत सेवी” संबोधन से संबोधित किया, एवं यह भी फरमाया कि निर्मल अच्छे पिता का अच्छा पुत्र है। निर्मल एम. रांका (कोयम्बटूर-बगड़ीनगर) अणुव्रत आंदोलन के प्रारंभ से जुड़े “समाज भूषण” स्व. मोतीलालजी रांका के सुपुत्र हैं। श्री रांकाजी तेरापंथी महासभा कोलकाता एवं अणुविभा राजसमंद के भी उपाध्यक्ष रह चुके हैं। साथ ही अभिनिष्क्रमण स्थली बगड़ी के मुख्यदर्शी रहे हैं। सहज, सरल एवं विनम्र श्री रांकाजी को अणुव्रत महासमिति परिवार की हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएं।



अणुव्रत आंदोलन

भ्रष्टाचार विरोधी एवं नशामुक्ति अभियान

नाथद्वारा, 24 अगस्त। गांव सायों का खेड़ा तहसील नाथद्वारा में भ्रष्टाचार को मिटाने एवं अन्ना हजारों के समर्थन में गांव के सभी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने शांति रैली निकाली। जिसमें सभी विद्यार्थियों ने गांव में पथ प्रदर्शन करते हुये जनलोकपाल लाना है भ्रष्टाचार मिटाना है। अन्ना हजारों जिन्दाबाद, भारतमाता की जय, वन्देमातरम् आदि नारों के साथ

भ्रष्टाचार का समाधान है 'सदाचार'

अहमदाबाद, 8 अगस्त। देश में बढ़ता भ्रष्टाचार वर्तमान युग की मुख्य राष्ट्रीय समस्या बनती जा रही है। इसका समाधान है "सदाचार" राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। नैतिकता, संयम, व्यसनमुक्ति एवं सदाचार के प्रति जन चेतना जाग्रत करने के उद्देश्य से गुजरात राज्य अणुव्रत समिति गुजरात राज्य निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन कर रही है। प्रतियोगिता का विषय है--

सेन्ट्रल जेल में वृक्षारोपण

उदयपुर, 25 अगस्त। अणुव्रत समिति उदयपुर, सेन्ट्रल जेल एवं वन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में जेल परिसर में सेमल के 51 पौधे लगाकर "सेमल कुंज" के रूप में विकसित किये जाने का निर्णय लिया गया। राजेन्द्र सेन ने बताया



भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने के लिये अन्ना हजारों के समर्थन में रैली का आयोजन किया।

आचार्य महाश्रमण के अमृत महोत्सव पर नई हवेली चौक स्थित सभा भवन में रोशनलाल बांगड़ ने आजीवन नशामुक्ति का संकल्प लिया। सभा भवन नाथद्वारा में आचार्य महाश्रमण के अमृत महोत्सव पर अखिल भारतीय तेयुप द्वारा नशामुक्ति अभियान के प्रपत्र भरने का क्रम चल रहा है।

'सदाचार की पुनः स्थापना कैसे?' शब्द सीमा 400 में लिखकर दिनांक 10-9-2011 तक निम्न पते पर भिजवाएं--

1. जवेरीलाल संकलेचा
मुकनचंद एंड सन्स
सहयोग मार्केट, साकर बाजार
अहमदाबाद - 380002
मो. : 09376227360
2. अशोक कुमार दूगड़
खुशबू एन्टरप्राइज
65-ए, मास्काती मार्केट
अहमदाबाद - 380002
मो. : 09727382182

कि पर्यावरण शुद्धि के लिए जेल परिसर में गणेश डागलिया, जेल अधीक्षक एस.एस. शेखावत, वन विभाग के उपवन संरक्षक आर.के. जैन, अरविन्द चित्तौड़ा, सुनिल खोखावत, भंवरलाल गोड़, हेमन्ध्र, कौशल मूंदड़ा ने वृक्षारोपण किया।

अनेकान्त में निहित है सभी समस्याओं का समाधान : प्रो. गेलड़ा

सरदारशहर, 26 अगस्त। शिक्षाविद प्रो. महावीर राज गेलड़ा ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं द्वारा आई.ए.एस.ई. विश्व-विद्यालय, सरदारशहर में अनेकान्त की वर्तमान संदर्भ में सार्थकता विषय पर आयोजित व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कहा--अनेकान्त दर्शन सत्य की समझ को विकसित करता है। भगवान महावीर के दर्शन से निकला हुआ अनेकान्त लोगों की समझ में तब आया जब पश्चिम के वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने सापेक्षता का सिद्धान्त दिया। आइन्स्टीन ने लगभग वही बात कही थी जो अनेकान्तवाद में समाहित है। विडम्बना इस बात की है कि प्रत्येक भारतीय सिद्धान्त को मान्यता तब मिलती है जब पाश्चात्य विचारकों द्वारा उसे मान्य किया जाता है। जरूरत है अनेकान्त के मर्म को समझकर सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान ढूँढा जाय। प्रो. गेलड़ा ने अनेक दृष्टान्तों एवं उदाहरणों के माध्यम से बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम समन्वयक जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा के निदेशक डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने विषय का प्रवर्तन करते हुए कहा--अनेकान्त पूर्व चली आ रही एकान्त आवधारणाओं का निरसन कर सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से उन्मुक्त होकर वस्तु के अनेक पहलुओं को समझने पर बल देता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अनेकान्त के इस मर्म को समझ लें कि दूसरा जो कुछ कह रहा है, वह भी सत्य है तो सम्भवतः किसी प्रकार के विवाद या संघर्ष को कोई अवकाश

न मिले। डॉ. त्रिपाठी ने कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा की प्रेरणा से अनुशास्ता के 50वें जन्म दिवस को अमृत महोत्सव वर्ष के रूप में मना रहा है।

ज्ञानाचार के विकास एवं प्रसार के लिए देश के पचास विश्वविद्यालयों एवं पचास महाविद्यालयों में जैन दर्शन के सिद्धान्तों की वर्तमान में प्रासंगिता विषय पर विद्वानों के व्याख्यान की योजना है। व्याख्यान शृंखला का प्रारम्भ अनुशास्ता की जन्मभूमि सरदारशहर के आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय से किया जा रहा है। इसके लिए विश्वविद्यालय के चांसलर एवं कार्यक्रम के अध्यक्ष कनकमल दूगड़ के प्रति मैं विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ. दिनेश बैद ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कनकमल दूगड़ ने कहा--अनेकान्त हमें प्रत्येक स्थिति में सम रहने का दर्शन देता है जो बहुत महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम का संयोजन करते हुए डॉ. संजीव गुप्ता ने कहा--अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की जन्म भूमि, दीक्षा भूमि एवं आचार्य पदाभिषेक भूमि सरदारशहर के इस आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय से आचार्य महाश्रमण व्याख्यानमाला की शुरुआत करने का हमें सुअवसर मिला है एतदर्थ विश्वविद्यालय परिवार के प्रति हार्दिक आभार। अनेकान्त जैन दर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है। अनेकान्त दृष्टि से अहिंसा का विस्तार होता है। डॉ. गुप्ता ने अन्त में सभी के प्रति आभार भी व्यक्त किया।

अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता



नई दिल्ली, 22 अगस्त। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास द्वारा आयोजित 12वीं अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता के अंतर्गत उत्तर-पश्चिम दिल्ली में खिलौनी देवी धर्मशाला में विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए मुनि राकेशकुमार ने कहा--वर्तमान तनावपूर्ण एवं उलझन भरे युग में आने वाली पीढ़ी को संस्कारित बनाने का काम अपने आप में अत्यंत लाभकारी है। आचार्य तुलसी ने बच्चों के निर्माण हेतु अनेक आयाम प्रस्तुत किए हैं। उनका एक मात्र उद्देश्य था कि अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण हो, क्योंकि यदि बच्चों को अच्छे व्यक्ति के रूप में तैयार नहीं किया गया तो देश का नहीं वरन् संपूर्ण मानवता का भविष्य भी खतरे में पड़ जाएगा। अतः बच्चों का भावात्मक व चारित्रिक विकास सार्थक जीवन की सर्वोपरि आवश्यकता है। सुख व शांति का संसार तभी बनेगा जब जीवन निर्माण की शिक्षा दी जाएगी। समण सिद्धप्रज्ञ ने बच्चों को जीवन जीने की कला सिखाई। मुनि सुधाकर ने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा दी।

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के मुख्य प्रबंध न्यासी धनराज बोथरा ने कहा कि अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता के माध्यम से नैतिक उत्थान का प्रयास किया जा रहा है। इस दौरान लाखों छात्र-छात्राएं अणुव्रत के संपर्क में आकर लाभान्वित हो रहे हैं। विद्यार्थियों के नैतिक एवं चारित्रिक विकास हेतु अणुव्रत आंदोलन विशेष रूप से

प्रयत्नशील है। अभा अणुव्रत न्यास के न्यासी शांतिकुमार जैन ने कहा--चरित्र निर्माण में अणुव्रत गीत गायन एक अनुपम माध्यम है। जिसके माध्यम से बच्चे अणुव्रत दर्शन को समझने का प्रयास करते हैं।

पूर्वी दिल्ली में साध्वी यशोमती के सान्निध्य में अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें पूर्वी दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों से सैकड़ों विद्यार्थियों ने भाग लिया। साध्वीश्री ने कहा--अणुव्रत चरित्र निर्माण की अमूल्य निधि है। अणुव्रत के माध्यम से हम अपना नैतिक विकास कर सकते हैं।

इसी क्रम में केन्द्रीय, दक्षिण व उत्तरी दिल्ली अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन अणुव्रत भवन में हुआ। इस अवसर पर जैन विश्व भारती की उपकुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा ने बच्चों को अपना आशीर्वाद दिया एवं अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु इस कार्यक्रम की प्रशंसा की। अभा अणुव्रत न्यास के प्रशिक्षक रमेश कांडपाल ने उपस्थित छात्र-छात्राओं को विद्यार्थी अणुव्रत नियम स्वीकार करवाये। सह संयोजक विमल गुनेचा ने विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में 87 विद्यालयों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका प्रसिद्ध गायक कैलाश व्यास, रजनी, श्याम साजन, राकेश चिंडालिया, दिव्येश भारद्वाज व अमित कौशिक ने निभायी। संचालन रमेश कांडपाल एवं विमल गुनेचा ने किया।

संगरूर में नशामुक्ति कार्यशाला

संगरूर, 14 अगस्त। साध्वी सुदर्शनाश्री के सान्निध्य में तेयुप के तत्वावधान में नशामुक्ति कार्यशाला का आयोजन सभा भवन में किया गया। इससे पूर्व प्रातः तेयुप, किशोर मंडल, कन्या मंडल, महिला मंडल तथा सभा की उपस्थिति में नशामुक्ति रैली निकाली गयी। रैली विभिन्न मार्गों से होती हुई पुनः सभा भवन में पहुंचकर सभा के रूप में परिवर्तित हो गयी। साध्वीश्री ने उपस्थित संभागियों को संबोधित करते हुए कहा--आचार्य अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में "नशामुक्ति कार्यशाला" का समायोजन पंजाब की धरा पर वरदान बने। व्यक्ति अपने जीवन

में हृदय परिवर्तन कर नशामुक्ति का जीवन जीने का संकल्प करे। साध्वीश्री ने अनेक घटना-प्रसंगों के द्वारा नशा छुड़ाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर उपस्थित अनेक भाई-बहनों ने जीवन भर व्यसनमुक्त रहने का संकल्प स्वीकार किया।

साध्वी लक्षितप्रभा ने नशा संबंधित आंकड़े प्रस्तुत किये। साध्वी पुनीतयशा ने गीतिका का संगान किया। इस अवसर पर नशे से संबंधित लघु चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। संचालन अशोक जैन ने किया।

डॉ. वीरेन्द्र गांधी पुनः अध्यक्ष निर्वाचित

पचपदरा सिटी। साध्वी लब्धिश्री के सान्निध्य में एवं पारमार्थिक शिक्षण संस्था के संयोजक डूंगरमल बागरेचा के मार्गदर्शन में अणुव्रत कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित हुई। बैठक में निवर्तमान मंत्री दिलीप भदानी एवं निवर्तमान कोषाध्यक्ष मुकेश चोपड़ा ने अपने समिति का प्रतिवेदन एवं लेखा प्रस्तुत किया। जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृति दी गई।

निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. वीरेन्द्र गांधी एवं निवर्तमान कार्यकारी अध्यक्ष अशोक चोपड़ा ने विभिन्न विषयों पर विचार रखते हुए अपने कार्यकाल में सहयोग प्राप्त हेतु सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। गत कार्यसमिति के प्रति धन्यवाद प्रस्ताव के पश्चात सभाध्यक्ष नेमीचन्द्र चोपड़ा द्वारा आगामी कार्यकाल के लिए नूतन मनोनयन हेतु प्रस्ताव आमंत्रित किये गये।

बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने एक स्वर में सर्वसम्मति से डॉ. वीरेन्द्र गांधी को पुनः आगामी दो वर्ष के लिए अध्यक्ष

मनोनीत किया गया। डॉ. गांधी ने अपने मनोनयन पर आभार व्यक्त करते हुए कहा--मेरी व्यक्तिगत इच्छा थी कि आगामी सत्र के लिए अध्यक्ष पद का दायित्व सक्रिय कार्यकर्ता भूपत चोपड़ा को दिया जाये। सभी सदस्यों द्वारा आग्रह किये जाने पर डॉ. गांधी ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए भूपत चोपड़ा को अणुव्रत समिति पचपदरा का कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त करने की घोषणा की।

कार्यक्रम में उपस्थित डूंगरमल बागरेचा, नेमीचन्द्र चोपड़ा, हाजी गुलाब खान, आईदान सांखला, बाबूलाल डेलडिया, कान्तीलाल भदानी ने एक स्वर में कहा कि पुनः अध्यक्ष पद का दायित्व बेहद प्रसन्नता की बात है। साथ ही बहुत कठिन भी है, क्योंकि यह कोई राजनैतिक पद नहीं है। मानवीय गुणों की सर्वश्रेष्ठ परीक्षा इन्हीं सामाजिक पदों पर कार्य करने से होती है। अंत में साध्वी लब्धिश्री की उपस्थिति में डॉ. वीरेन्द्र गांधी एवं भूपत चोपड़ा ने अपना दायित्व ग्रहण किया। संचालन दिलीप भदानी ने किया।

विराट कवि सम्मेलन



चेन्नई। साध्वी कीर्तिलता के सान्निध्य में तमिलनाडु प्रादेशिक अणुव्रत समिति के तत्वावधान में साहुकारपेट भवन चेन्नई में विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। समिति के अध्यक्ष सम्पतराज चोरड़िया ने स्वागत भाषण किया। गोकुलचंद भंडारी ने आमंत्रित कवियों को मंचासीन कर परिचय दिया। उज्जैन से समागत कवयित्री श्रुति शारदा द्वारा सरस्वती वन्दना के संगान से सम्मेलन का प्रारंभ हुआ।

चेन्नई के अलंकार आच्छा, भक्तिरस एवं वीररस के कवि अनिल अवस्थी ने व्यंग्य रचनाएं, पन्ना से पधारे वीररस के कवि सुरेश सौरभ द्वारा राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने वाली कविताएं सुनाई। ग्वालियर से पधारे कवि अमित चितवन ने हास्य तो सेहत के लिये च्यनप्राश विषयक कविता का संगान किया। उज्जैन से समागत कवयित्री डॉ. शारदाश्री ने शृंगार रस की कविता सुनाई। राजस्थानी कवि मीठू मिठास ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए समय-समय पर लोगों को गुदगुदाया।

साध्वी कीर्तिलता ने अपनी कविता 'इक दिन गरीबी से हुई मेरी मुलाकात' सुनाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। साध्वी शान्तिलता ने "इतिहास परीक्षा थी जिस दिन" कविता का संगान किया।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पतराज चोरड़िया ने "गांधी के देश में, अहिंसा का पैगाम

चाहिए" कविता सुनाई। सभाध्यक्ष देवराज आच्छा ने "मां भारती को सलाम" कविता सुनाकर जोश भर दिया सुरेश मूथा ने अपनी रचना प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के प्रायोजक जुगराज महेन्द्र नाहर, नवीन, विशाल नाहर का स्मृति चिह्न द्वारा सम्मान किया गया। सभी आमंत्रित कवियों को स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। सभी उपस्थित संभागियों को तमिल मासिक पत्रिका अणुव्रतम की नवीनतम प्रति पत्रिका की संपादक माला कातरेला ने प्रदान की। आभार ज्ञापन सहमंत्री अशोक खटंग ने किया।

● तेरापंथ जैन विद्यालय पट्टालम चेन्नई में साध्वी कीर्तिलता का विराजना हुआ। स्कूल के प्रधानाचार्य ने स्वागत किया एवं जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान व योगा की जानकारी दी। विद्यार्थियों ने प्राणायाम, महाप्राण ध्वनि व आसन के प्रयोग करवाए। साध्वीश्री ने कहा-लक्ष्य को ऊंचा बनाओ, छोटे लक्ष्य वाला जीवन में कुछ हासिल नहीं कर सकता। एक आचार्य के अनुशासन में रहने वाला विकास के शिखर को छूता है। स्कूल के व्यवस्थापक सूरज धोका विद्यालय कमेटी के चेयरमेन अशोक डागा, अनिल सेठिया एवं अध्यापकगण उपस्थित थे। विद्यालय की दो छात्राओं सुश्री वर्षा एवं सुश्री करुणा ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। धन्यवाद ज्ञापन अशोक लूणावत ने किया।

नशामुक्ति चित्रकला प्रतियोगिता

शांताक्रुज-मुंबई। अणुव्रत फाउंडेशन शांताक्रुज ने आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर पाठक स्कूल में नशामुक्ति चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रतियोगिता में कक्षा 7 से कक्षा 10 तक के विद्यार्थियों ने अपनी कला और सूझबूझ से प्रतियोगिता में दिए गए विषय "नशामुक्ति" को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया।

स्कूल के प्रधानाचार्य और फाउंडेशन के सदस्यों ने निर्णायक की भूमिका अदा करते हुए प्रथम पांच चित्रों का चयन कर उन्हें पुरस्कृत किया। शरीर से भले ही हम विकलांग हैं पर मन से नहीं।

जय तुलसी विद्यालय में स्वाधीनता दिवस

डीसा। जय तुलसी प्रा. मा. विद्यालय में 65वां स्वाधीनता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के ट्रस्टीगण, उपप्रमुख रतनलाल मेहता, सहमंत्री विनोद बोरदिया, प्रकाश भाई बोरदिया, गणपतलाल बोरदिया, तेयुप डीसा के अध्यक्ष राकेशभाई शाह, अमरसिंह शेखानी, प्रकाशभाई बाफना, ध्वजारोहण कर्ता सुरेश भाई चिमनलाल शाह, जितेन्द्रभाई प्रजापति, मुकेशभाई मोड, महिला मंडल की बहनें एवं स्कूली छात्र उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारंभ अणुव्रत

इस बात को चरितार्थ किया छात्र शरफराज ने जो अपनी चित्रकारी की बदोलत प्रथम पांच में स्थान बनाने में सफलता प्राप्त की। अणुव्रत फाउंडेशन शांताक्रुज ने छात्रों का सम्मान करते हुए गर्व महसूस किया। सभी प्रतियोगी छात्र-छात्राओं को सान्त्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया एवं भविष्य में कभी भी नशा न करने का संकल्प राजेश चोधरी ने करवाया। स्कूल के चित्रकला विभाग के शिक्षक व प्रधानाचार्य के प्रति फाउंडेशन के सदस्यों ने आभार ज्ञापित करते हुए अन्य स्कूलों में भी प्रतियोगिताएं करवाने की बात कही।

गीत के संगान से हुआ। बालिकाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। अतिथियों का स्वागत जीतेन्द्र प्रजापति ने किया। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान विनोद शाह एवं रतनलाल मेहता ने किया। तत्पश्चात सुरेशभाई शाह के हाथों ध्वजारोहण किया गया।

इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों ने नाटक, अभिनय गीत एवं देशभक्ति गीत व गरबा की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की सफलता में युवक परिषद् एवं अमरसिंह शेखानी, प्रकाशभाई बाफना का सराहनीय श्रम रहा। संचालन रमेशभाई भुडण ने किया।

नशामुक्ति अभियान का प्रारंभ

इंदौर, 14 अगस्त। साध्वी संघप्रभा ठाणा-3 के सान्निध्य में तेयुप इंदौर के तत्वावधान में नशामुक्ति अभियान का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर निलेश पोखरना ने वर्ष भर चलने वाले नशामुक्ति अभियान के कार्यक्रम की जानकारी देते हुए कहा-- शुभारंभ पर नशामुक्ति अभियान शीर्षक से संबंधित 5000 पर्चों का पलासिया चौराहे

पर वितरण किया गया। इन पर्चों में नशे के खिलाफ जन-जागृति एवं नशे की आदत से छुटकारा पाने के उपायों का व्यापक रूप से उल्लेख किया गया है। संयोजकगण सुरेन्द्र डकलिया, मनीष कठोटिया, अभिषेक बैद ने बताया कि नशे के खिलाफ यह अभियान विभिन्न माध्यमों से वर्षभर चलाया जायेगा। कार्यक्रम में अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता

हैदराबाद, 24 अगस्त। मुनि जिनेशकुमार के सान्निध्य में अभा अणुव्रत न्यास के तत्वावधान में राजेश बरमेचा फाउंडेशन द्वारा अणुव्रत नैतिक गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन सभा भवन में किया गया। अभा अणुव्रत न्यास के राष्ट्रीय संयोजक विजयवर्धन डागा, फाउंडेशन की संरक्षिका इंदरमणी देवी बरमेचा एवं संस्थापक अध्यक्ष अशोक बरमेचा प्रमुख रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। अशोक बरमेचा, अणुव्रत समिति हैदराबाद के मंत्री प्रसन्न भंडारी, सभाध्यक्ष नवरतनमल सेठिया, तेयुप अध्यक्ष नवीन सुराणा, महिला मंडल की अध्यक्ष सरोज भंडारी, विजयवर्धन डागा, करणीसिंह बरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन दिलीप डागा ने किया।

प्रतियोगिता में 15 विद्यालयों के बालक-बालिकाओं ने भाग लिया, जिसमें जूनियर एकल गायन में प्रथम स्थान मॉडल मिशन हाई स्कूल के पंकज ने प्राप्त किया,

द्विदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर

साउथ कोलकाता, 17 अगस्त। साध्वी कनकश्री के सान्निध्य व साध्वी मधुलता के निर्देशन में साउथ कोलकाता सभा भवन में दो दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर संपन्न हुआ। सभा एवं महिला मंडल के तत्वावधान में आयोजित शिविर में 115 भाई-बहनों ने भाग लिया। सभाध्यक्ष सुरेन्द्र दूगड़ एवं महिला मंडल की अध्यक्षा कमला छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। साध्वी कनकश्री ने शिविर के विभिन्न सत्रों में उपस्थित शिविरार्थियों को निर्धारित विषयों पर संबोधन प्रदान करते हुए प्रेक्षाध्यान को ऑल इन वन बताया। मुख्य प्रशिक्षक रणजीत दूगड़ ने कायोत्सर्ग, ध्यान, मैत्री की अनुप्रेक्षा इत्यादि प्रयोगों के

द्वितीय स्थान पर गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल की रम्या रही। सीनियर एकल में दीक्षा हाई स्कूल की छात्रा प्रथम एवं एलआरएमजी की छात्रा द्वितीय स्थान पर रही। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका जानकी रामूलू, श्रीकान्त, पी. मुरली व राकेश रेड्डी ने निभाई।

मुनि जिनेशकुमार ने संभागियों को संबोधित करते हुए कहा--नैतिक मूल्यों व चारित्रिक उन्नयन के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। आचार्य महाप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान का अवदान देकर शिक्षा जगत को उपकृत किया। जीवन विज्ञान के प्रयोगों से विद्यार्थियों में आमूलचूल परिवर्तन आता है। प्रेक्षाध्यान से एकाग्रता का विकास होता है। कार्यक्रम की सफलता में संदीप लूणिया, लक्ष्मीपत बैद, प्रकाश बरड़िया, राजेन्द्र बोधरा, प्रमोद नाहटा, मुरलीधर, बी.सी. जैन, संजय शाह, अभय बैद, विजय बैद आदि का विशेष सहयोग रहा। शिक्षक रवि शंकर मिश्र ने आभार व्यक्त किया।

साथ-साथ ध्यान क्या है? ध्यान क्यों? आदि विषयों पर पावर पॉइन्ट के द्वारा बहुत रोचकता के साथ प्रस्तुति दी। इसके अतिरिक्त राजेन्द्र सुराणा, सुनीता सेठिया, वीणा श्यामासुखा ने योगासन एवं ध्यान के प्रयोग करवाये।

सुनीता नाहटा ने मनोरोगों का कारण एवं निवारण विषय पर तथा प्रदीप चोपड़ा ने 'प्रेक्षाध्यान से नशामुक्ति' विषय पर विस्तार से जानकारी दी। संचालन का दायित्व साउथ सभा के मंत्री विनोद बैद एवं कल्पना जैन ने निभाया। कार्यक्रम की सफलता में भंवरलाल बैद, सुरेन्द्र बोरड़, महावीर प्रताप दूगड़, सुरेन्द्र सेठिया, चम्पा कोठारी, जतन बाँठिया का सराहनीय श्रम रहा।

नशामुक्ति रैली का भव्य आयोजन



धीरूकलीकुंडरम। समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा के सान्निध्य में "नशामुक्ति रैली" का आयोजन किया गया। इसमें सरकारी स्कूल के 250 बच्चे एवं समाज के भाई-बहनों ने भाग लिया। साथ ही विद्यालय के शिक्षक, एनसीसी के अधिकारी नागेन्द्र कुमार, पुलिस इंस्पेक्टर वेण्णडेरन व अन्य पुलिस कर्मी रैली की जिम्मेदारी संभाले हुए थे। रैली में बच्चे नशा विरोधी स्लोगन, अणुव्रत आचार संहिता एवं नशो से होने वाली हानियों की लिखित तख्तियां हाथ में लेकर जोर-जोर से नारे लगा रहे थे। स्थानीय जैन भवन से प्रारंभ हुई रैली शहर की मुख्य गलियों से होकर पुनः जैन भवन में आकर सभा में परिवर्तित हो गयी। रैली का स्वागत अनेकों तमिल संवाददाताओं ने किया। क्षेत्र में

इतनी प्रभावक रैली का आयोजन प्रथम बार हुआ।

चेन्नई से समागत अशोक मूथा ने प्रस्तुत विषय पर विस्तार से चर्चा की। नशा आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, शारीरिक दृष्टियों से हानिकारक है। नशा अज्ञान से प्रारंभ होता है। समणी मानसप्रज्ञा ने हास्य कविता की प्रस्तुति दी।

समणी ज्योतिप्रज्ञा ने कहा-- नशा शान की बरबादी है। नशा सर्वनाश का द्वार है। आज का युग तनाव का युग है। तनाव का परिणाम है--नशा। शराब करे बरबाद। गुटखा, खैनी, पान मसाला कैंसर के आमंत्रण हैं। अणुव्रतों का यह संदेश -- व्यसनमुक्त हो सारा देश। कार्यक्रम में चंपालाल दूगड़, देवीचंद दूगड़, संपत बड़ोला इत्यादि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

प्रेक्षाध्यान है सर्वांगीण साधना पद्धति

गुमानपुरा, 14 अगस्त। मुनि रमेशकुमार ने महिला मंडल कोटा द्वारा आयोजित 'प्रेक्षाध्यान कार्यशाला' में गुलाबवाड़ी स्थित प्रज्ञाद्वीप भवन में संभागियों को संबोधित करते हुए कहा--प्रेक्षा का अर्थ है स्वयं के द्वारा स्वयं को देखना। आत्मा के द्वारा आत्मा को देखना। आत्मचिंतन करना। आत्मचिंतन विकास का महत्वपूर्ण सूत्र है। दूसरों को देखना व्यवहार है व अपने आपको देखना अध्यात्म है। अध्यात्म से निकला

हुआ व्यवहार जीवन को समाधान देता है। प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति से सर्वांगीण व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

मुनि चैतन्यकुमार 'अमन' ने कहा--प्रेक्षाध्यान वस्तुतः सहज प्रक्रिया है। समस्त समस्याओं का समाधान है--प्रेक्षाध्यान। जब तक शरीर और वाणी पर नियंत्रण नहीं होता है तब तक मन भी चंचल बना रहता है। अतः आवेश एवं आवेग पर नियंत्रण करने वाली प्रक्रिया एकमात्र प्रेक्षाध्यान है।

आभार, स्वागत, कृतज्ञता

पिछले अंक में मैंने अणुव्रत परिवार के सदस्यों से निवेदन किया था कि अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के जन्मशताब्दी वर्ष 2013-14 को दृष्टिगत रखते हुए हम अणुव्रत की दीर्घकालिक योजना पर विचार करें। इस दृष्टि से मैंने चार बिन्दु प्रस्तुत किये थे—

1. अणुव्रत दर्शन के प्रचार-प्रसार हेतु ठोस कदम उठाए जाएं,
2. अणुव्रत के प्रति समर्पित जीवनदानी कार्यकर्ताओं का निर्माण हो,
3. अणुव्रत ग्राम परियोजना के अन्तर्गत गाँवों का चयन कर उनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, रोजगार आदि के विशेष प्रयत्न,
4. अणुव्रत समितियों का सशक्तीकरण।

पाँचवा संकल्प हम यह करें कि अणुव्रत पाक्षिक पत्र को और व्यापक बनाएं।

हम जानते हैं कि कोई भी आन्दोलन, जन-क्रान्ति, मिशन या अभियान तब तक सफल नहीं होता, जब तक उससे जुड़े व्यक्तियों के भावों में बदलाव नहीं आता। अतः व्यक्ति परिवर्तन की दिशा से जुड़े और स्वतः-स्फूर्त इच्छाशक्ति से सकारात्मक कदम उठाये। तभी सफलता अपेक्षित है।

अणुव्रत नैतिकता के उत्थान का आन्दोलन है। हजारों-हजार लोग इसके साथ जुड़े हैं। यह संतोष का विषय है कि जगह-जगह अणुव्रत के रचनात्मक कार्यक्रम आयोजित होते हैं और सैकड़ों कार्यकर्ता पूरी निष्ठा के साथ अणुव्रत के पावन रथ को ठौर-ठौर पहुँचा कर अहिंसा और नैतिकता की अलख जगा रहे हैं।

इक्कीसवीं सदी का पहला दशक हिंसा, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, आतंक और भय के साये में निकला। भ्रष्टाचार के विरुद्ध अन्ना हजारे के सफल अनशन के बाद अनैतिकता के विरुद्ध जो व्यापक वातावरण बना है, वह अणुव्रत की भावना के सर्वथा अनुरूप है। अणुव्रत भी यही चाहता है कि लोग भ्रष्टाचार और अनैतिकता के विचार मन में पैदा ही न होने दें। इस नई जाग्रति को आज अणुव्रत जैसे नैतिक आन्दोलन की विशेष जरूरत है।

प्रिय पाठक गण को पूरी विवशता के साथ मैं सूचना दे रहा हूँ कि अणुव्रत के प्रखर स्तम्भ एवं अणुव्रत महासमिति के स्थायी संरक्षक डॉ. महेन्द्र कर्णावट अब अणुव्रत पाक्षिक का सम्पादन नहीं करेंगे। अन्यान्य विशेष दायित्वों के निर्वहन में व्यस्तता के चलते वे इससे मुक्त हो रहे हैं। लेकिन, एक संरक्षक के रूप में हमें उनका मार्गदर्शन निरन्तर मिलता रहेगा। मैं महासमिति की ओर से वर्षों तक अणुव्रत पाक्षिक के सम्पादन तथा इसके नियमित प्रकाशन के लिए उनके सफल योगदान के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। डॉ. कर्णावट की अणुव्रत के प्रति प्रतिबद्धता, सृजनात्मक साहित्य-निर्माण की क्षमता एवं सम्पादन-कौशल बेजोड़ है।

परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत नियम है। बदलाव को रोका नहीं जा सकता। अणुव्रत के संदर्भ में भी यही हो रहा है। मुझे यह सूचित करते हुए अत्यधिक हर्ष है कि अणुव्रत के जाने-माने कार्यकर्ता, साहित्यकार, मूर्धन्य पत्रकार एवं सम्पादन विशेषज्ञ भाई महेन्द्र जैन ने अणुव्रत पाक्षिक के संपादन का हमारा अनुरोध स्वीकार कर इसी अंक से अणुव्रत का सम्पादन-दायित्व ग्रहण कर लिया है। महेन्द्र जैन धर्मसंघ एवं अणुव्रत के लिए नये व्यक्ति नहीं हैं। जैन विश्वभारती, लाडनू द्वारा उन्हें धर्मसंघ का उत्कृष्ट सम्मान 'संघ सेवा पुरस्कार' सन् 2006 में दिया गया। वर्ष 2008 में आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने उन्हें 'कल्याण मित्र' सम्बोधन दिया और अभी-अभी अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने उन्हें 'अणुव्रत सेवी' अलंकरण से भी उपकृत किया है। वे एक सिद्धहस्त लेखक हैं।

हमारा प्रयत्न रहेगा कि अणुव्रत आन्दोलन को एक नैतिक आन्दोलन के रूप में जन-जन तक पहुँचाएं। आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों के पुनरुत्थान हेतु आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने यह सारस्वत अनुष्ठान प्रारम्भ किया था, निःसंदेह आज राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण की दृष्टि से अणुव्रत की सर्वाधिक प्रासंगिकता है। जहाँ अणुव्रत महासमिति लोगों को अधिकतम/न्यूनतम अणुव्रत ग्रहण करने के लिए प्रेरित करती रहेगी वहीं इसके दार्शनिक व वैचारिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ रचनात्मक गतिविधियों को हम अणुव्रत पाक्षिक के माध्यम से आगे बढ़ाने का विनम्र प्रयास करेंगे।

प्रसन्नता की बात है कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने धर्मसंघ को अणुव्रत की भावभूमि से सक्रिय रूप से जुड़ने का आह्वान कर अणुव्रत को नई ऊर्जा प्रदान की है। हम आपके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

—बाबूलाल गोलछा